विषय – सूची

1. इकाई – 1 1

2. इकाई – 2 26

3. इकाई – 3 48

4. इकाई – 4 56

☆☆☆

इकाई – 1

1.0 परिचय
1.1 इकाई के उद्देश्य
1.2 पैंटिनकिन के सिद्धांत की मान्यताएं
1.3 मेल
1.4 मुद्रा पूर्ति में परिवर्तन
1.5 मुद्रा गुणांक
1.6 मुद्रा गुणांक के तत्व
1.7 मुद्रा की वैकल्पिक प्रयोग से आय
1.8 आलोचनाएं
1.9 मुद्रा की पूर्ति का सिद्धांत
1.10 मुद्रा और निकट मुद्रा
1.11 आंतरिक मुद्रा और बाह्य मुद्रा
1.12 मुद्रा पूर्ति के प्रकार
1.13 उच्च्य मुद्रा शक्ति
1.14 बॉमोल का क्रय विक्रय सम्बधी मुद्रा का सिद्धांत
1.15 परिकल्पनाएं
1.16 परंपरावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार मुद्रा की मांग
1.17 केन्ज का मुद्रा संबधी सिद्धांत
1.18 मान्यताएं
1.19 तरलता जाल
1.20 सारांश
1.21 अपनी प्रगति जांचिएं
1.22 अपनी प्रगति जांचिएं के उत्तर
1.23 अभ्यास हेतु प्रश्न
1.24 आप ये भी पढ़ सकते हैं।

परिचयः–

एक आर्थिक प्रणाली के मौद्रिक क्षेत्र के संतुलन की व्याख्या के लिए मुद्रा की माँग का विश्लेषण आवश्यक है। जब मुद्रा की पूर्ति दी गई हो तो मुद्रा बाजार से पैदा होने वाली मांग के दबाव पूर्ण प्रणाली से संबंधित लगभग सभी चरों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते है। इसीलिए स्वभाविक रूप से मुद्रा की माँग ने बहुत से अर्थशास्त्रियों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। मौद्रिक संतुलन मुद्रा की माँग का पूर्ति की शक्तियों द्बारा निर्धारित होता है। इसको प्राप्त करने के लिए आर्थिक शक्तियां क्रियान्वित रहती है। मौद्रिक संतुलन वहाँ स्थापित रहता है जहाँ मुद्रा की माँग का मुद्रा की पूर्ति एक दूसरे के बराबर होती है।

इकाई के उद्देश्यः–

(i) मुद्रा की माँग के विभिन्न सिद्धांतो को समझना।
(ii) मुद्रा की पूर्ति के विभिन्न निर्धारकों की व्याख्या करना।

डॉन–पैंटिनकिन के मतानुसार

डॉन पैटिनकिन के अनुसार मुद्रा मुख्य गैर निष्पक्षीय होती है और इसी कारण लोगों के पास नकदी का मूल्य में परिवर्तन होता रहता है और इसी के साथ–2 वास्तविक मूल्य में भी परिवर्तन आता है। जिसके कारण या दो लोगों के धन में कमी आती है या वृद्धि होती है और वस्तुओं की सापेक्ष कीमतें में परिवर्तन होता रहता है और ब्याज की दर में भी परिवर्तन आता है। यदि मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि होती है तो ब्याज की दर में कमी आती है। पैंटिनकिन के सिद्धान्त की मान्यताएं :

1. अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार पाया जाता है।
2. मौद्रिक भांति का अभाव
3. वितरण प्रभाव का कम होना या न होना।
4. कीमतों और मजदूरों में लोचशीलता।
5. सरकारी ब्राण्डों के बाजार में क्रय करना।

पैंटिनकिन के सिद्धांत की व्याख्या पैंटिनकिन ने अपनी पुस्तक Money Interest & Prices 1956 में प्रकाशित हुई थी। पैंटिनकिन ने विश्लेषण किया कि क्रेम्ब्रिज अर्थशास्त्री मुद्रा की निष्प्रयातिता को समझने में असफल रहे। वह मुद्रा और वस्तु बाजारों में द्वि–विभाजन को स्पष्ट नहीं कर पाये। पैंटिनकिन ने इस बात पर जोर दिया किया कि नव–क्लासिकल अर्थशास्त्रियों ने केवल मुद्रा के भण्डार में वृद्धि केवल निरपेक्ष स्तर पर होती है और वस्तु बाजार इससे लगभग अप्रभावित रहता है। पैंटिनकिन ने नव क्लासिकल की इस भूल की और संकेत किया कि उनके द्वारा वास्तविक शेष प्रभाव के कारण निरपेक्ष मुद्रा स्तर में वृद्धि होती है और वस्तु बाजार में सन्तुलन लाने के लिए प्रावैगिक विश्लेषण का प्रयोग नहीं किया गया है। नव–क्लासिकल अर्थशास्त्रियों में असमितता पाई गई थी कि उन्होंने मूल्य सिद्धांत में सन्तुलन और कीमत की स्थिरता का परीक्षण करने के लिए प्रमाणिक मांग और पूर्ति की विधि का प्रयोग किया परन्तु मौद्रिक सिद्धांत में सन्तुलन निरपेक्ष कीमत स्तर का परीक्षण करने के लिए उस विधि का प्रयोग न करने की प्रमाणिक भूल की है।पैंटिनकन ने नव–क्लासिकल सिद्धांत की और अधिक आलोचना की कि मुद्रा निरन्तर इकाई लचक रहती है और मुद्रा का मांग वक्र आयताकार और अतिपरवलय है और समर्थन वालरस, मार्शल और पीगू ने बार–बार किया है।पीगू ने इसे यात्रा सिद्धांत की वैद्यता के लिए एक आवश्यक शर्त माना है। उनका विचार है कि मुद्रा का मांग फलन की निरन्तर एक समान लचक नहीं है और उन्होंने कहा कि आयताकार अतिपरवलय मुद्रा का मांग फलन का सिद्धांत इस कथन का जिसे क्रेम्ब्रिज अर्थशास्त्री विकसित करने का प्रयत्न कर रहे थे। पैंटिनकिन ने इनका खण्डन किया। पैटिनकिन ने बताया कि नकदी शेष सिद्धांत द्वारा वास्तविक शेष प्रभाव की उपेक्षा की गई है और समरूपता के सिद्धांत के अन्तगर्त मुद्रा–भान्ति के अभाव को माना गया है। समरूपता सिद्धांत वास्तविक क्षेत्रों के लिए मांग फलनों को निरपेक्ष कीमत स्तर में परिवर्तनों के प्रति असंवेदनशील मानता है। इसी प्रकार नव–क्लासिकल सिद्धांत मुद्रा के सिद्धांत और मूल्य के सिद्धांत में सही सम्बन्ध स्थापित करने में असफल रहा है। पैंटिनकिन का सिद्धांत मुख्य रूप से क्लासिकल द्वि–विभाजन की निन्दा करना था फिर मौद्रिक और वास्तविक क्षेत्रों का मेल करना था। क्लासिक विश्लेषण में द्वि–विभाजन है। क्योंकि इसके अनुसार सापेक्ष कीमतें वास्तविक मांग और वास्तविक पूर्ति उत्पादन के स्तर द्वारा निर्धारित होती है। क्योंकि निरपेक्ष कीमत स्तर मुद्रा की मात्रा के द्वारा निर्धारित होता है। इसी प्रकार क्लासिकल विश्लेषण में निरपेक्ष कीमतों का मौद्रिक सिद्धांत और सापेक्ष कीमतों का वास्तविक सिद्धांत है। मेल– (Reconciliation) क्लासिकल सिद्धांत का द्वि–विभाजन करने के बाद पैंटिनकिन ने इन दोनों में मेल करने का प्रयत्न किया। उसने यह खोज करने का प्रयत्न किया कि क्या क्लासिकल प्रतिस्थापन कि मुद्रा की मात्रा में वृद्धि से सभी कीमतों में आनुपातिक वृद्धि होती है और सापेक्ष कीमतें मुद्रा की यात्रा से प्रभावित नहीं होती है और तकनीकी शब्दों में इसे मुद्रा की निष्प्रभावित कहा जा सकता है। यदि

मुद्रा तटस्थता है और मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि से सामान्य कीमत स्तर बढ़ जाता है और सापेक्ष कीमतें और ब्याज की दर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है तो मौद्रिक और मूल्य सिद्धांतों का कोई मेल नहीं होगा। पूर्ति और मांग फलनों की सापेक्ष कीमतें और वास्तविक नकदी शेषों पर निर्भर मानते हुए क्लासिकी मात्रा सिद्धांत का पुनर्वास सम्भव हो सकता है। पैंटिनकिन का विश्लेषण का सिद्धांत वास्तविक शेष प्रभाव की पूरी स्वीकृति देता है और मुद्रा बाजार में सन्तुलन स्थापित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि कीमतें सन्तुलन स्तर से कम होती है तो नगद धारकों के वास्तविक शेष में वृद्धि होती है। यदि कीमत स्तर सन्तुलन से कीमत स्तर से उंचा हो जाता है तो वास्तविक शेषों में कमी आ जायेगी और अपने खर्च को क्या करेंगे और जिसके कारण नकदी शेषों की हानि होगी और वापिस सन्तुलन स्तर पर आ जायेगी और वास्तविक, क्लासिकल मॉडल द्वि–विभाजन को दूर करने में सफल हो जाता है परन्तु मुद्रा की मात्रा से प्रभावित नहीं होती है। यदि ब्याज की दर समान होती है परन्तु कोई मांग में वृद्धि नहीं होती है। पैंटिनकिन के अनुसार जब एक बार अर्थव्यवस्था के वास्तविक और मौद्रिक समकों को बाहरी मुद्रा के साथ निर्धारित किया जाता है तो सापेक्ष कीमतें एवं ब्याज की दर और निरपेक्ष कीमत स्तर के सन्तुलन मूल्य अर्थव्यवस्था के सभी बाजारों के द्वारा एक ही समय में निर्धारित होते है। पैंटिनकिन ने यह निष्कर्ष दिया है कि सापेक्ष कीमतें वस्तु बाजार के द्वारा भी निर्धारित होती है कि मूल्य सिद्धांत सापेक्ष कीमतें से और मौद्रिक सिद्धांत निरपेक्ष कीमतों से सम्बन्धित होता है। पैंटिनकिन ने वस्तु की सभी प्रकार की कीमतें मुद्रा बाजार की कीमतों के द्वारा निर्धारित होती है और निरपेक्ष कीमतों को उनके पूर्व निर्धारित सन्तुलन मूल्य पर स्थिर माना गया है तो सापेक्ष कीमतों को मनमाने ढंग से लगाया जा सकता है और इससे प्रावैगिक कीमतें का अध्ययन कर सकते हैं और ये शक्तियां सभी बाजारों में सन्तुलन स्थापित करती है और इनके इस कार्यकरण से अर्थव्यवस्था द्वारा सन्तुलन में स्थापित हो जाती है।

1. पैंटिनकिन के सिद्धांत की आलोचना दीर्घकालीन सन्तुलन निश्चित करने में असम्भव है। पैंटिनकिन का सिद्धांत केवल कीमत में परिवर्तन तक ही सीमित है और दीर्घकालीन सन्तुलन और वास्तविक शेष प्रभाव की स्पष्ट रूप से व्याख्या नहीं करता है।

2. धन प्रभाव में वृद्धि की उचित व्याख्या करने में असफल– पैंटिनकिन यह नहीं बता पाया कि धन का प्रभाव कैसे बढ़ता है और धन के प्रभाव की उचित व्याख्या नहीं किया जा सकती है।

3. प्रतिभूतियों के क्रय–विक्रय पर प्रतिकारक प्रभाव मुद्रा भण्डार में वृद्धि के साथ शुद्ध मूल्य में वृद्धि नहीं होती है रिसाव केवल बाजार में प्रतिभूतियों के बेचने से प्राप्त होता है। इसलिए अर्थव्यवस्था में यहां मान्यता लेना असंगत है कि मुद्रा भण्डार में वृद्धि का अर्थव्यवस्था पर कोई प्रभाव होगा।

4. मुद्रा भ्रांति का अभाव– मुद्रा भ्रांति का अभाव पाया जाता है कि लोग मुद्रा प्राप्त करते है। मुद्रा की मात्रा दुगना करने से वस्तुओं के मूल्य भी दोगुने हो जाते है और वास्तविक सन्तुलन में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

वे अधिक मुद्रा रखने के लिए तैयार होते हैं और सट्टा उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग धनात्मक होती है। यदि $r = r^3$ होती है तो मुद्रा की मांग धनात्मक होती है या शून्य भी हो सकती है और बांड धारक अपनी परिसम्पतियों में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन भी नहीं करना चाहते है। ब्याज की न्यूनतम स्तर पर प्रवाह r_0 पर मुद्रा की सट्टा मांग फलन समस्तरीय (Horizontal) हो जाती है। सट्टा उद्देश्य के लिए निवेशक अपने पास ही पूंजी रखना चाहते है। उनकी उस समय यह निश्चित आशा होती है कि भविष्य में ब्याज की दर में वृद्धि और पूंजी की भी हानि होगी। सट्टा उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग को एक चित्र के माध्यम से दर्शाया जा सकता है। चित्र नं0 1 के माध्यम से दर्शाया जा सकता है।

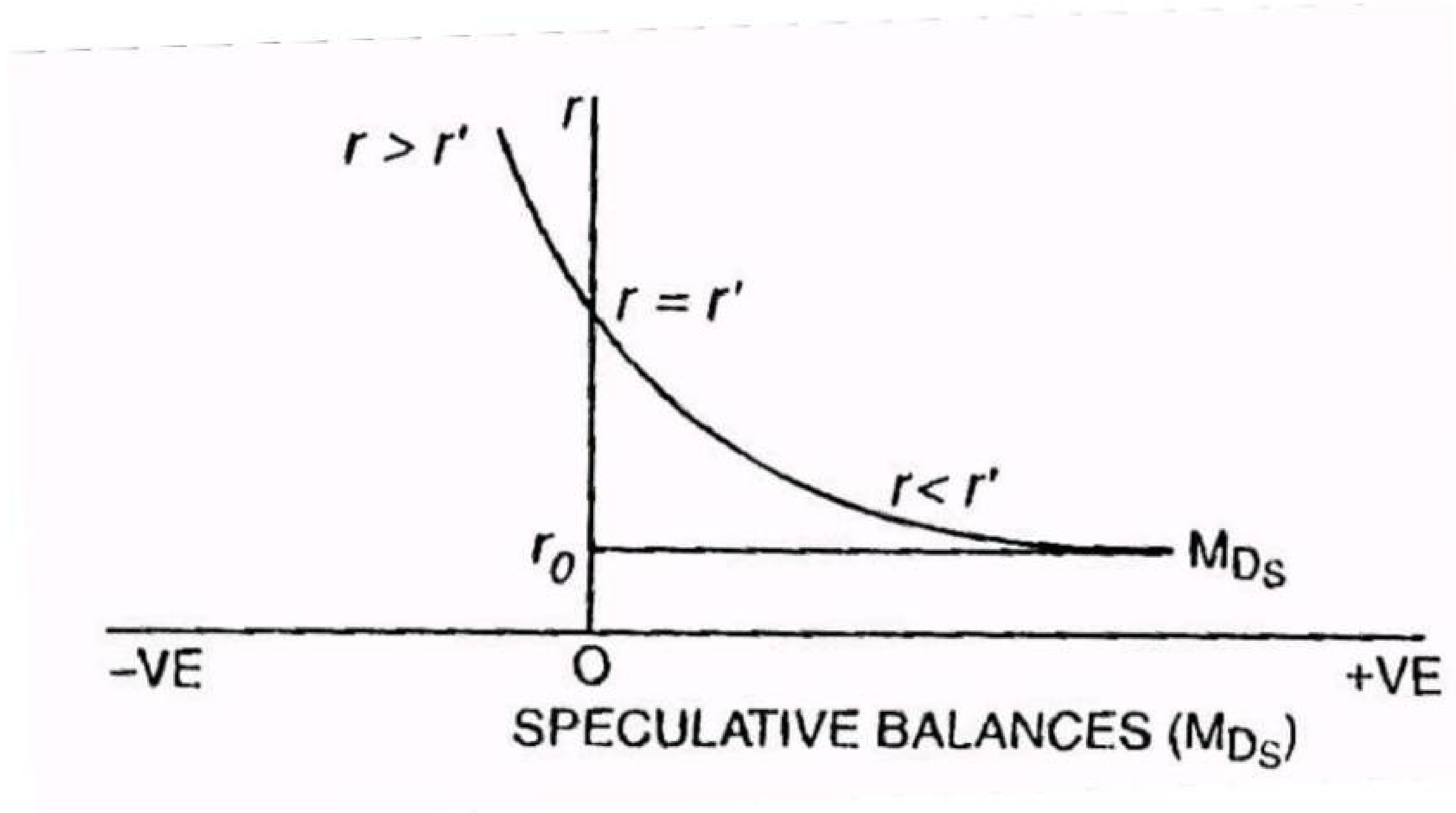

चित्र नं0 1

सट्टा उद्देश्य के लिए नकद राशियां ऋणात्मक होती है। जब $r > r^2$ है। जब $r = r^3$ है तो ये शून्य है। जब $r < r^2$ तो सट्टा उद्देश्य के लिए नकद राशियों धनात्मक होती है। ब्याज की न्यूनतम दर पर r_0 पर लगभग एक आशंका है कि ब्याज की दर न्यूनतम स्तर पर सामान्य बढेगी। सट्टा उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग हमेशा लोचशील होती है और जैसे–जैसे ब्याज की दर गिरती जाती है। मुद्रा की मांग बढ़ती जाती है। मुद्रा की कुल मांग– केन्ज ने मुद्रा की मांग को तीन भागों में बांटा है। (1) लेन–देन उद्देश्य (2) सावधानी उद्देश्य (3) सट्टा उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग निष्क्रिय मांग होती है।

M**DPT** = M**DT** + M**DP**……..(i)

M**DT** = Money

D = Demand

T = Transactional

M = Money, D = Demand P = Precautionary मुद्रा की मांग लेन–देन उद्देश्य के लिए सावधानी उद्देश्य के लिए आय पर निर्भर करती है। सट्टा उद्देश्य के लिए जो मुद्रा की मांग की जाती है। केन्ज ने उसे निष्क्रिय राशियां कहा है और ब्याज की दर के साथ विपरित सम्बन्ध होता है।मुद्रा के कुल मांग सक्रिय और निष्क्रिय राशियों का योग होती है। इसलिए मुद्रा के कुल मांग फलन को (**MD**) में इस प्रकार से दर्शाया जा सकता है।

MD = MDT + MDP और Equation (i) को प्रतिस्थापित करने पर

$M_D = L_1(y) + L_2(r)$

सौदा और बचत उद्देश्य के लिए मुद्रा के मांग फलन और निष्क्रिय नकद राशियों के लिए मांग फलन के समस्तरीय योग से अब मुद्रा के योग फलन से निकाला जा सकता है। चित्र 2 में M_{DTP} सक्रीय नकद शेष L_1 एक उदग्र (Vertical) रेखा है। जो कि यह दर्शाती है कि ब्याज के सभी स्तरों पर सक्रिय नकद राशियां स्थिर रहती है और चित्र (2) में निष्क्रिय नकद राशियों को भी दर्शाया गया है।

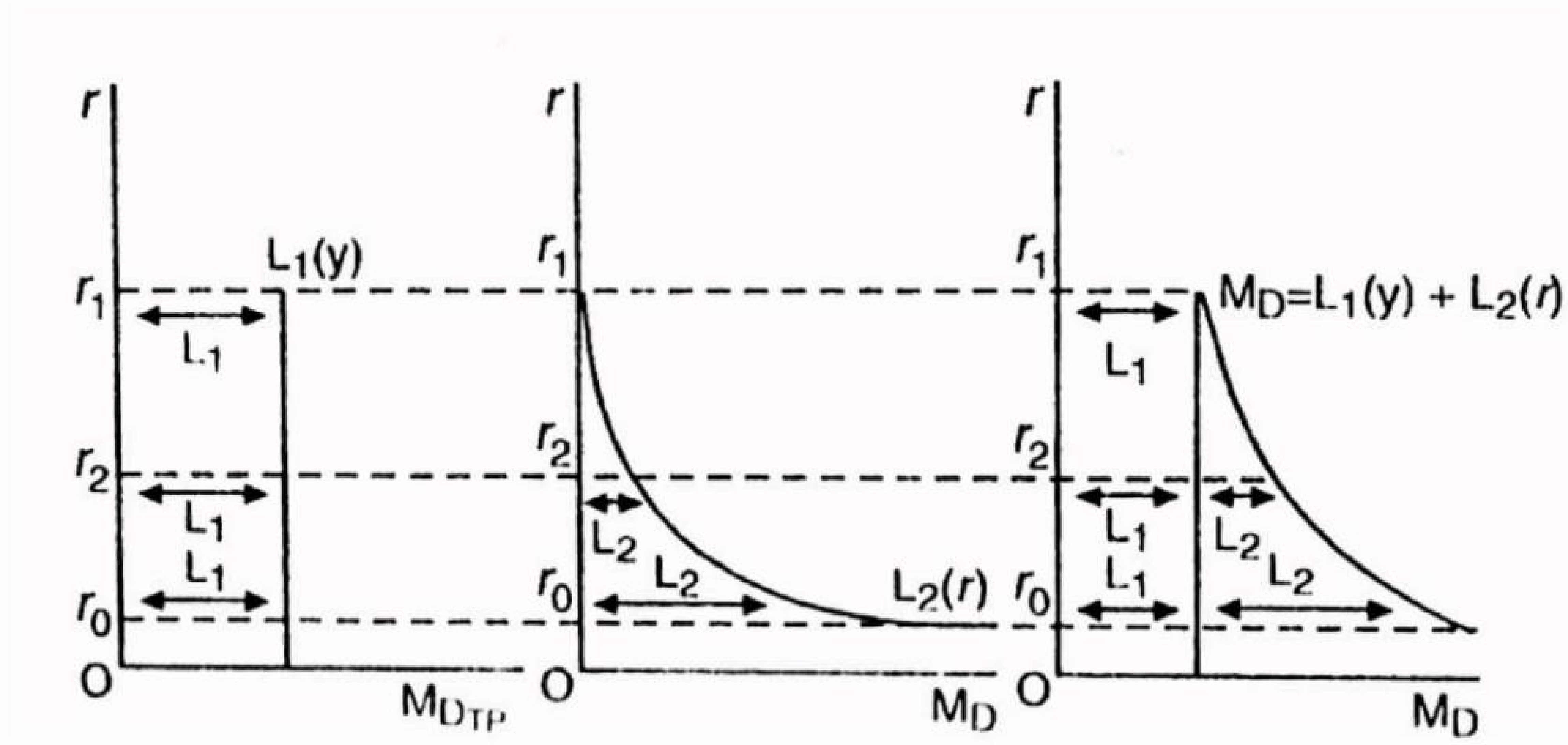

चित्र–2

यह वक्र बाई से दाई नीचे की और झुकता है। ब्याज की न्यूनतम दर r_0 पर यह पूर्णतया लोचशील है। चित्र 2 में मुद्रा का मांग फलन दर्शाया गया है।

MD = **L1**(y) + **L2** (y) के द्वारा प्रकट किया गया है। ब्याज की दर r_1 पर निष्क्रिय नकद राशियां शून्य है। और $M_D = L_1 + 0$ है। ब्याज की दर r_0 पर M_0 को फिर L_1 और L_2 के योग के द्वारा निर्धारित किया गया है। r_0 पर क्योंकि L_2 (r) पूर्णतयाः और यह समस्तरीय योग के बराबर है।

2. टॉविन की मुद्रा सम्बन्धी मांग का सिद्धांत–प्रो0 टॉविन ने केन्ज की मुद्रा सम्बन्धी मांग में विस्तार पूर्वक और व्यहारिक सिद्धांत प्रस्तुत किया है। केन्ज के अनुसार एक व्यक्ति ब्याज की दर और भविष्य में आशाओं सम्बन्धी मुद्रा की मांग से सम्बन्धी निर्णय लेता है। अगर, ब्याज की दर कम होती है तो मुद्रा को अपने पास रखते हैं। अगर ब्याज की दर में वृद्धि होती है तो लोग मुद्रा अपने पास ना रखकर उसको लोगों को ब्याज पर देते हैं। सट्टा उद्देश्य के लिए और बॉण्ड के लिए भी मुद्रा की मांग की जाती है।

1. टॉबिन के अनुसार ''निवेशकर्ताओं के पास धन की मात्रा पर्याप्त होती है। जिससे बॉण्ड और खरीदकर आय प्राप्त करते है।
2. निवेशकर्ता अधिक आय प्राप्त करने की आशा रखता है। प्रो0 टॉबिन ने अनिश्चिताओं को जोखिम में परिवर्तित किया है। भविष्य में ब्याज की दर और बॉण्ड की कीमतों में अनिश्चिताएं पाई जाती है। अगर एक व्यक्ति बॉण्ड खरीदता है और पूंजी का परित्याग करता है और उसका जोखिम बढ़ जाता है। क्योंकि वह अनिश्चितता पर आधार होता है। बॉण्ड में निवेश के परिणाम के बारे में ज्ञान नहीं होता है परन्तु वह से बॉण्ड आय प्राप्त करना चाहता है।

भविष्य में बॉण्ड की कीमतें में उतार चढ़ाव आने से निवेशक की पूंजी लाभ का जोखिम उठाना पड़ता है। जोखिम की दृष्टि से निवेशकों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है।

1. जोखिम प्रेमी (The Risk Lovers & Gamblers) ये व्यक्ति जोखिम प्रेमी होते हैं। अपनी सारी आय को जोखिम में लगा सकते हैं और अधिक आय की इच्छा करते हैं। ये व्यक्ति पूर्णतयाः जोखिम उठाते हैं।
2. डुबकी लगाने वाले (Plungers) जो व्यक्ति सारे धन को बॉण्ड खरीदने पर खर्च करते हैं या सारी मुद्रा को नकदी में रखते है।

3. जोखिम से बचने वाले (Risk Averse) ऐसे लोग बॉण्ड से उत्पन्न होने वाले जोखिम को कम से कम प्रयास करते है। अपनी मुद्रा को नकदी के रूप में कुछ भाग और कुछ भाग बॉण्ड के रूप में रखना पसन्द करते है। ताकि कम से कम जोखिम में धन में वृद्धि हो। ऐसे व्यक्ति कम से कम जोखिम पर अधिकतम आय प्राप्त करते हैं या प्रयास करते हैं।

टॉबिन के अनुसार समाज में अधिकतम व्यक्ति तीसरी श्रेणी के होते हैं। जोखिम से बचने वाले इन लोगों के लिए तरलता अधिमान सिद्धान्त बहुत महत्वपूर्ण होता है। क्योंकि यह बॉण्ड खरीदने पर पूंजी हानि का जोखिम उठाना पड़ता है और अगर धन को नकदी में रखते है तो हानि होती है। परन्तु धन को नकदी रूप में रखने पर ब्याज प्राप्त नहीं होता। इसलिए ये लोग कुछ नकदी और कुछ बॉण्ड के रूप में अपने धन को रखना चाहते हैं। निवेशक धन को कितने भाग में नकदी में और कितने भाग को बॉण्ड में रखना चाहेगा। यह प्रत्येक निवेशक पर निर्भर करता है। प्रत्येक निवेशक की इच्छा भी भिन्न–भिन्न होती है कि नकदी का कितना भाग अपने पास रखें और कितना भाग धन का शेयर या बॉण्ड में लगाये। इसको चित्र नं0 3 के माध्यम से दर्शाया जा सकता है।

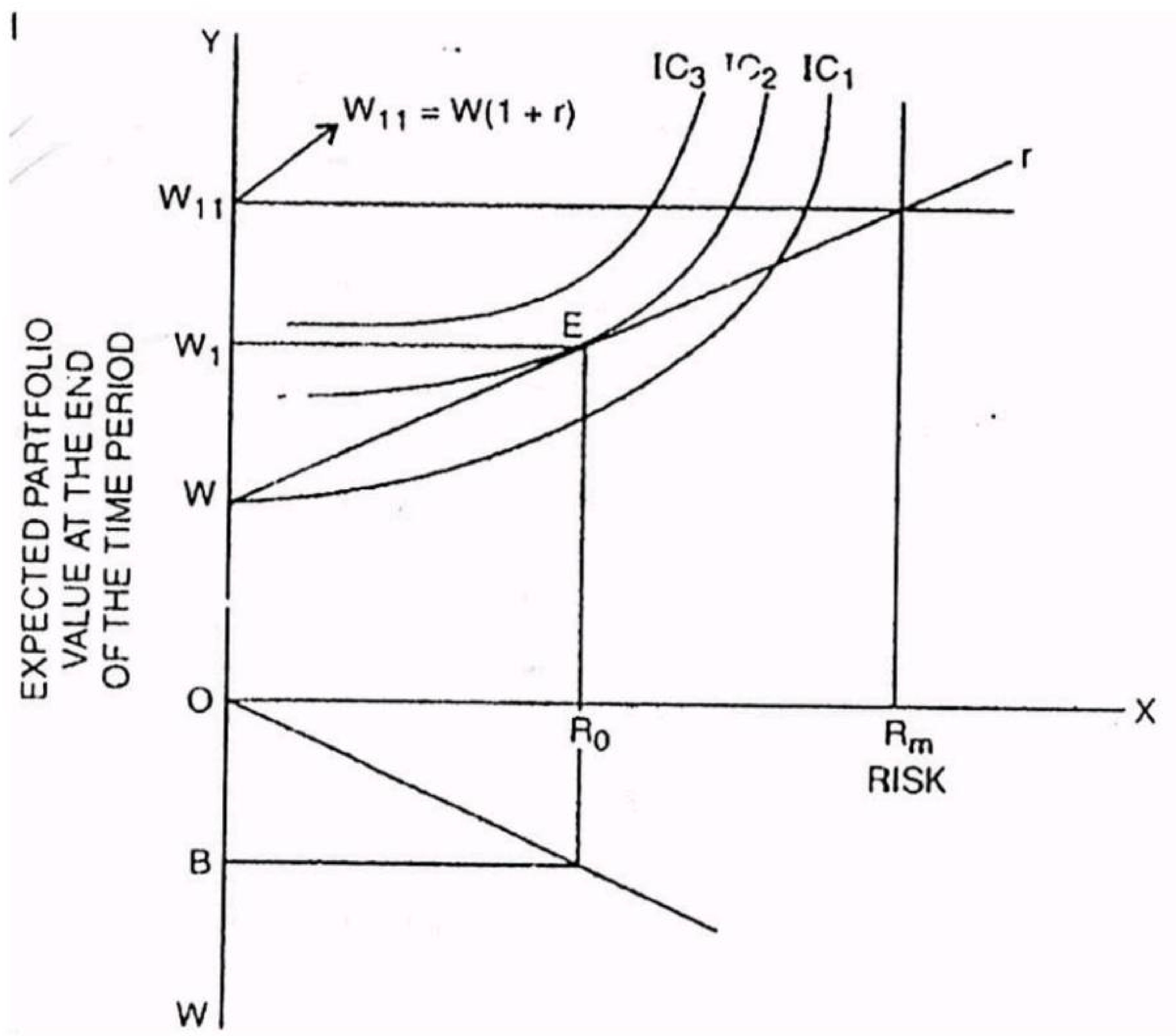

चित्र नं0 3

चित्र नं0 3 में ox-अक्ष पर जोखिम और oy-अक्ष पर निश्चित समय अवधि के अन्त में बॉण्ड से प्राप्त होने वाली आय के कारण परिसम्पतियों में वृद्धि को दर्शाता है। पत्रादान जोखिम कुल सम्पति को उस अनुपात या भाग पर निर्भर करता है जो बॉण्ड के रूप में रखी जाती है। अधिक जोखिम उठाने का अर्थ होता है कि सम्पति का अधिक भाग बॉण्ड के रूप में रखा जाता है।अधिमान वक्र की सहायता से $1C_1$, $1C_2$, $1C_3$ में दर्शाया गया है कि निवेशक दिये गये जोखिम से पहले से अधिक आय प्राप्त करना चाहता है और 1C जोखिम और आय स्तरों को विभिन्न संयोगों को प्रकट करता है।

यदि व्यक्ति कोई जोखिम नहीं उठता तो वह 1C पर स्थापित होता है और निश्चित समय अवधि के बाद भी OW प्रारम्भिक सम्पति को दर्शाया गया है। जो कि निवेशक के पास होती है। यदि निवेश सट्टा उद्देश्य के लिए धन को पूर्ण रूप से लगा देता है तो निश्चित दिये गये समय अवधि के अन्त में उसके पास धन की मात्रा बढ़कर OW_1 (W(1+r) होगा और R अधिक जोखिम होगा। यह r पर Bond से प्राप्त होने वाली ब्याज दर है परन्तु इतनी धन से वृद्धि केवल जोखिम प्रेमियों के मामले में ही आशांकित है। जोखिम टालने वाले के लिए यह आशंकित धन OW_1 से कम ही होगा। क्योंकि OW_1 की प्राप्ति करेन्सी C में दोनों प्रकार की मुद्राएं शामिल की जाती है। (M&H) में सामान्य है। दोनों प्रकार की मुद्राएं (DD और R) के कारण उत्पन्न होता है परन्तु DD और R का गहरा सम्बन्ध है। बैंक आरक्षित मुद्रा के आधार पर उधार देते हैं और मांग जमाएं का निर्माण करते हैं। यहां R बैंकों के मांग जमा करता है और उच्च शक्ति प्रदान करते हैं। इसलिए (C+R) को उच्च शक्ति मुद्रा (H) का नाम दिया गया है। क्योंकि R समीकरण DD के मध्य नजदीक और गहरा सम्बन्ध है। इसलिए M और H के मध्य गहरा सम्बन्ध है। सन्तुलित मुद्रा पूर्ति का सिद्धांत दो तत्वों पर निर्भर करता है।

M = mH : m = Money Multiplies

H = High powered money

मुद्रा पूर्ति का निर्धारण – (H) और मुद्रा गुणांक पर निर्भर करता है। मुद्रा की पूर्ति से परिवर्तन या तो H में परिवर्तन के कारण होता है। मुद्रा पूर्ति में परिवर्तन से H कैसे निर्धारित होता है और गुणांक का कैसे निर्धारण होता है। H का निर्धारण H का निर्धारण वहां होगा। H की मांग पूर्ति के बराबर होगी। $H_D= H_S$ मांग और पूर्ति का बराबर होना जरूरी है। H की पूर्ति = H की पूर्ति स्थिर रहती है और सरकार की नीति और बाह्रय शक्ति के द्वारा निर्धारित होती है।

H की मांग (H_D) हमेशा करेन्सी की मांग (C_D) और बैंकों द्वारा रखे आरक्षण की मांग, R_D पर निर्भर करती है। H_D ज्ञात करने के लिए C_D और R_D की व्याख्या की जा सकती है। Transaction लेनदेन के लिए लोग C_D की मांग करते हैं। मुद्रा की मांग उनके आय के स्तर पर भी निर्भर करती है और ब्याज की दर से C_D को प्रभावित करती है। यदि ब्याज की दर उंची है तो लोग अपने पास कम मुद्रा की मांग रखेगे। मुद्रा की मांग ब्याज की दर पर ही निर्भर करती है।

$$C_D = C_{DD} \qquad \text{.... (i)}$$

बैंकों के आरक्षण की मांग (R_D) किस पर निर्भर करती है। लोगों के बैंकों में कुल जमाओं पर निर्भर करती है परन्तु कुल मांग कुल जमाओं पर भी निर्भर करती है। कुल आरक्षण मांग (R_D) कुल मांग जमा D का एक अनुपात है और इसका बढ़ता फलन होता है।

$$R_D = R_D \qquad \text{.....(ii)}$$

r = R_D/Dr = आरक्षण की मांग (R_D) का कुल मांग जमा से (D) से अनुपात है। इसको आरक्षण जमा अनुपात भी कहा जाता है। मुद्रा गुणांक के मांग पक्ष (H_D) और पूर्ति पक्ष (H_S) को ज्ञात करने के लिए मुद्रा गुणांक प्राप्त किया जा सकता है। H बाजार में सन्तुलन उस समय होता है। जब H की मांग (H_D) और पूर्ति (H_S) एक दूसरे के बराबर होते हैं। मुद्रा पूर्ति का चित्र की सहायता से निर्धारण। मुद्रा की मांग और मुद्रा की पूर्ति एक दूसरे के बराबर

होती है। उच्च शक्ति मुद्रा H शीर्ष अक्ष (Vertical Axes) और मांग जमा क्षैतिज अक्ष पर लिये है। मुद्रा की पूर्ति जो सिद्धांत H को स्थिर मानती है। मुद्रा की पूर्ति मांग जमा (DD) के पूर्ति बेलोच है। उच्च शक्ति मुद्रा पूर्ति की मांग H_D और C_D पर निर्भर करती है।

$H_D = R_D + C_D$

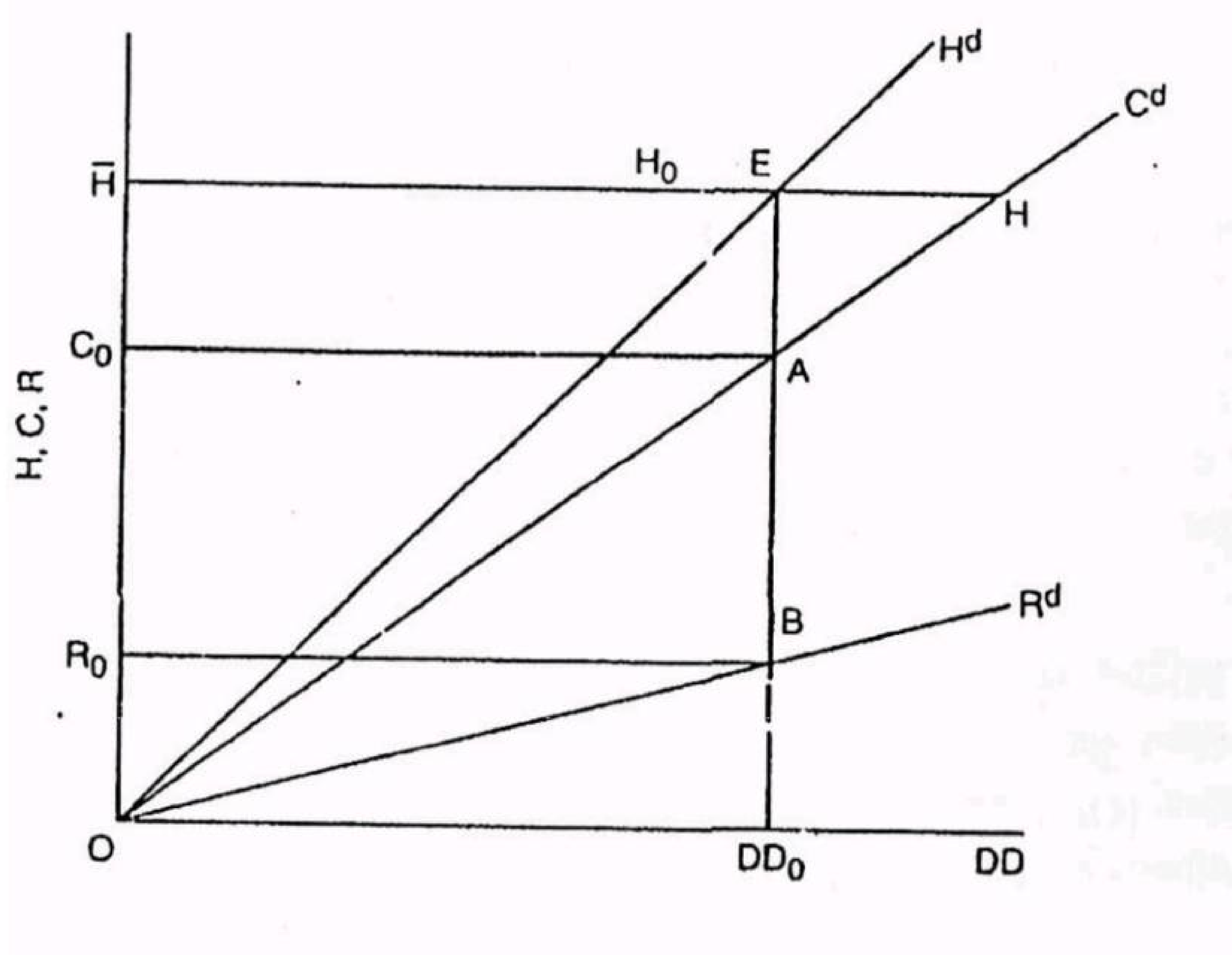

चित्र नं0–4

C के मूल्य पर C^d का ढ़ाल निर्भर करता है। आरक्षण मांग वक्र (R^d) के ढ़ाल समीकरण के अनुसार r (1+t) पर निर्भर करता है। H का योग वक्र (H^d) इन दोनों (C^d) और (R^d) का क्षैतिजीय जोड़ है। चित्र नं0 01 में DD_0 मांग जमा स्तर पर H बाजार में सन्तुलन होता है। DD_0 और स्तर पर जनता और बैंक Ha की उतनी ही मांग करते हैं। जितनी H की मात्रा मौद्रिक अधिकारी बाजार में पेश करते हैं। इस अवस्था ये जनता Ca करेन्सी की मात्रा और बाकी मात्रा Ra के बराबर करेन्सी की मांग C^d करती है। चित्र में Ca+DDa के बराबर सन्तुलित मुद्रा की यात्रा पूर्ति M = C+DD है।

मुद्रा पूर्ति में परिवर्तन

मुद्रा पूर्ति ये परिवर्तन H सिद्धांत से थी। निर्धारण किया जा सकता है। मुद्रा की पूर्ति का निर्धारण उच्च शक्ति मुद्रा (H) की मांग (H^d) वक्र और पूर्ति (H^S) के द्वारा निर्धारित होती है। यहां पर (H^D) और (H^S) वक्र को काटता है। इसके सन्तुलित DD निर्धारित होता है और DD में यदि लोगों की नकदी C^d को जमा किया जायेगा तो मुद्रा की मात्रा M निर्धारित होती है।

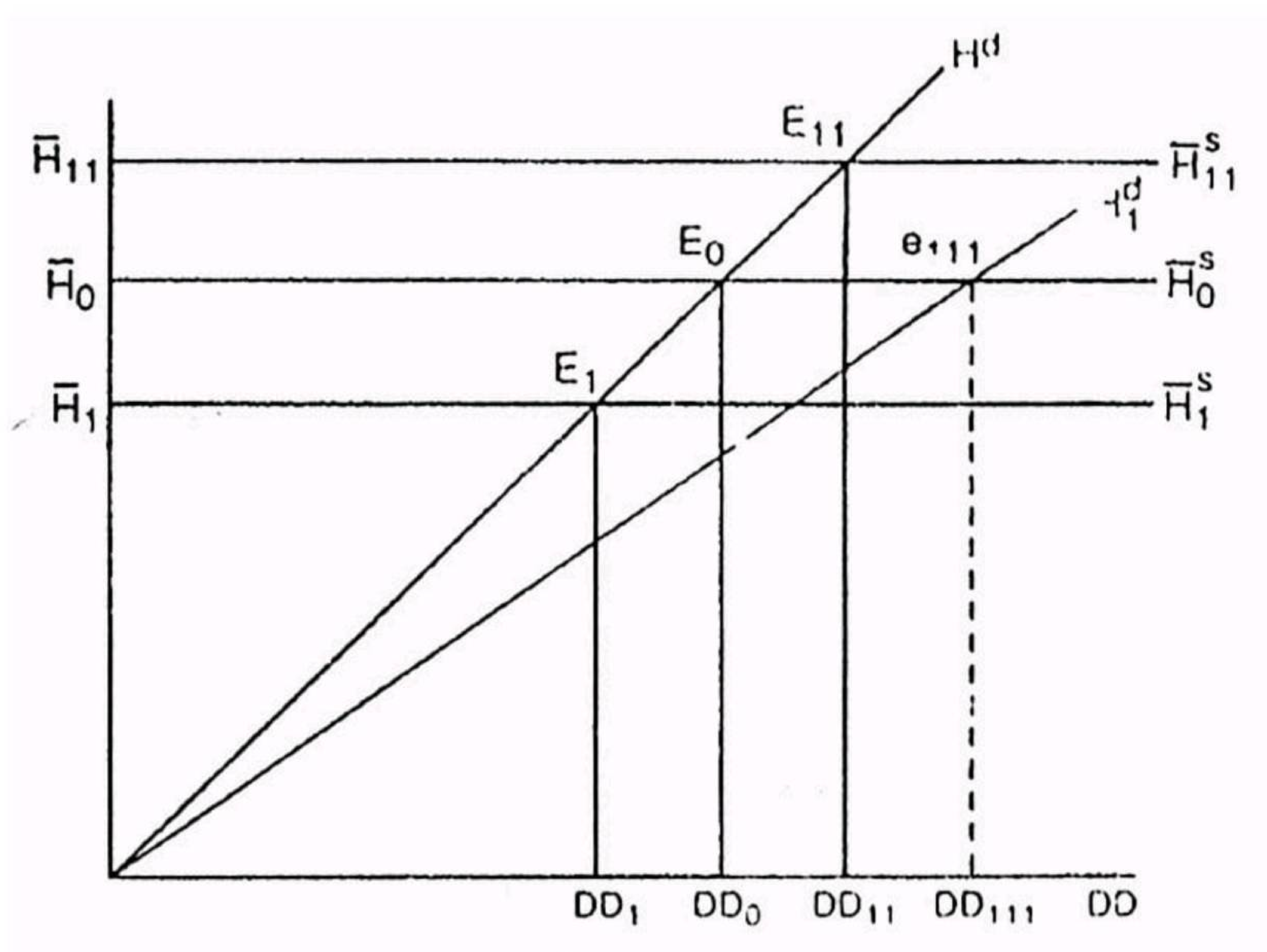

चित्र नं0-5

अब यदि H^S में मौद्रिक अधिकारियों परिवर्तन किया जाये या किन्हीं कारणों से H^D में परिवर्तन हो जाये तो मुद्रा पूर्ति में परिवर्तन होगा। प्रारम्भ में H^S और H^d वक्र एक दूसरों को E_0 बिन्दु पर काटते हैं। जिससे DD_0 जिससे मांग जमाओ का स्तर निर्धारित होता है। DD_0+C लोगों के पास नकदी कुल जमा और कुल पूर्ति M का निर्धारण होता है। अत यदि उच्च शक्ति मुद्रा (H) की पूति बढ़ाकर H_{11}^S कर दी जाए तो बैंकों का आरक्षण बढ़ जाता है। जिस कारण बैंक अधिक साख का निर्माण करते हैं और मांग जमाए DD की मात्रा भी बढ़ती है और बढ़कर यह DD_1 हो जाती है DD_{11} पर लोगों के पास करेन्सी की मात्रा (C) थी अब अधिक होगी। इसलिए DD_{11}+C मुद्रा की कुल मात्रा (M) का निर्धारण कर ली है। स्पष्ट है कि M की मात्रा और मुद्रा की पूर्ति भी अधिक होगी। इसलिए DD_{11} पर लोगों के पास करेन्सी की मात्रा C भी अब अधिक होगी। इसलिए DD_{11} + C मुद्रा की कुल मात्रा M का निर्धारण होगा। M की मात्रा और मुद्रा की पूर्ति भी अधिक है। इसी प्रकार यदि H की पूर्ति में कमी की जाती तो मुद्रा की मात्रा भी कम हो जायेगी। H_1S होने पर उच्च शक्ति मुद्रा की मांग (H^D) में कमी और वृद्धि होती है तो भी मुद्रा गुणांक द्वारा M की मात्रा परिवर्तन होगी। H_1^S स्थिर रहती हुए यदि H की मांग (H^D) कम हो जाती है। तो

H^D वक्र नीचे सरक कर H_1^D हो जाएगा जो कि DD के स्तर को बढाकर DD_{111} कर देगा और H बाजार में नया सन्तुलन स्थापित होगा। मुद्रा पूर्ति को निर्धारित करने वाले तत्व मुद्रा पूर्ति के दो मुख्य निर्धारिक तत्व है:–

(A) उच्च शक्ति मुद्रा (B) मुद्रा गुणांक निम्न तत्वों के द्वारा प्रभावित होती है।

(A) उच्च शक्ति मुद्रा का मौद्रिक आधार मुद्रा पूर्ति का आकार यदि एक देश में अधिक है तो उसकी पूर्ति भी अधिक होगी। यदि H का आकार कम है। उच्च शक्ति मुद्रा या मौद्रिक आधार वह मुद्रा है। जो नकदी में रखने या केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्धारित की जाती है। केन्द्रीय बैक साख का निर्माण करके व संकुचन करके मुद्रा की पूर्ति को प्रभावित करते हैं।

(B) मुद्रा गुणांक – मुद्रा की पूर्ति मुद्रा गुणांक के द्वारा भी प्रभावित होती है। यदि गुणांक का मूल्य अधिक होता है। तो मुद्रा पूर्ति पर इसका घनात्मक प्रभाव पड़ता है और इसके विपरीत यदि गुणांक का मूल्य कम है। तो मुद्रा पूर्ति कम होगी। मुद्रा गुणांक को निर्धारित करने वाले तत्व मुद्रा गुणांक को तीन व्यवहारिक तत्वों में बांटा गया है। (c,r, t) का फलन है। क्योंकि व्यवहारिक अनुपात है और यह व्यवहारिक अनुपात लोगों की आदतों पर भी निर्भर करता है। मुद्रा गुणांक के विभिन्न तत्वों की व्याख्या की जा सकती है।

(i) नकद आरक्षित अनुपात – नकद आरक्षित अनुपात जो केन्द्रीय बैंक के पास व्यापारिक बैंकों के पास रखना पड़ता है। इससे दूसरे व्यापारिक बैंकों को उधार देने की शक्ति बढ़ जाती है और जिससे साख का अधिक निर्माण होता है और जो मुद्रा की मात्रा का निर्माण होगा।

(ii) करेन्सी मांग जमा अनुपात – यदि कुल जमाओ में (c) करेन्सी का मांग जमाओ (dd) से अनुपात है। C के बढ़ने पर मुद्रा गुणांक का मूल्य गिरेगा।

(iii) समय जमा अनुपात– यदि कुल जमाओ में समय जमा अनुपात (i) अधिक है तो कम उधार दिया जाएगा। इसी प्रकार (i) का मुद्रा गुणांक के विपरित सम्बन्ध है। इसलिए मुद्रा गुणांक में प्रवेश किये हुए है।

(iv) ब्याज की दर – ब्याज की दर मुद्रा गुणांक पर दोनों प्रकार से प्रभाव डालती है। ब्याज की दर बढ़ने पर नकद आरक्षित अनुपात (r) गिर सकता है। क्योंकि फण्डों को आरक्षित करने से कोई आय प्राप्त नहीं होती है। ब्याज दर बढ़ने पर कम आरक्षित राशि रखी जाएगी। ताकि उधार देकर उंचा ब्याज दर प्राप्त किया जा सके। इसलिए ब्याज दर गिरने पर गुणांक का मूल्य बढ़ जाएगा। क्योंकि (r) गुणांक में शामिल होता है। दूसरा प्रभाव यह हो सकता है कि ब्याज की दर बढ़ने से लोग अधिक मात्रा में समय जमा रख सकते हैं।

(v) मौद्रिक नीति– मुद्रा गुणांक का मूल्य सरकार की मौदिक्र नीति पर निर्भर करता है। यदि मौद्रिक अधिकारी नकद आरक्षित अनुपात (r) को बढ़ा देते हैं तो गुणांक का मूल्य कम हो जाएगा। क्योंकि r गुणांक की दर में शामिल है।

(vi) वास्तविक आय– वास्तविक आय बढ़ने से आर्थिक क्रियाओं में तीव्र वृद्धि होगी और बैंक अधिक उधार देते हैं। जिससे साख व मुद्रा का अधिक निर्माण होता है। जो मुद्रा गुणांक को बढ़ा देता है। जिससे मांग जमाएं अधिक हो जाती है और मुद्रा पूर्ति बढ़ती है।

(vii) बैंकिग सुविधाओं का प्रसार– बैंक साख का अधिक निमार्ण करते है। जो कि मुद्रा गुणांक पर धनात्मक प्रभाव डालता है।

मान लीजिए महीने के प्रारम्भ में 10,000 रू0 मौद्रिक आय मुद्रा के रूप में प्राप्त होती है और सप्ताह के प्रारम्भ में 2500 रू0 व्यय किया जाता है और महीने के अन्त कर शून्य हो जाती है। हम जानते है।BC त्रिभुज BEF के सर्वागमन है। इसलिए मुद्रा की औसत मांग 5000 रू0 नकद है। उसी व्यक्ति के पास औसत 5000 रू0 मुद्रा रही

है। इसी प्रकार यदि एक समय अवधि के लिए नकद मुद्रा है। औसत नकद मुद्रा K/2 के समान होगी। इसलिए कुल ब्याज लागन r (K/2) होगी। आय समस्या को इन दोनों लागतों के योग (C) को कम करने की है।

Minimise c = r (K/2) +b (M/K) equation (i)

यदि K का आकार बढ़ना है तो ब्याज भी अधिक करनी होगी और गैर ब्याज लागत कम यदि K का आकार होता रखता है तो उसे अधिक वार Bond को नकदी में परिवर्तित करना पड़ेगा। तो उसकी दलाली लागत बढ़ा देगा और K का आकार क्या रखे। ताकि कुल लागत C को कम किया जा सके। यहां C को K के संदर्भ में पृथक करके (Differentiate) करके और शून्य के समान रखकर प्राप्त कर सकते हैं।

$$C = r\left(\frac{K}{2}\right) + b\left(\frac{M}{K}\right)$$

$$\frac{dC}{dK} = \frac{r}{2} - b\,MK^{-1-1} = 0$$

$$= \frac{r}{2} - b\,MK^{-2} = 0 = \frac{r}{2} - b\frac{M}{K^2} = 0$$

$$\frac{r}{2} = \frac{bM}{K^2}$$

$$rK^2 = 2bM$$

$$K^2 = \frac{2bM}{r}$$

$$K = \sqrt{\frac{2bM}{r}}$$

केन्ज का सिद्धांत मुद्रा के लेन–देन सिद्धांत और ब्याज की दर को अप्रभावित मानता है। बामोल ने सिद्ध कर दिया कि सौदा उद्देश्य के लिए आर्दश मुद्रा की मात्रा ब्याज की दर पर भी निर्भर करती है।

1. जैसे–2 K का आकार बढ़ता है। दलाली की फीस भी बढ़ती जाती है।
2. सौदा मांग ब्याज की दर से प्रभावित होने के कारण केन्ज के आय और सौदा मुद्रा की मांग के मध्य आनुपातिक और सरल रेखीय सम्बन्ध को नकार देता है।
3. मुद्रा का आधुनिक परिमाण सिद्धान्त (The Modern Quantity Theory of Money) फ्रीडमैंन मुद्रा का परिमाण सिद्धांत फिशर ने 1930 में दिया परन्तु 1929-1933 की विश्वव्यापी महामन्दी के दूर करने में फीशर का सिद्धांत असफल रहा है।

मुद्रा की वैकल्पिक परिसम्पतियों से आय

1. ब्याज की दर मुद्रा को नकदी में रखने या उसकी मांग करने की अवसर लागत होती है। बॉण्ड पर ब्याज की दर (r^B) बढने पर लोग अधिक खरीदगें और मुद्रा की कम मांग करेगें। इसी प्रकार ब्याज की दर में परिवर्तन मुद्रा की मांग पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। मुद्रा की मांग कम लोचशील होती है। यदि शेयरों की लाभांश की

दर बढती है तो लोग शेयरों की मांग बढ़ जाती है। इसके विपरीत r^i कम होती है तो लोग नकदी की मांग को बढ़ा देगें।

2. यदि टिकाऊ सम्पति जैसे मशीनरी, भवन, जेवरात, आदि की कीमतों में वृद्धि की दर बढ़ जाती है तो लोग नकदी की मांग कम करेंगे।

3. आय अथवा धन प्रतिबन्ध – फ्रीडमैंन अन्य साधनों की तरह मुद्रा को सम्पति मानता है कि मुद्रा को मांग के सिद्धांत की संरचना प्रवाह की अपेक्षा स्टाक के संदर्भ में की गई है। समीकरण या चर के रूप में h और y का अध्ययन किया है। स्थायी आय को y माना है। जोकि बजट प्रतिबन्ध है। कितना पैसा नकदी के रूप में और मुद्रा की मात्रा के रूप में रखा जा सकता है और समीकरण y धन के प्रतिनिधित्व का कार्य करता है।

फ्रीडमैंन y को प्रवाह चर है। कुल धन w जो स्टाक चर है। स्थाई आय धन की प्राप्ति की दर (r) होती है।

$$y = rw$$

$$w = y/r$$

y के स्थान पर (y/r) जो स्टॉक है को लिखा जा सकता है और सरलता के लिए y लिखा गया है। क्योंकि r सामान्य है। समीकरण से पहले r^B, r^E आदि के रूप में लिया गया है। इसलिए y/r करके कभी भी w को प्राप्त किया जा सकता है। मुद्रा के सिद्धांत की रचना स्टॉक के रूप में की जाती है और फ्रीडमैंन का सिद्धांत क्रेम्ब्रिज अर्थशास्त्रियों से भिन्न है। जिन्होंने मुद्रा के मांग सिद्धांत को आय प्रवाह के रूप में लिया गया है।

एक व्यक्ति की आय केवल भौतिक या वित्तीय साधनों से प्राप्त नहीं होती। बल्कि कार्य करने से भी आय प्राप्त होती है। फ्रीडमैंन ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया है कि धन (w) में केवल भौतिक और वित्तीय साधन सम्मिलित नहीं होती। बल्कि मानवीय साधन भी सम्मिलित होता है।सामान्य मानवीय साधन लागू है। rw मजदूरी की दर है।। क्योकि w में सभी प्रकार के सम्पति सम्मिलित की गई है। समीकरण लोगों की मुद्रा व साधनों की मांग के प्रति–रूचि को दर्शाता है।

आलोचनाएं :

1. ब्याज की दर का सिद्धांत पर महत्व नहीं दिया। केन्ज ने इसकी आलोचना की कि ब्याज की दर मुद्रा की मांग व पूर्ति में घनिष्ट सम्बन्ध होता है।
2. मुद्रा के लेन–देन के कार्य पर जोर नहीं दिया।
3. आय को धन व धन में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।
4. मुद्रा की व्यापक परिभाषा दी है।
5. मुद्रा की पूर्ति को बाहय तत्व माना गया है।
6. धन को मुद्रा की मॉग के निर्धारण में आवश्यकता से अधिक महत्व दिया गया है।

Determination of Money Supply

मुद्रा की पूर्ति का सिद्धांत – मुद्रा की पूर्ति का सम्बन्ध वर्तमान में मुद्रा के भण्डार से है। अर्थात वर्तमान में देश के पास कितने मुद्रा के भण्डार है और जिन्हें विनियम के माध्यम से प्रयोग किया जा सकता है। मुद्रा की पूर्ति में सिक्के, नील और थको द्वारा क्रियान्वित बैंक की जमाएं सम्मिलित होती है। वर्तमान समय में यह अति महत्वपूर्ण है कि क्या मुद्रा के भण्डार में सभी प्रकार की परिसम्पतियां जैसे कि व्यापारिक बैंकों के पास सावधि जमा, बचत बैंकों की जमाएं, बचत एवं ऋण समस्याओं के शेयर खाते और डाकघरों की बचत जमाएं, बचत बॉण्ड और अल्पकालीन शामिल किया जाना चाहिए। मुद्रा और निकट मुद्रा :– मुद्रा और निकट मुद्रा को एक केन्द्रीय बैंक के द्वारा निर्धारित किया जाता है और इसमें व्यापारिक बैंकों की मांग जमाएं शामिल होती है। व्यापारिक बैंकों के चैक और ड्राफट करेंसी में पूर्ण–प्रतिस्थापक है और भुगतान लेने या देने से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता है। सभी प्रकार की वितीय परिसम्पतियां जो सरकार के विरूद्व दावे कर सकती है। उन्हें निकट मुद्रा परिसम्पती भी कहा जा सकता है। उनकी तरलता का दर्जा मुद्रा की अपेक्षा कम होता है। निकट मुद्रा परिसम्पतियों में व्यापारिक बैंकों की सावधि जमाएं खजाना बिल विनियम बिल बॉण्ड प्रतिभूतियां ऋणपत्र यानी चैक, जीवन बीमा नीतियां और बचत ऋणपत्र और निवेश ट्रस्टों आदि को शामिल किया गया है। मुद्रा की पूर्ति को दो भागों में विभाजित किया गया है।

1. आन्तरिक मुद्रा और बाहरी मुद्रा –प्रो0 गुरले और (E.S. Show) के द्वारा दी गई है।

1. **आन्तरिक मुद्रा–** प्रो0 गुरले एण्ड शॉ ने आन्तरिक मुद्रा की परिभाषा इस प्रकार दी है कि यह अर्न्तजात आर्थिक इकाईयों के ऋण है। इस प्रकार की मुद्रा को निजी क्षेत्र में लिया गया है। जब व्यापारिक बैंक प्रतिभूतियों की खरीद करते है और उनके आधार पर मुद्रा को पैदा करता है तो इस प्रकार की मुद्रा को आन्तरिक मुद्रा कहा जाता है। व्यापारिक बैंकों के द्वारा दिये गये ऋण और साख उनके पास गौण जमाओं के रूप में वापिस दिये जाते हैं। कुल जमाएं और ऋण जो व्यापारिक बैंकों द्वारा पैदा किये जाते हैं और बैंकों की देन–दारियां और परिसम्पतियों को शामिल किया जाता है।

2. **बाहरी मुद्रा** – गुरले और शा ने बाहरी मुद्रा की परिभाषा इस प्रकार दी है। यह एक ऐसी मुद्रा है कि जो सरकार के ऋण पर आधारित है जो आर्थिक प्रणाली से बर्हिजात है। बाहरी मुद्रा के सम्बन्ध में उसके समान्तर कोई ऋण नहीं होता है। सरकार की कुल क्रियाएं जैसे वस्तु और सेवा के खरीद अर्थात अन्तरण भुगतानों के फलस्वरूप पैदा हुई मुद्रा परिसम्पति की बाहरी मुद्रा होती है। बाहरी मुद्रा सरकार का एक ऋण के रूप में देन–दारियों को प्रकट करता है। इसी कारण मुद्रा की मांग के सिद्धांत पर बल दिया गया है केन्द्रीय बैंक करेंसी और न्यनूतम आरक्षित अनुपात है।

Minimum Reserve Ratio

मुद्रा की पूर्ति का निर्धारण केवल सरकार के द्वारा नहीं बल्कि जनता और बैंकों के द्वारा भी की जाती है।

मुद्रा पूर्ति के प्रकार– **(M)** मुद्रा के विभिन्न माप होते है। (M or M1, M2, M3 & M4) होते हैं। M को संकुचित मुद्रा माना गया है। (C) करेन्सी और DD मांग जमाएं सम्मिलित होती है। ये मांग जमाएं जनता द्वारा बैंकों में रखी गई है। जिनको बैंक के माध्यम से हस्तान्तरित किया जा सकता है और अन्य जमाएं जो सरकारी संस्थाओं के द्वारा और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के द्वारा केन्द्रीय बैंक में रखी जाती है और कुल जमाओं का एक प्रतिशत से भी कम भाग रखा जा सकता है। निम्न प्रकार दर्शाया जा सकता हे।

$M = C+DD$

उच्च शक्ति मुद्रा - लोगों के पास करेन्सी (C) बैंकों द्वारा नकदी रूप में रखी गई आरक्षित भण्डार (R) व केन्द्रीय बैंक की अन्य जमाएं (DD) सम्मिलित है। H को निम्न प्रकार से दर्शाया जा सकता है।

H = C+R

H का निर्माण सरकार और केन्द्रीय बैंक के द्वारा किया जा सकता है और इसकी मांग सरकार और जनता के द्वारा की जाती है। सामान्यतः कुछ निवेशक जोखिम टालने वाले होते है। अपने धन को नकदी और बॉण्ड के माध्यम से विभाजित करते हैं और शून्य जोखिम का अर्थ होता है कि सारा का सारा धन नकदी के रूप में अपने पास रखते हैं और भविष्य में अनिश्चिताओं का अर्थ है कि अधिक बॉण्ड खरीदने पर अधिक जोखिम उठाना पड़ता है और अधिक लाभ भी आशा होती है। धन को मुद्रा तथा बॉण्डों को विभिन्न संयोगों के रूप में संचित रखने से उत्पन्न आशंकित लाभ को w रेखा द्वारा दर्शाया गया है। यह रेखा उपभोक्ता के चयन सिद्धांत को बजट रेखा के समान मानती है और उपभोक्ता को अपने व्यक्तिगत परिसम्पतियों से आय **E** बिन्दु पर अधिकतम होगी और बजट रेखा IC_2 अधिमान वक्रों को प्रकट करती है और कुल धन ow का विभाजन इस प्रकार किया जाता है। वह OB मात्रा के बॉण्ड में खरीदने के लिए प्रयोग करता है और BW नकदी के रूप में अपने पास रखता है। वह इसलिए ऐसा करता है कि क्योंकि यदि सारे धन को नकदी में रखता है तो वह नीचे वाली रेखा IC, पर स्थित रहेगा और यदि वह सारे धन को बॉण्डों में रखता है तो IC, से भी नीचे वाले किसी IC, पर स्थित होगी परन्तु दोनों अवस्थाओं की अपेक्षा उसका सन्तुलन E बिन्दु पर ही होगा।

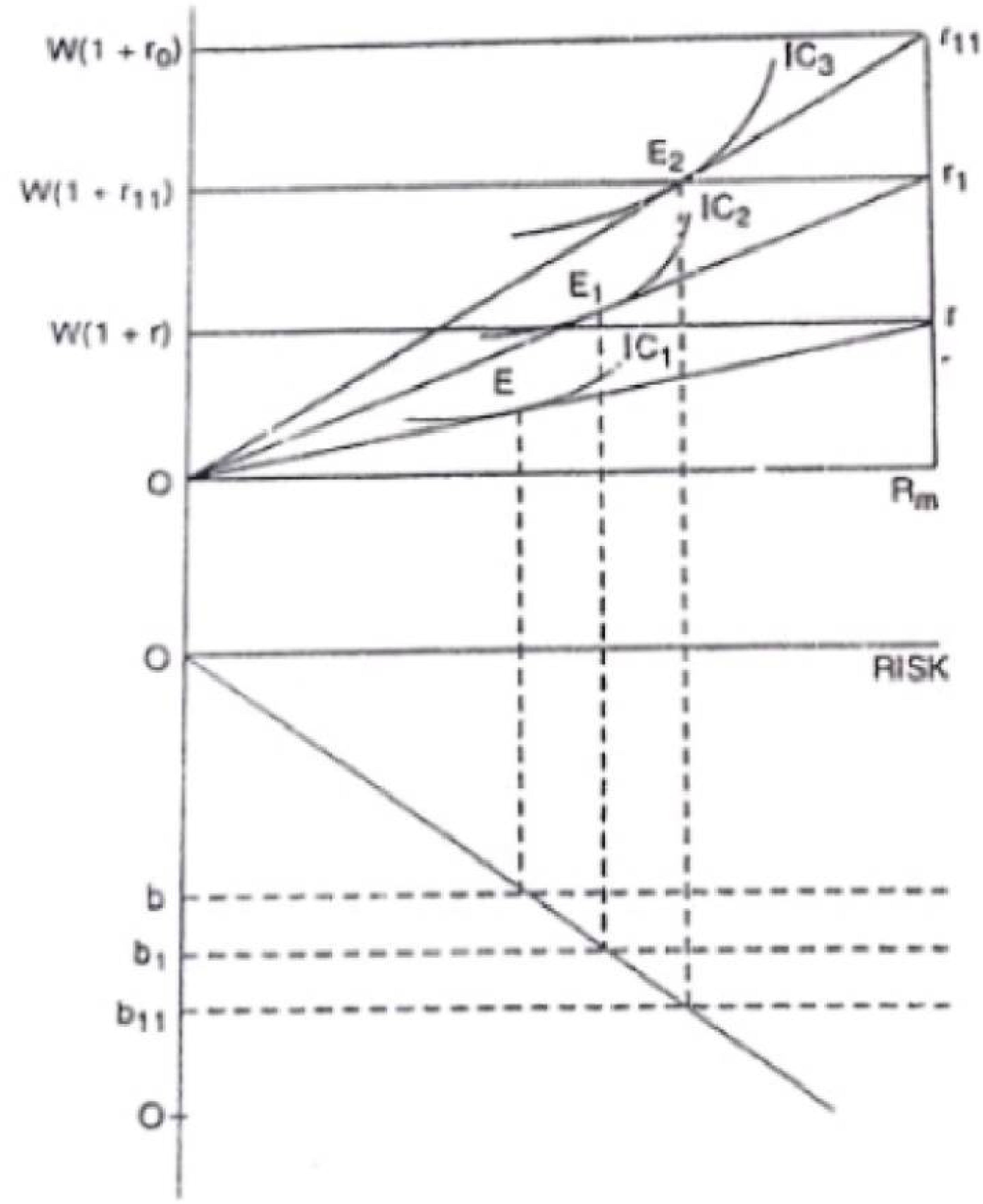

चित्र नं0–6

धन की मात्रा **W** और अधिकतम जोखिम स्थिर रखते हुए बजट सीमा रेखा का ढ़ाल ब्याज की दर (r) पर निर्भर करता है।

$$\frac{W(1+r)-w}{R_m}=\frac{rw}{R_m}$$

ब्राण्ड पर ब्याज की दर (r) ये वृद्धि के साथ बजट सीमा रेखा का ढ़ाल बढ़ता जाएगा तथा कमी होने के कारण साथ–साथ कम होता जाएगा। किसी व्यक्ति के नकदी अधिमान फलन 0को निश्चित धन की मात्रा (w) होते हुए ब्याज की विभिन्न दरों पर प्राप्त किया जा सकता है और यह मान लिया गया है कि भविष्य में ब्याज सम्बन्धी अनिश्चिता में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

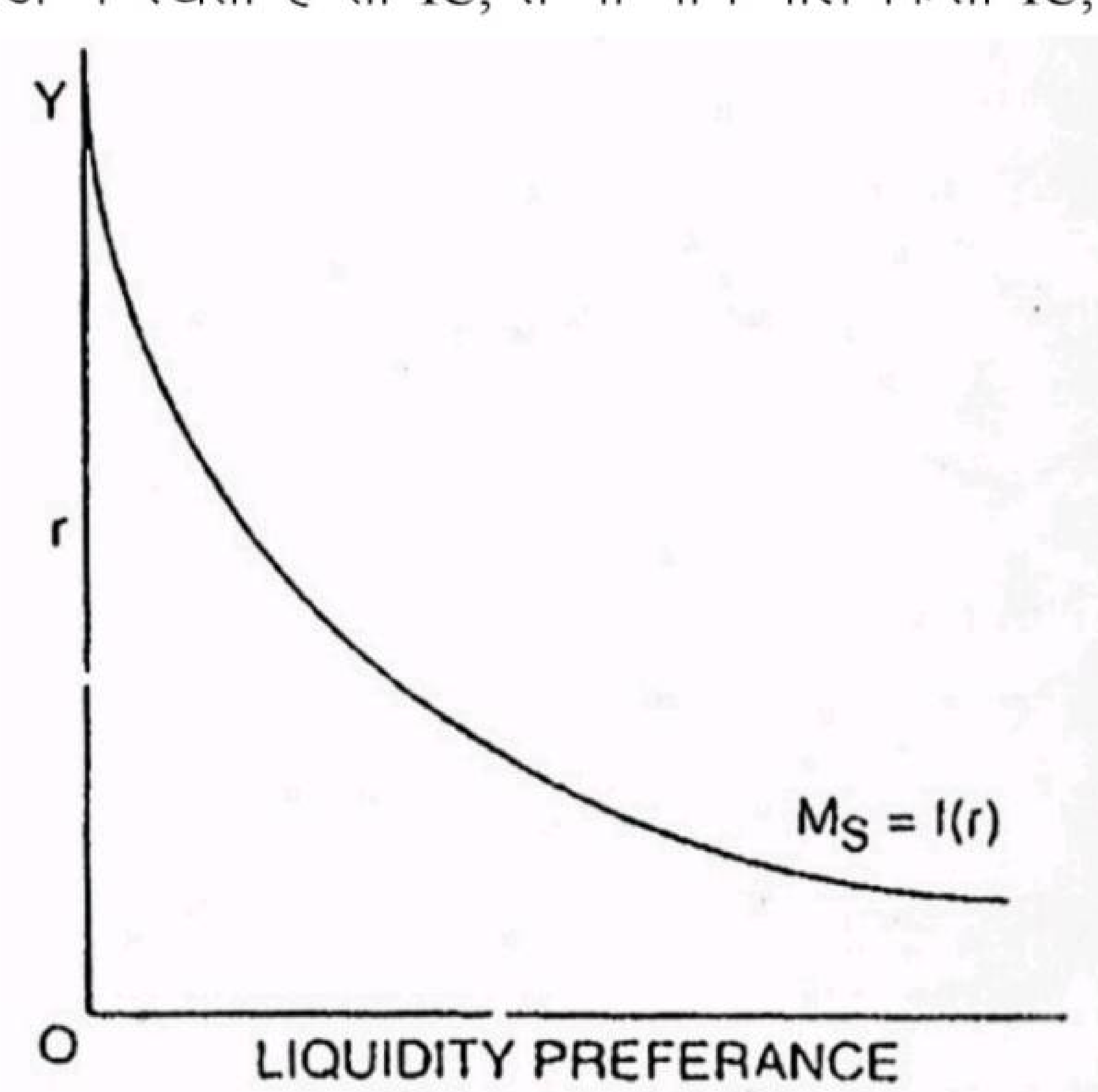

चित्र नं0–7

ब्याज की दरों में वृद्धि या बॉण्ड की कीमतों में निरन्तर गिरावट से बजट सीमा रेखा का ढाल बढ़ता जाता है और अधिकतम जोखिम Ram उठाकर सारे धन को बॉण्ड में प्राप्त होने वाले अधिकतम धन W (1+r) की मात्रा प्राप्त की जा सकती है। चित्र मे ox अक्ष पर जोखिम की मात्रा को लिया गया है। और Ox अक्ष पर धन की मात्रा सट्टा उद्देश्य के लिए रखी गई है। ब्याज की दर (r) है और अधिकतम जोखिम उठाकर w(1+r) प्राप्त किया गया है और E बिन्दु पर बजट सीमा रेखा W_1 अनाधियान वक्र 1C, को स्पर्श करता है। निम्न स्तर के भाग पर OW धन का OB भाग बॉण्डों पर और BW भाग नकदी के रूप में रखा जाता है जब r बढ़कर r_1 होता है तो वह E_1 बिन्दु पर सन्तुलन होता है और पत्रादान का Ob, भाग बॉण्डों में B, W नकदी के रूप में रखता है। इसी प्रकार जब r बढ़कर r_{11} होता है तो वह E_3 पर सन्तुलन प्राप्त करके Ob_{11} भाग बॉण्ड और $r_{11}w$ भाग नकदी में रखता जाता है। जैसे–2 ब्याज की दर बढ़ती चली जाती है। निवेशक अधिक जोखिम उठाते जाते हैं।

बॉमोल का क्रय–विक्रय सम्बन्धी मुद्रा का सिद्धांत - बॉमोल ने केन्ज के क्रय–विक्रय सम्बन्धी सिद्धांत में सुधारात्मक संशोधित रूप प्रस्तुत किया। बॉमोल के अनुसार एक फर्म कच्चे माल की मात्रा का निर्धारण इस प्रकार करती है और उत्पादन में किसी प्रकार की रूकावट भी ना हो और कच्चा माल बेकार भी ना जाये और कच्चे माल के लिए किया गया। प्रबन्ध लागत को कम कर देता है और कच्चे माल के भण्डार पर संचय की गई पूंजी पर ब्याज देना पड़ता है। इसलिए भण्डार संचय पर पूंजी पर ब्याज तथा गोदाम आदि पर किराया देना पड़ता है। इसलिए फर्मे भण्डार पर कम से कम खर्च किया जा सके। इसी प्रकार मुद्रा की सौदा मांग वस्तु भण्डार–लागत कम से कम हो। बामोल ने क्रय–विक्रय की मुद्रा मांग को किसी संचय वस्तु का करने पर कितनी लागत आती है और नकदी की इतनी मांग करनी चाहिए कि मुद्रा की वस्तु भण्डार लागत कम से कम होनी चाहिए। बामोल ने क्रय–विक्रय को मुद्रा भण्डार का लागत से जोड़कर इसको पूंजी सिद्धांत से सम्बन्धित किया है। पूंजी के अपने पास रखना ब्याज की मात्रा का परित्याग करना है और ब्याज के रूप में जो मुद्रा प्राप्त होती है उस मुद्रा से शेयर और बॉण्ड़ को खरीदा जा सकता है। इसको नकदी की अवसर कहा जाता है। बामोल ने केन्ज के सिद्धांत की आलोचना करते हुए कहा है कि किसी निशिचित ब्याज की दर के बाद भी ब्याज दर बढ़ता है। तो लेन–देन उदेश्य के लिए मुद्रा की मांग ब्याज के प्रति लोचशील हो जाती है परन्तु केन्ज का सिद्धांत इसकी ब्याज की बेलोच मनाता है। इसी प्रकार बामोल ने लेन–देन उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग दो भागों में विभक्त की है। प्रथम भाग में वह कि ब्याज की दर निम्न दर में हुए परिवर्तन मुद्रा की सौदा भाग की प्रभावित नहीं करती है। दूसरा वह भाग जिस पर ब्याज दर एक निश्चित ब्याज दर से निश्चित होने पर अपनी पूर्ति शेयर और ब्राण्ड में लगता है और कुछ पूंजी मुद्रा के रूप में अपने पास नकदी में रख लेता है अर्थात लेन–देन उद्देश्य के लिए नकदी की मांग ब्याज लोचशील बन जाती है। इसको निम्न चित्र की सहायता से दर्शाया जा सकता है। चित्र नं0. 8 में r से नीचे ब्याज की दर में उतार चढ़ाव मुद्रा की मांग M_0 पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता परन्तु ब्याज की दर बढ़कर r हो जाती है तो नकदी की मांग M_1 रह जाती है अर्थात M_1 M_0 नकदी को बॉण्ड में लगाकर ब्याज आय अर्जित की जाती है।

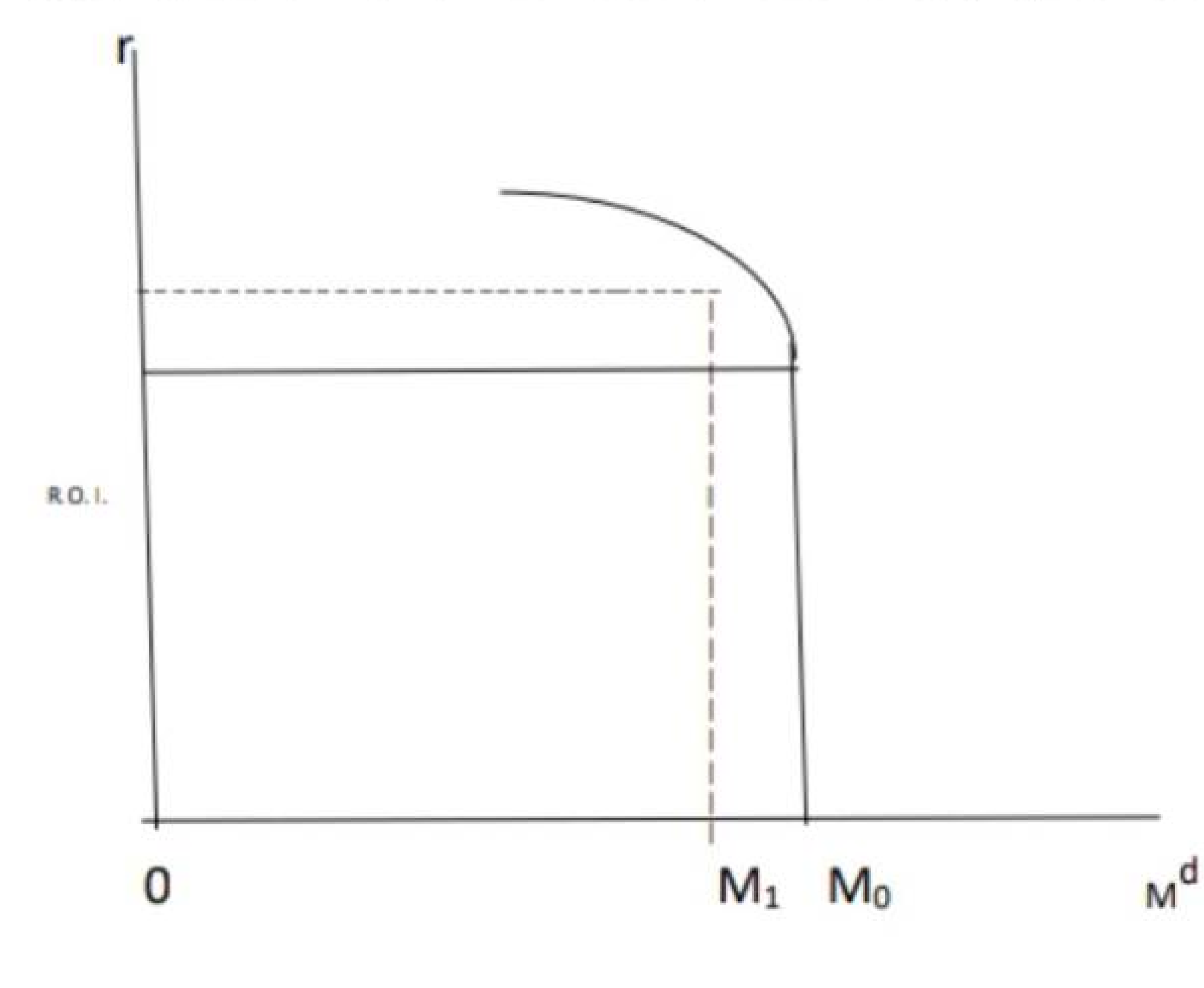

Transaction Demand

चित्र नं0–8

मुद्रा को बॉण्ड और नकदी में रखने से दो प्रकार की लागतों का सहन करना पड़ता है।

1. ब्याज का त्याग
2. बॉण्ड को नकदी में परिवर्तन करने की लागत

मुद्रा को अगर हम नकदी के रूप में रखते है तो ब्याज का त्याग करना पड़ता है तो आय नकदी से बॉण्ड खरीद कर प्राप्त की जा सकती है। इसी के साथ–साथ नकदी की आवश्यकता पड़ने पर बॉण्ड को नकदी में परिवर्तित करना पड़ता है। जिस पर दलाल की कमीशन और डाक आदि पर किया गया व्यय करना पड़ता है। जिनको गैर ब्याज लागत भी कहा जा सकता है। इसलिए निर्णय करना पड़ना है कि लागत को कैसे कम किया जा सके। व्यक्ति नकदी का अनुकूलतम भण्डार रखकर इसकी लागत को कम से कम करना चाहता है और यह निम्न परिकल्पनाओं पर आधारित होता है।

परिकल्पनाएं :

1. किसी निश्चित अवधि में खर्च की जाने वाली मुद्रा की मात्रा दी गई है।
2. बॉण्ड बाजार में पूर्ण प्रतियोगिताएं पाई जाती है।
3. ब्याज की दर स्थिर रहती है।
4. गैर–ब्याज दर भी स्थिर रहती है।
5. बॉण्ड को नकदी में प्रत्येक वार परिवर्तित करने का आकार K के द्वारा परिवर्तित होता है।

व्याख्या (Explanation) किसी दी हुई समय अवधि में बॉण्ड को नकदी में परिवर्तित किया जाता है।

यहां M/K कल्पना की गई है कि अगर सारी सौदा मुद्रा को बॉण्डों में खरीदने के लिए लगाई जाती है।

यदि मुद्रा की मात्रा M=10,000 और K = 1000 रू0 है तो कमीशन 10 (10,000 / 1000) बॉण्डों को नकदी में परिवर्तित कराया जा सकता है। इसलिए कुल नकदी वापिस लने के लिए कमीशन (दलाली) B (M/K) के बराबर होगी। B दलाली फीस की दर है। इसी प्रकार ब्याज लागत जो मुद्रा को नकदी में रखने पर वहन करनी पड़ती है, निकाला जाता है। एक समय अवधि के अन्तर्गत उसको पास औसत मुद्रा K/2 के समान होगी।

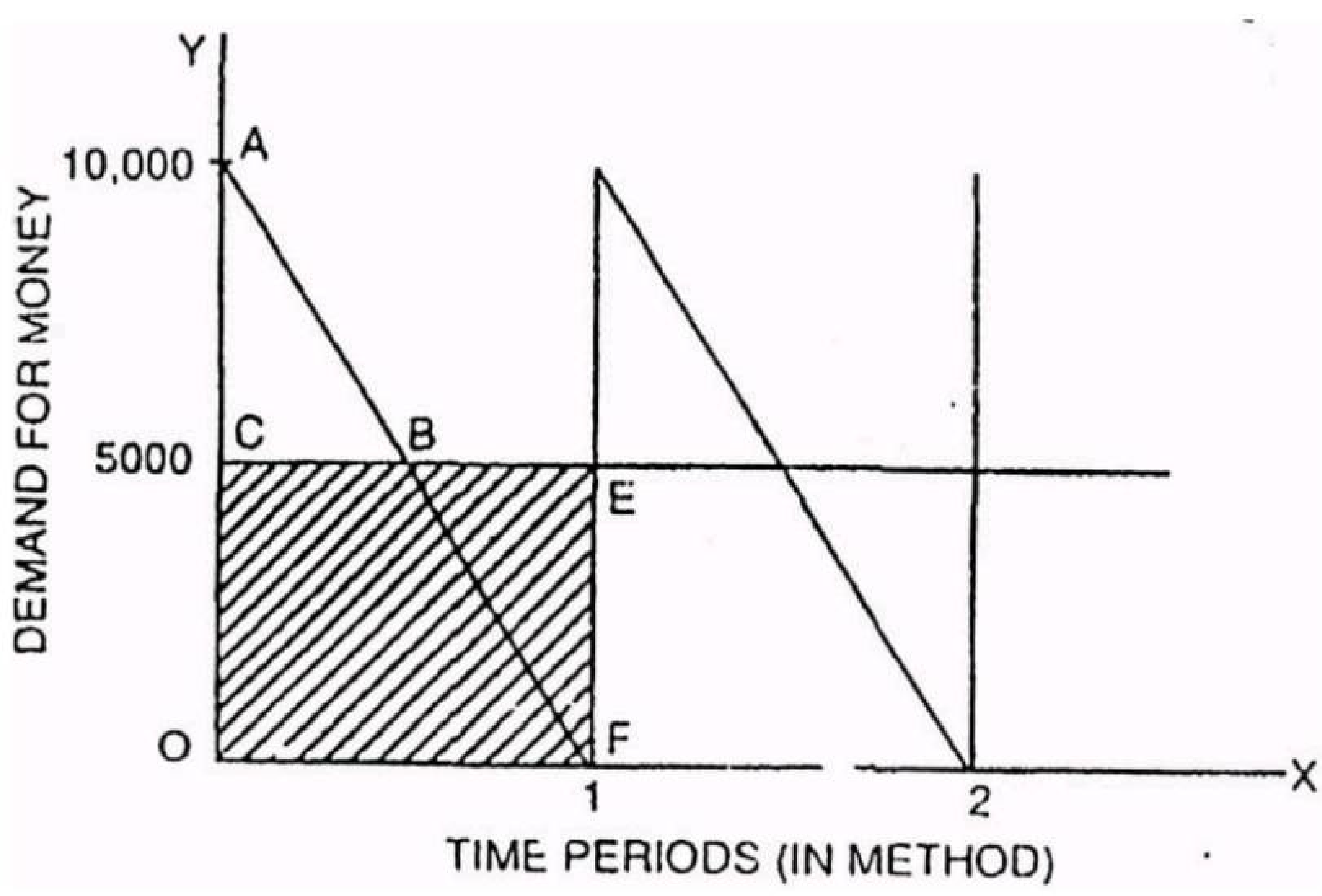

चित्र नं0–9

इस रेखाचित्र के द्वारा हम एक व्यक्ति की औसत मुद्रा की मांग प्राप्त कर सकते है। मान लीजिए एक व्यक्ति को महीने के शुरूआत में 10000रू मुद्रा के रूप में मिलती हैं। महीने के आखिरी तक मुद्रा खर्च होकर शून्य हो जाती है। रेखाचित्र में ABC त्रिभुज BEF के सर्वांगसम है। उस व्यक्ति के पास औसतन 5000 मुद्रा रही है। इस प्रकार K एक समय अवधि के लिए नगद मुद्रा है। औसत नगद मुद्रा (K/2) के समान होगी।

पम्परावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार मुद्रा की मांग

1. परिचय

मौद्रिक सन्तुलन मुद्रा की मांग व पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होता है। मौद्रिक सन्तुलन वहां स्थापित होता है जहां मुद्रा की मात्रा तथा मुद्रा की पूर्ति परस्पर समान होती है। मुद्रा की मांग, मुद्रा के दो महत्वपूर्ण कार्यों से उत्पन्न होती है। प्रथम, मुद्रा विनिमय के माध्यम का कार्य करती है तथा दूसरा, मुद्रा मूल्य का सचंय है। अतः व्यक्ति तथा व्यापारी मुद्रा को आंशिक रूप से नकदी में तथा आंशिक रूप से assets में रखना चाहते है। मुद्रा की कुल मांग एक देश में किये गए कुल लेन–देन सम्बंधी सौदों की संख्या तथा औसत कीमत स्तर पर निर्भर करती है जिसकों फिशर के समीकरण द्वारा निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता हैः–

PT = MY

M = Money Supply

V = Velocity of Money is Circulation

उपरोक्त समीकरण में PT मुद्रा की कुल मांग को दर्शाता है। अर्थात मुद्रा की मांग किये जाने वाले क्रय–विक्रय सम्बन्धी सौदों के मूल्य के बराबर ही की जाएगी ताकि मुद्रा के माध्यम से सभी सौदे सम्पन्न हो सकें। बाद में उसके स्थान पर Y का प्रयोग किया जाने लगा क्योंकि अर्थव्यवस्था में कुल कितना लेन–देन हुआ है। उसको जानना कठिन होता है। जबकि मुद्रा राष्ट्रीय आय (Y) का अनुमान लगाना आसान है। इस प्रकार Y तथा T बराबर होते हैं क्योंकि क्रय–विक्रय (T) उन्हीं वस्तुओं का होता है। जो वर्ष के दौरान उत्पादित की गई है। मुद्रा की मांग का क्रैम्ब्रिज या नवपरम्परावादी सिद्धान्त कैम्बिज विश्वविद्यालय के विभिन्न अर्थशास्त्रियों जैसे मार्शल, पीगू, राबर्टसन आदि ने प्रतिपादित किया। इस सिद्धान्त के अनुसार मुद्रा की मांग, मौद्रिक आय पर निर्भर करती है। इसे निम्न समीकरण द्वारा व्यक्त किया गया हैः–

Md = Ky (i)

Or Md = KPY

Y = Real Income

P = Price Level

K = वास्तविक आय का वह भाग जिसे लोग नकदी के रूप में अपने पास रखते है यह सिद्धान्त व्यक्त करता है कि K के स्थिर रहने पर, P या Y या दोनों के बढ़ने पर Md बढ़ती है तथा घटने पर कम होती है। किसी दी हुई मौद्रिक आय (Py) पर मुद्रा की कितनी मांग की जाती है। इसका निर्धारण K के मूल्य पर निर्भर करता है। समीकरण (i) के अनुसार

1.3 अपनी प्रगति जाचिएं

1. फिशर का मौद्रिक नीति सम्बन्धी सिद्धान्त की स्पष्ट में व्याख्या कीजिए?

Classical Approach to Demand for Money: (Fisher's Equation)

मौद्रिक सन्तुलन मुद्रा की मांग व पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होता है। मौद्रिक सन्तुलन वहां स्थापित होता है जहां मुद्रा की मात्रा तथा मुद्रा की पूर्ति परस्पर समान होती है। मुद्रा की मांग, मुद्रा के दो महत्वपूर्ण कार्यो से उत्पन्न होती है। प्रथम, मुद्रा विनिमय के माध्यम का कार्य करती है तथा दूसरा, मुद्रा मूल्य का सचंय है। अतः व्यक्ति तथा व्यापारी मुद्रा को आंशिक रूप से नकदी में तथा आंशिक रूप से assets में रखना चाहते है।

मुद्रा की मांग में परिवर्तनों के अध्ययन से सम्बन्धित दो दृष्टिकोण है।

1. माप (Scale) दृ्ष्टिकोण तथा 2. स्थानापन्न दृष्टिकोण माप दृष्टिकोण का सम्बन्ध आय या सम्पति स्तर के Md पर प्रभाव से है। Md प्रत्यवा रूप से आय के स्तर से सम्बन्धित होती है। आय–स्तर ऊंचा होने पर Md भी अधिक होगी।

प्रतिस्थापन दृष्टिकोण assets की सापेक्ष आकर्षणशीलता से सम्बन्धित है जिनको मुद्रा से प्रतिस्थापित किया जा सकता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार जब ब्याज दरों के गिरने से बॉण्डों जैसी वैकल्पिक परिसम्पतियां attractive नहीं रखती तो लोग अपनी assets को नकदी के रूप में रखना पसन्द करते हैं। जिससे Md बढ़ जाती है और विलोमशः 'माप' व प्रतिस्थापक दृष्टिकोणों को मिलाकर Md के स्वर्ण की व्याख्या की जाती है। मांग तथा सट्टा मांग में बांटा गया है। अतः Md से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। जिनमें से यहां हम मुद्रा की मांग के परंपरावादी सिद्धान्त का अध्ययन करेंगे।

यद्यपि परंपरावादी अर्थशास्त्रियों के मुद्रा की मांग का कोई विशेष सिद्धान्त प्रतिपादित नही किया। फिर भी मुद्रा की मांग सम्बन्धी उनके विचार मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त' (फिशर समीकरण) से प्रकट होते हैं। उनके अनुसार मुद्रा की मांग केवल इसलिए की जाती है क्योंकि यह वस्तुओं तथा सेवाओं के मध्य विनिमय की प्रक्रिया को सरल बना देती है। Barter System में वस्तु तथा सेवाओं के मध्य परस्पर विनिमय करना काफी कठिन होता था क्योंकि आवश्यकताओं के समन्वय तथा वस्तुओं के मूल्य के माप आदि की गम्भीर समस्या बनी रहती थी इसीलिए मुद्रा का आविष्कार किया गया है। अतः उनके अनुसार Md विनिमय के कार्य को सम्पन्न करने के लिए ही की जाती है। अतः परम्परावादी अर्थशास्त्री मुद्रा को केवल विनिमय का माध्यम ही मानते थे।

इस प्रकार मुद्रा की कुल मांग एक देश में किये गए कुल लेन–देन सम्बंधी सौदों की संख्या तथा औसत कीमत स्तर पर निर्भर करती है जिसकों फिशर के समीकरण द्वारा निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता हैः–

$PT = MY$

M = Money Supply

V = Velocity of Money is Circulation

उपरोक्त समीकरण में PT मुद्रा की कुल मांग को दर्शाता है। अर्थात मुद्रा की मांग किये जाने वाले क्रय–विक्रय सम्बन्धी सौदों के मूल्य के बराबर ही की जाएगी ताकि मुद्रा के माध्यम से सभी सौदे सम्पन्न हो सकें। बाद में T के स्थान पर Y का प्रयोग किया जाने लगा क्योंकि अर्थव्यवस्था में कुल कितना लेन–देन हुआ है। उसकों जानना कठिन होता है। जबकि राष्ट्रीय आय (Y) का अनुमान लगाना आसान है। इस प्रकार Y तथा T बराबर होते हैं क्योंकि क्रय–विक्रय (T) उन्हीं वस्तुओं का होता है। जो वर्ष के दौरान उत्पादित की गई है।

अतः $PY = MV$ चूंकि परम्परावादी अर्थशास्त्री पूर्ण रोजगार की मान्यता करते है और Y तथा V को स्थिर मानते हैं। इसलिए Md को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता हैः–

$$M^d = PY/V$$

इसका अर्थ यह हुआ कि Y के स्थिर रहने पर Md, कीमत स्तर (P) तथा रचनात्मक आनुपात्तिक सम्बन्ध रखती है।

परम्परावादी विचारधारा की इसलिये आलोचना की जाती है क्योंकि यह मुद्रा के मूल्य सचंय कार्य की अवहेलना करती है। परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने मुद्रा के केवल विनिमय के माध्यम कार्य पर ही बल दिया। उनके लिए अर्थव्यवस्था में मुद्रा एक तटस्थ की भूमिका निभाती थी। यदि मुद्रा assets के रूप में संचित कर ली जाए तो यह बढ़ती नहीं थी और बेकार होती थी। परन्तु यह एक गलत धारणा थी क्योंकि मुद्रा assets कार्य भी करती है मुद्रा को बिलों, बॉण्डों, ऋण–पत्रों, प्रतिभूतियों आदि के रूप में भी रखा जा सकता है।

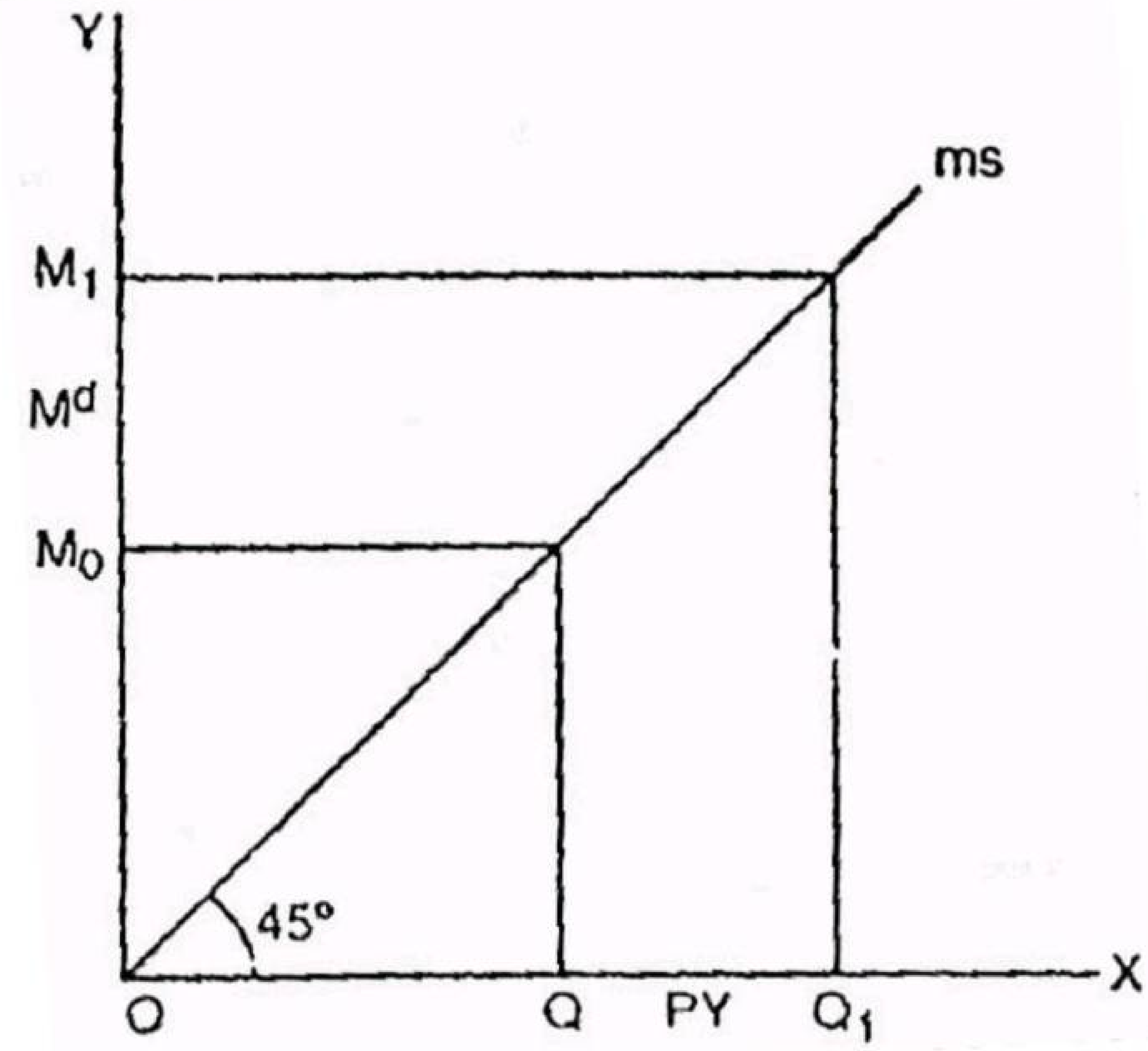

चित्र नं0–10

Combridge Quantity Theory of Money Demand

मुद्रा की मांग का क्रैम्ब्रिज या नवपरम्परावादी सिद्धान्त कैम्बिज विश्वविद्यालय के विभिन्न अर्थशास्त्रियों जैसे मार्शल, पीगू, राबर्टसन आदि ने प्रतिपादित किया। इस सिद्धान्त के अनुसार मुद्रा की मांग, मौद्रिक आय पर निर्भर करती है। इसे निम्न समीकरण द्वारा व्यक्त किया गया है:–

$$Md = Ky \qquad \ldots..(i)$$

Or

$$Md = KPY$$

Y = Output

P = Price Level

K = वास्तविक आय का वह भाग जिसे लोग नकदी के रूप में अपने पास रखते है यह सिद्धान्त व्यक्त करता है कि K के स्थिर रहने पर, P या Y या दोनों के बढ़ने पर Md बढ़ती है

तथा घटने पर कम होती है। किसी दी हुई मौद्रिक आय (Py) पर मुद्रा की कितनी मांग की जाती है। इसका निर्धारण K के मूल्य पर निर्भर करता है। समीकरण (i) के अनुसार

$$K = M^d/Y$$

यदि मौद्रिक आय 500_{cr} रू है और जनता अपने पास 100 cr रू. रखना चाहती है या Md करती है तो K का मूल्य 100/500 होगा। अर्थात् जनता अपनी वार्षिक आय का औसतन 1/5 भाग नकदी के रूप में रखना चाहती है या मुद्रा की मांग करती है। इस सिद्धान्त को निम्न रेखाचित्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। रेखाचित्र से स्पष्ट है कि मुद्रा की मांग, मौद्रिक आय का बढ़ता हुआ सरल रेखीय फलन है। इस वक्र की ढ़ाल K = Md/y को निर्धारित करती है।

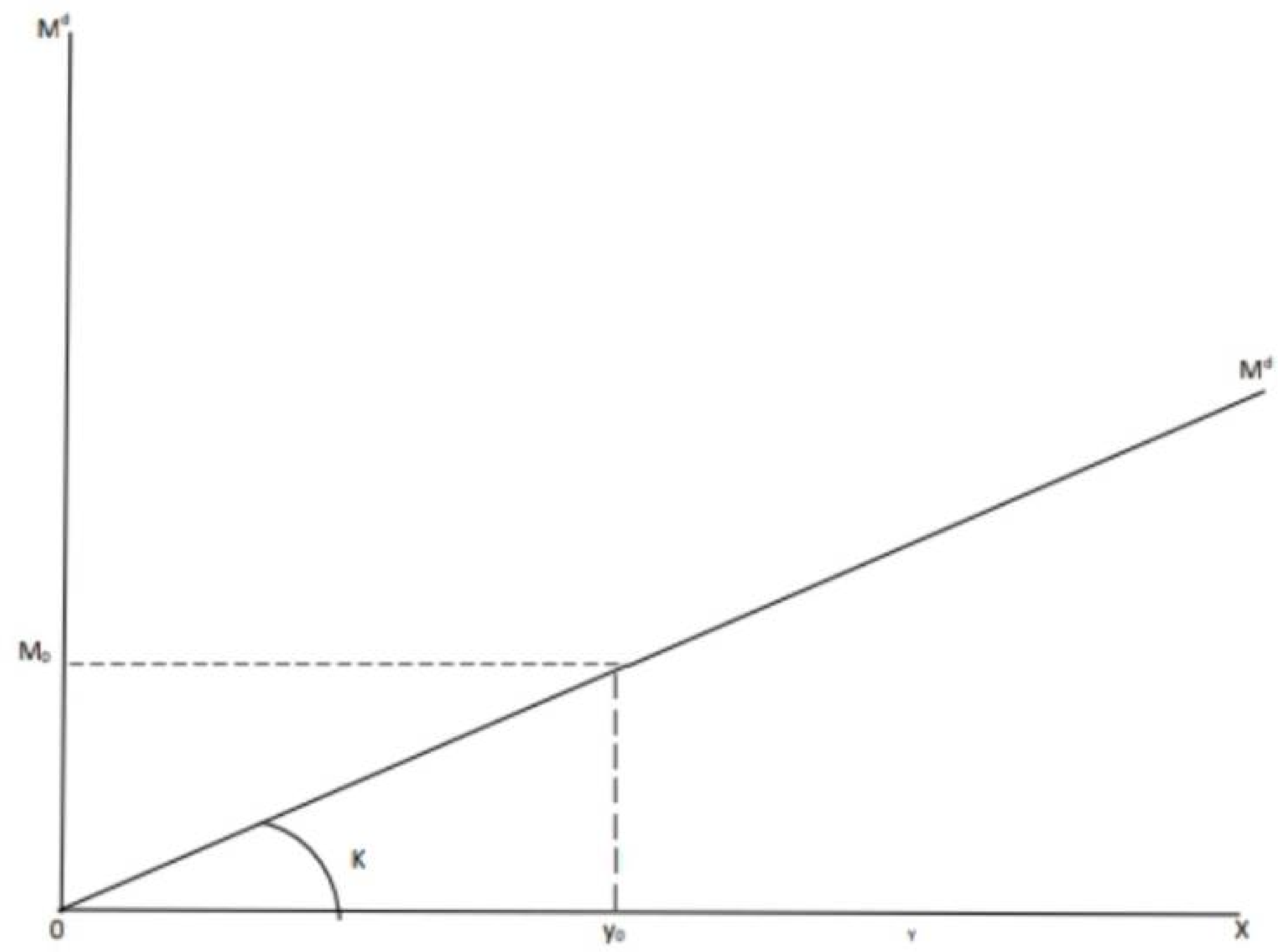

चित्र नं0 11

सिद्धान्त के प्रारम्भिक निर्माण में Y के स्थान पर T रखा गया था। तब यह समझा गया था कि मुद्रा विनिमय के माध्यम के रूप में ही मापी जाती है। परन्तु केन्ज के आगमन के बाद NY को अधिक महत्व दिया जाने लगा। अतः

$M^d = KPY$

दोनों तरफ P से भाग देने पर हमें प्राप्त होता है।

$(M/P)^d = KY$

यह समीकरण मुद्रा की वास्तविक मांग को व्यक्त करता है। इससे ज्ञात होता है कि K के स्थिर रहते हुए, मुद्रा की वास्तविक मांग _ उत्पादन (Y) के स्तर पर निर्भर करती है। नव–परम्परावादी अर्थशास्त्री मानते थे कि K पर ब्याज दर का भी प्रभाव पड़ता है परन्तु वे अपने तर्क बाद में केन्ज ने मुद्रा की मांग पर ब्याज दर के पड़ने वाले प्रभावों की वैज्ञानिक जांच की। उपरोक्त समीकरण में K आनुपातिकता का तत्व है जो मुद्रा की मांग तथा वास्तविक आय (Y) के बीच आनुपातिक तथा वास्तविक स्थापित करता है।

K की अन्य विशेषता यह है कि यह मुद्रा की चलन गति (Y) से विपरीत होती है तो लोग वास्तविक आय का अधिक भाग नकदी (मुद्रा) के रूप में रखते है और लेन–देन सौदों की संख्या कम होती है और मुद्रा की चलनगति स्वतः ही कम हो जाती है। इसके विपरीत जब K गिरता है तो लोग मुद्रा की कम मात्रा अपने पास रखते हैं और ज्यादा भाग वस्तुओं तथा सेवाओं के क्रय–विक्रय पर खर्च करते है जिससे मुद्रा की चलन गति बढ़ जाती है। अतः K हमेशा V से विपरीत सम्बन्ध रखता है।

Y = I/Y इस प्रकार समीकरण (i) को निम्न प्रकार से व्यक्त करके इसकी मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त से तुलना की जा सकती हैः–

$M^d = KPY = 1/V.PY$

Y स्थान पर T रखने पर

$M^d = (1/V)\ PT$

क्योंकि सन्तुलन की अवस्था में $M^d = M^s$ होती है।

Or PT = MV or PY = MV

इस प्रकार कैम्ब्रिज सिद्वान्त में संशोधन करने पर मुद्रा के परिमाण सिद्वान्त का समीकरण प्राप्त होता है। इससे निम्न निकाला जा सकता हैः–

1. P के स्थिर रहने पर मुद्रा की मांग की आय लोच इकाई के समान है।

2. Y के स्थिर रहने पर मुद्रा की मांग की कीमत लोच भी इकाई के समान है।

केन्ज का मुद्रा की मांग का सिद्वान्त

1. परिचय : केन्ज के द्वारा प्रतिपादित पुस्तक का क्या नाम है। इस सिद्वान्त का प्रतिपादन उन्होंने अपनी पुस्तक "The General Theory of Employment Interest & Money (1936)" में लेखों द्वारा किया।

केन्ज के अनुसार मुद्रा की मात्रा व कीमत स्तर में अप्रत्यक्ष सम्बन्ध होता हैं। उनके अनुसार, मुद्रा की मात्रा परिवर्तित होने से पहले ब्याज दर प्रभावित होती है जैसे मुद्रा की मात्रा बढ़ने से ब्याज की दर कम हो जाती है। यदि ब्याज की दर कम होगी तो निवेश को प्रोत्साहन मिलेगा जिससे उत्पादन, आय व रोजगार को बढ़ावा मिलेगा। उत्पादन बढ़ने के फलस्वरूप उत्पादन लागत बढ़ेगी जिससे उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं की भी कीमते बढ़ेगी।

Keysian Theory of Money:- फिशर और कैम्ब्रिज समीकरणों की त्रुटि के कारण प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जे.एम. केन्ज ने मुद्रा तथा कीमतों से सम्बन्धित अपना अलग सिद्धान्त प्रस्तुत किया। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन उन्होंने अपनी पुस्तक "The General Theory of Employment Interest & Money (1936)" में लेखों द्वारा किया। मुद्रा के परिमाण में होने वाले परिवर्तन का कीमत स्तर पर प्रत्यत्र और आनुपातिक प्रभाव पड़ता है। परन्तु केन्ज के अनुसार मुद्रा की मात्रा में परिवर्तन का कीमत स्तर पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

Assumptions:-

1. बेरोजगारी की अवस्था में उत्पादन की मूल्य सापेक्षता इकाई के समान होती है।
2. पूर्ण रोजगार के अन्तर्गत उत्पादन की पूर्ति पूर्णतः मूल्य निरपेक्ष होती है।
3. अपूर्ण रोजगार की अवस्था में साधन पूर्णतः मूल्य सापेक्ष होते हैं।
4. केन्ज मुद्रा की मात्रा व कीमतों के अध्ययन हेतु अल्पकालीन समयावधि की परिकल्पना करता है।
5. उत्पादन के साधन पूर्णतया स्थानापन्न होते हैं।
6. समान प्रतिफल का नियम के अनुसार, मुद्रा की मात्रा बढ़ने पर केवल उत्पादन बढ़ेगा, कीमतें नहीं।
7. मुद्रा पूर्ति में परिवर्तन प्रभावी मांग को उसी अनुपात में बदलता है।

Explanation:- मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त मुद्रा की मात्रा और कीमत स्तर के मध्य प्रत्यक्ष और आनुपातिक सम्बन्ध मानता है। परन्तु केन्ज के अनुसार मुद्रा की मात्रा कीमत स्तर को केवल उत्पादन को प्रभावित करके ही परिवर्तित कर सकती है।

प्रथमतः मुद्रा की मात्रा में वृद्धि के फलस्वरूप पहले पूर्ण रोजगार की स्थिति से पूर्व उत्पादन और आय की मात्रा बढ़ती है और पूर्ण रोजगार के पश्चात् केवल कीमतों में ही वृद्धि होती जाती है। केन्जीयन सिद्धान्त में मुद्रा की मात्रा व कीमत सम्बन्ध दो स्वरूपों में प्रस्तुत किए हैः–

(A) मुद्रा की मात्रा व कीमत स्तर में अप्रत्यक्ष सम्बन्धः– केन्ज के अनुसार मुद्रा की मात्रा व कीमत स्तर में अप्रत्यक्ष सम्बन्ध होता हैं। उनके अनुसार, मुद्रा की मात्रा परिवर्तित होने से पहले ब्याज दर प्रभावित होती है जैसे मुद्रा की मात्रा बढ़ने से ब्याज की दर कम हो जाती है। यदि ब्याज की दर कम होगी तो निवेश को प्रोत्साहन मिलेगा

जिससे उत्पादन, आय व रोजगार को बढ़ावा मिलेगा। उत्पादन बढ़ने के फलस्वरूप उत्पदन साधनों की मांग बढ़ने से उत्पादन लागत बढ़ेगी जिससे उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं की भी कीमते बढ़ेगी।

(B) मुद्रा की मात्रा, उत्पादन तथा कीमतों में सम्बन्धः– अपूर्ण रोजगार की स्थिति में मुद्रा की मात्रा बढ़ने पर कीमत स्तर प्रभावित नहीं होते क्योंकि जब उत्पादन की मांग, मुद्रा की मात्रा में वृद्धि के फलस्वरूप बढ़ती है, बेकार साधनों के सदुपयोग द्वारा उत्पादन व रोजगार की मात्रा को बढ़ाया जा सकता है। परन्तु जब पर्वू रोजगार की स्थिति आती है तो केवल कीमत स्तर में वृद्धि होती है उत्पादन अथवा रोजगार में नहीं।

केन्ज ने यह भी कहा कि रोजगार से पूर्व भी मुद्रा की मात्रा में की गई वृद्धि उत्पादन लागत में वृद्धि करती है जिससे उत्पादन व कीमते बढ़ती है। जिसके ये कारण हैः–

1. घटते प्रतिफल के कारण सीमान्त लागत बढ़ती है।

2. बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता के अभाव के कारण एकाधिकारात्मक प्रवृतियां पाई जाती है।

3. ज्यों–ज्यों रोजगार बढ़ता है तो श्रम संघ के कारण व मजदूरी बढ़ाने में सफल होते है। अतः कहा जा सकता है कि मुद्रा की मात्रा व कीमतों के मध्य सम्बन्ध के बारे में केन्ज का सिद्धान्त मुद्रा परिमाण सिद्धान्त से विपरीत है। केन्ज के अनुसा उत्पादन वस्तुओं की कीमतों में परिवर्तन उत्पादन लागत में वृद्धि व मांग में वृद्धि के फलस्वरूप होता है। वस्तुओं की कीमतें बढ़ने के कारण क्रय विक्रय में मुद्रा की अधिक मांग करनी पड़ती है। बढ़ी हुई मुद्रा की मांग के आधार पर मुद्रा की पूर्ति बढ़ानी पड़ती है। इसलिए मुद्रा की पूर्ति स्वंय भी कीमत स्तर पर निर्भर करती है। मुद्रा पूर्ति में परिवर्तन कीमत स्तर में परिवर्तन का परिणाम है न कि कारण। अतः केन्जीयन सिद्धान्त मुद्रा परिणाम सिद्धान्त के बिल्कुल विपरीत माना जाता है।

Liquidity trap:- जब केन्ज ने तरलता जाल का प्रतिपादन किया तभी से यह अर्थव्यवस्था के ध्यान को आकृष्ट करता रहा है। मौद्रिक नीति का विश्लेषण करते समय तरलता जाल की अवहेलना नहीं की जा सकती। यह एक विषम स्थिति है। जिसमें जनता निम्नतम ब्याज दर पर अपनी सट्टा उद्देश्य के लिए रखी हुई सारी मुद्रा को नकदी में रखना चाहती है। r के निम्नतम होने पर ब्रांड की कीमतें अधिकतम होती है। क्योंकि दोनों के मध्य विपरीत संबंध पाया जाता है। इसलिए जनता अपने बांड़ों को बेच डालती है। और अधिकाधिक नकदी की मांग करती है। सट्टेबाज बॉण्ड की कीमतें गिरने का इंतजार करते है। और जब कभी ये कीमतें गिरती हैं अर्थात् r बढ़ जाता है। तब नकदी से बांड़ खरीदे जाते हैं। तरलता जाल की अवस्था में जहां तरलता अधिमान वक्र पूर्णतः लोचशील होता है।

Limitations:- व्यवहार में कभी तरलता अधिमान किसी अर्थव्यवस्था में विद्यामान रहा हो ऐसा देखने में नही आया। केन्ज भी ऐसी अवस्था में अनभिज्ञ था।

सारांश

मौद्रिक संतुलन में परिवर्तन मुद्रा की पूर्ति में परिवर्तनों से भी सम्भव है। यदि समुदाय का तरलता अधिमान और आय का स्तर दिए गए है तो मुद्रा की पूर्ति में मौद्रिक अधिकारी द्वारा कमी किए जाने से संतुलन से ब्याज की दर में वृद्धि होगी और मुद्रा की पूर्ति में में वृद्धि करने से ब्याज की दर में कमी होगी। यहाँ भी हम यही मानते है कि केंद्रीय बैंक द्बारा मुद्रा की पूर्ति में हर विस्तार से ब्याज की दर कम होती जाएगी।

(Demand for money)

- अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न रू –
  1. डॉन पैंटिनकिन के अनुसार मुद्रा मुख्य .... होता है ।
  2. डॉन पैंटिनकिन की पुस्तक .... में प्रकाशित होता है ।

3. सट्टा उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग .... होती है ।
4. टॉबिन के अनुसार समाज में अधिकतम व्यक्ति .... श्रेणी के होते हैं ।
5. वास्तविक आय बढ़ने से .... में तीव्र वृद्धि होती है ।
6. फिशर ने मुद्रा का परिमाण सिद्धांत .... में दिया ।
7. फ्रीडमैन की प्रसिद्ध पुस्तक .... है ।
8. साख का अधिक निर्माण मुद्रा गुणांक पर .... प्रभाव डालता है ।

- अपनी प्रगति जानिए के उत्तर :–
  1. गैर निष्पक्षिय
  2. 1956
  3. धनात्मक
  4. तीसरी
  5. आर्थिक क्रियाओ
  6. 1930
  7. The quality theory of money :A Re-statement
  8. धनात्मक

- अभ्यास हेतु प्रश्न लघु उत्तरीय प्रश्न :–
  1. पैटिनकिन के सिद्धांत की मान्यताएं लिखिए ?
  2. मुद्रा भ्रांति का अभाव क्या है ?
  3. जोखिम प्रेमी क्या है ?
  4. संतुलित मुद्रा पूर्ति का सिद्धांत किन तत्वों पर निर्भर करता है ?
  5. मुद्रा गुणांक क्या है ?
  6. फ्रीडमैन का सिद्धांत क्या है ?
  7. फ्रीडमैन की पुस्तक कब प्रकाशित हुई ?

- दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :–
  1. पैंटिनकिन का सिद्धांत क्या है इन के सिद्धांत की मान्यताओं को विस्तारित कीजिए ।
  2. जोखिम की दृष्टि से निवेशकों को कितनी श्रेणी में बांटा जा सकता है विस्तार से समझाएं।
  3. मुद्रा गुणांक के विभिन्न तत्वों की व्याख्या कीजिए ।
  4. फ्रीडमैन के सिद्धांत की विस्तार से व्याख्या करें ।

(Determination of money supply)

- अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न : –
  1. व्यापारिक बैंको के चौक और ड्राफ्ट करेंसी में .... है।
  2. मुद्रा को अगर हम नगदी के रूप में रखते है तो ब्याज का .... करना पड़ता है।
  3. बॉमोल ने केन्ज के सिद्धांत की आलोचना करते हुए कहा है कि किसी .... के बाद भी ब्याज दर बढ़ता है।
  4. मुद्रा की पूर्ति का सम्बध वर्तमान में .... से है।
  5. दलाल का कमीशन आदि पर किया गया व्यय .... कहलाता है।

6. बॉण्ड बाजार में .... पाई जाती है।
7. मुद्रा की पूर्ति का निर्माण केवल सरकार के द्वारा ही नहीं बल्कि .... के द्वारा भी की जाती है।

- अपनी प्रगति जानिए के उत्तर : –
  1. पूर्ण प्रतिस्थापक
  2. ब्याज
  3. निश्चित ब्याज की दर
  4. मुद्रा के भंडार
  5. गैर–ब्याज लागत
  6. पूर्ण प्रतियोगिताएं
  7. जनता और बैंको

(अभ्यास हेतू प्रश्न)

- लघु उत्तरीय प्रश्न :–
  1. उच्च शक्ति मुद्रा क्या है ?
  2. न्यूनतम आरक्षित अनुपात क्या है ?
  3. मुद्रा की पूर्ति का सिद्धांत किसे कहते है ?
  4. आंतरिक मुद्रा से क्या अभिप्राय है ?
  5. मुद्रा को बॉण्ड और नगदी में रखने से दो प्रकार की किन लागतो का व्याग करना पड़ता है ?
  6. मुद्रा के परिमाण सिद्धांत की परिकल्पनाएं बताओं ?
- दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :–
  1. मुद्रा की पूर्ति का सिद्धांत की रेखाचित्र सहित व्याख्या करें ?
  2. बॉमोल का क्रय–विक्रय संबधी मुद्रा का सिद्धांत की रेखाचित्र सहित विस्तारित किजिए ?
  3. आन्तरिक मुद्रा व बाहरी मुद्रा में अंतर स्पष्ट करें ?

(परम्परावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार मुद्रा की मांग)

- अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न : –
  1. मुद्रा .... के माध्यम का कार्य करते हैं ।
  2. परंपरावादी अर्थशास्त्री मुद्रा को केवल ....ही मानते थे ।
  3. मुद्रा को ऋणपत्रों तथा ....आदि के रूप में भी रखा जा सकता है ।
  4. केन्ज के अनुसार मुद्रा की मात्रा व ....में अप्रत्यक्ष संबंध होते हैं ।
  5. पूर्ण रोजगार के अंतर्गत उत्पादन की पूर्ति पूर्णत ....होती है ।
  6. यदि ब्याज की दर कम होगी तो ....को प्रोत्साहन मिलेगा ।
  7. घटते प्रतिफल के कारण ....बढ़ती है ।
  8. तरलता जाल की अवस्था में तरलता अधिमान वक्र पूर्णतः ....होता है ।
- अपनी प्रगति जानिए के उत्तर : –
  1. विनियम
  2. विनियम का माध्यम
  3. प्रतिभूतियों
  4. कीमत स्तर

5. मूल्य निरपेक्ष
6. निवेश
7. सीमान्त लागत
8. लोचशील

(अभ्यास हेतू प्रश्न)

- लघु उत्तरीय प्रश्न : –
  1. तरलता जाल क्या है ?
  2. प्रो० केन्ज द्वारा प्रतिपादित पुस्तक का क्या नाम है ?
  3. राजकोषीय नीति से आप क्या समझते है ?
  4. मौद्रिक संतुलन क्या है समझाए ?
- दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : –
  1. मौद्रिक तथा राजकोषीय नीति क्या है आई० एस० – एल० एम० वक्रों की लोचशीलता का रेखाचित्र के माध्यम से समझाए ?
  2. रोजगार के निर्धारण की विस्तारात्मक व्याख्या किजिए ?
  3. वस्तु बाजार तथा मुद्रा बाजार में संतुलन को रेखाचित्र द्वारा समझाए ?

Reference Readings

- Harris, Monetary Theory
- Rama Ghosh, Monetary Economics.
- William H. Branson, Macroeconomic Theory And Policy (3rd Ed.) Ch. 15
- Suraj B. Gupta, Monetary Economics.
- Thomas Mayer And James S. Duesenberry ; Money, Banking And economy.

इकाई – 2

2.0 परिचय
2.1 इकाई के उद्देश्य
2.2 वस्तु बाजार में संतुलन
2.3 I. S. वक्र का निकलना
2.4 I. S. वक्र का सरकना
2.5 मुद्रा बाजार में संतुलन
2.6 आय का आकर
2.7 सट्टा उदेश्य के लिए मुद्रा की मांग
2.8 मुद्रा की पूर्ति
2.9 I.S &L.M संतुलन का कुल मांग वक्र
2.10 मुद्रास्फीति
2.11 मांग प्रेरित मुद्रास्फीति
2.12 बेन्त हेंनसन का मांग मुद्रास्फीति सिद्धांत
2.13 मान्यताएं
2.14 आलोचनाएं
2.15 मुद्रास्फीति के प्रभाव तथा नियंत्रण
2.16 राजकोषीय उपाय
2.17 सारांश
2.18 अपनी प्रगति जांचि,
2.19 अपनी प्रगति जांचि, के उत्तर
2.20 अभ्यास हेतु प्रश्न
2.21 आप ये भी पढ़ सकते हैं।

परिचय :–

युद्ध के बाद के समय में संसार के लगभग सभी देशों के आर्थिक ढांचे को सबसे बुरी तरह प्रभावित करने वाला रोग स्फीति का रहा है। इस कारण यह वर्तमान अर्थशास्त्रियों, राजनेताओं और आम जनता में बहुत विवाद का स्त्रोत रहा है। ये विवाद स्फीति के विभिन्न पहलुओं के बारे में रहे है।

इकाई के उद्देश्य :–

1. मुद्रा स्फीति व उसके प्रभावों पर प्रकाश डालना।
2. मुद्रा स्फीति के बैन्त हैनसन सिद्धांत को समझना।

विस्तृत मॉडल और रोजगार का निर्धारण

विस्तृत मॉडल के माध्यम से पूर्ण रोजगार को प्राप्त किया जा सकता है। ब्याज की दर और मौद्रिक नीति का निवेश पर क्या प्रभाव पड़ता है। उसको सही रूप से नहीं पाया जा सकता। ब्याज की दर और मौद्रिक नीति अन्य तत्वों को प्रभावित करती है और इसके साथ–साथ संतुलित उत्पादन को भी प्रभावित करती है। उत्पादन के सिद्धांत और ब्याज की दर किए प्रकार से समन्वय स्थापित किया जा सकता है। वस्तु बाजार और साधन बाजार के माध्यम से अर्थव्यवस्था में रोजगार प्राप्त किया जा सकता है। बाजारों के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि वस्तु बाजार और साधन बाजार में किस प्रकार ब्याज की दर का निर्धारण किया जा सकता है और अर्थव्यवस्था में संतुलन स्थापित किया जा सकता है। परंपरावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार यह मान लिया गया है कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार का स्तर पाया जा सकता है। परंपरावादी अर्थशास्त्रियों तथा केन्ज के बीच किस प्रकार अर्थव्यवस्था में पूर्ण–रोजगार को प्राप्त किया जा सकता है परन्तु परम्परावादी अर्थशास्त्रियों और केन्ज के विचारों में विभिन्नता पाई जाती है और वस्तु बाजार और साधन बाजारों में किस प्रकार संतुलन स्थापित होगा। इसी प्रकार हिक्स और हैन्सन ने IS-LM वक्रों की सहायता से वस्तु बाजार और साधन बाजारों में संतुलन स्थापित किया। वस्तु बाजार और साधन बाजारों में संतुलन कैसे स्थापित होगा।यदि राष्ट्रीय आय में किसी प्रकार के उच्चावचन या चक्रीय परिवर्तन ना हो तो अर्थव्यवस्था में संतुलन स्थापित किया जा सकता है। परम्परावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार आय और निवेश ब्याज की दर पर निर्भर करते हैं। ब्याज की दर में उतार चढाव से दोनों में समानता बनी रहती है। कुल योग (C+1) और कुल पूर्ति हमेंशा (y) बराबर होते है और संतुलन की अव्यवस्था में कुल योग (C+1) व कुल पूर्ति (C+S) परस्पर बराबर होते है। (C+1) = (C+S) और समय के साथ–साथ धीरे उपयोग का स्तर कम हो जाता है और उपयोग का स्तर कम होने के कारण 1=S होगा। केन्ज के अनुसार बचत आय पर निर्भर करती है जैसे–जैसे आय बढ़ती जाती है तो बचत का स्तर भी बढ़ता चला जाता है। अन्य बातों के समान रहने पर निवेश ब्याज की दर पर निर्भर करता है परन्तु परम्परावादी अर्थशास्त्रियों और केन्ज के विचारों में पूर्ण रोजगार को प्राप्त करने के बारे में विभिन्नता थी। केन्ज के अनुसार मुद्रा की मांग मुद्रा की पूर्ति से निर्धारित होती है। यदि ब्याज की दर में परिवर्तन होगा क्योंकि बचत आय पर निर्भर करती है। S(Y) मान लिया जाए बचत और निवेश दोनों परिवर्तनशील है तो आय में परिवर्तन के कारण बचत और ब्याज की दर में भी परिवर्तन हो जाते हैं। यदि आय में कमी आती है तो बचत भी कम हो जाएगी। इसको हम एक ग्राफ के माध्यम से भी प्रदर्शित कर सकते हैं।

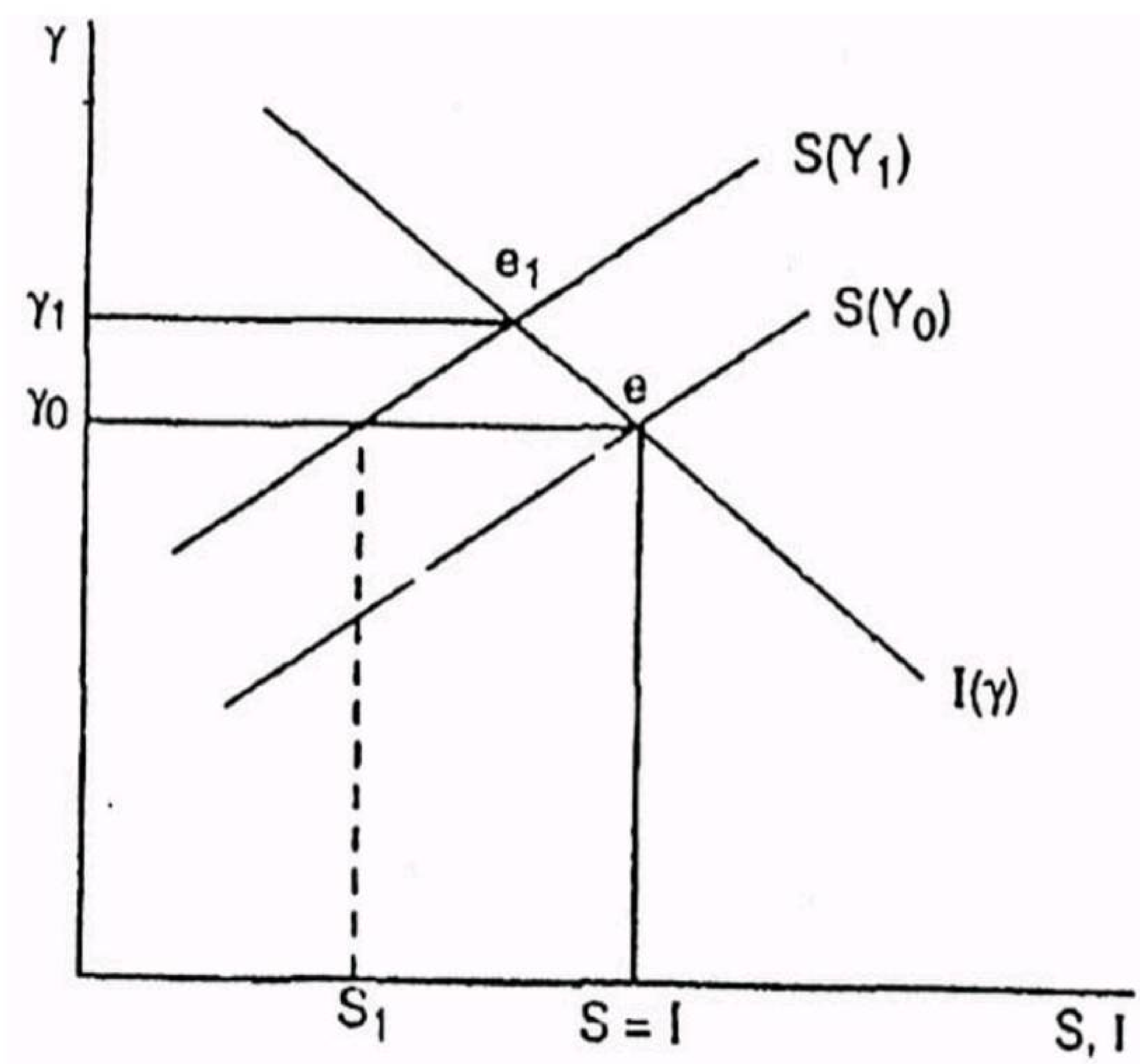

चित्र नं. 12

चित्र नं0 12 में दर्शाया गया है कि Saving & Investment चित्र में 0x अक्ष पर बचत और निवेश को लिया गया है और oy अक्ष पर आय को लिया गया है। बचत और निवेश दोनों में ब्याज

लीचशील है और आय में परिवर्तन के कारणों जैसे आय y_0 से गिरकर y_1 होती है और बचत वक्र $S(y_0)$ से सरककर $S(y_1)$ बन जाएगा।

क्योंकि अब पहले वाले ब्याज–दरों पर कम बचत हो जाएगी। R_0 पर बचत गिरकर S_1 रह जाती है। इसी प्रकार R_0 और S और I के मध्य संतुलन नहीं रह सकता। $S(y_1)$ और I के मध्यम संतुलन के लिए π से बढ़कर π_2 प्राप्त करना होगा परन्तु π क्यों बढ़ेगा क्योंकि यह तो मुद्रा की मांग और पूर्ति पर भी निर्भर करती है। वास्तविक आय स्तर के बिना बचत वक्र का सही ज्ञान नहीं हो सकता परन्तु आय का स्तर ज्ञान नहीं हो सकता। जब तक निवेश के स्तर का ज्ञात नहीं होता। क्लासिकल अर्थशास्त्रियों के अनुसार π निर्भर करता है S और I पर अर्थात बचत और निवेश पर इसी प्रकार चक्रीय स्तर में फंस जाते है और आय का स्तर का निर्धारण नहीं कर सकते हैं। केन्ज के अनुसार आय का स्तर निर्धारण करना अनिर्धारणीय है क्योंकि केन्ज के अनुसार आय के स्तर का निर्धारण वहां होता है। जहां कुल योग (C+1+G) कुल उत्पादन व पूर्ति Y के बराबर हो। अर्थात Y= C+1+G अर्थात आय के बढ़ने के साथ–साथ उपयोग में वृद्धि होती है। निवेश बढ़ता है और सार्वजनिक व्यय में भी वृद्धि होती है। इसको हम एक चित्र के माध्यम से प्रदर्शित कर सकते है परन्तु Y_0 पर निवेश का स्तर स्थिर माना गया है क्योंकि यह किसी बाह्र निर्धारित ब्याज की दर पर भी निर्भर करता है क्योंकि π स्थिर रहता है और मुद्रा बाजार में योग और पूर्ति की शक्तियों के द्वारा निर्धारण किया जाएगा और इन शक्तियों में परिवर्तन आने से π बदल जाता है। मान लीजिए की मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि हो जाती है और मुद्रा में वृद्धि के कारण π_1 गिरा दिया जाएगा और π में आई गिरावट के कारण निवेश I से बढ़कर I, हो जाएगा।

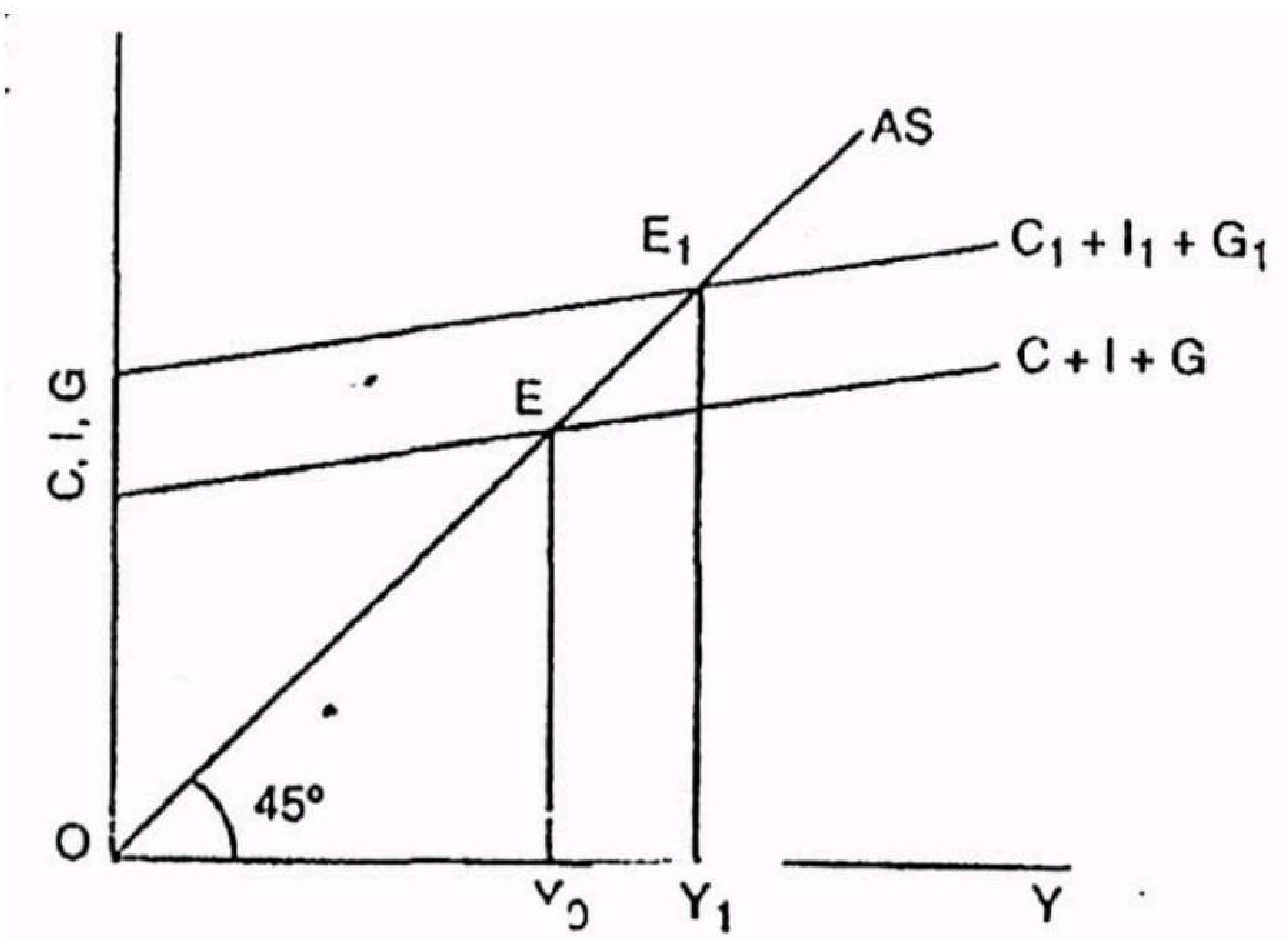

चित्र नं. 13

चित्र नं0 13 में दर्शाया गया है कि आय बढ़ने के साथ–साथ क्रय–विक्रय के लिए मुद्रा की मांग बढ़ जाती है और ब्याज की दर को बढ़ा सकती है। अतः आय और ब्याज की दर में एक घनिष्ठ सम्बन्ध है। केन्ज के मॉडल के अनुसार ब्याज की दर ज्ञात किये बिना निवेश का स्तर ज्ञात नहीं किया जा सकता। वस्तु बाजार में संतुलित आय का निर्धारण ब्याज की दर पर भी निर्भर करता है और मुद्रा बाजार में π का निर्धारण आय–स्तर पर निर्भर करता है। बिना ब्याज की दर के निर्धारण के आय के स्तर का निर्धारण नहीं किया जा सकता। इसलिए आय का स्तर और ब्याज की दर का निर्धारण साथ–साथ किया जा सकता है। बिना आय निर्धारित किये बिना ब्याज की दर का निधार्रण नहीं किया जा सकता।

वस्तु बाजार में संतुलन

Equilism of the Product Market वस्तु बाजार में संतुलन तभी रह सकता है। जब चक्रीय प्रवाह जारी रहता है। जो कुल उत्पादन (Y) कुल मांग व्यय (C+1+G) के बराबर रहता है। Y = (C+1+G) अर्थात संतुलित आय के स्तर पर कुल मांग या व्यय (S+T) इंजैक्शन (I+G) एक दूसरे के समान होना अनिवार्य है। S+T = I+G परन्तु संतुलन आय का निर्धारण साथ–साथ ही हो सकता है। केन्ज का समीकरण इस प्रकार प्रदशित किया जा सकता है। केन्ज का समीकरणः Y= C+1+G : C[y-t(y)+1(r) + G उत्पाद बाजार संतुलनः Y= C+1+G : C[y-t(y)+1(r) + G केन्ज का संतुलन आय का निर्धारिण करते समय T को स्थिर माना गया है परन्तु वस्तु बाजार संतुलन में इस बात पर जोर दिया गया है कि I में ये परिवर्तन हो सकता है। यदि r में परिवर्तन होता है। वस्तु बाजार में संतुलन (S+T) = f (y) और {I (r) + (G) एक दूसरे के बराबर है अर्थात एक दूसरे के बराबर होना अनिवार्य है। इसके एक चित्र के माध्यम से दर्शाया जा सकता है यदि वास्तविक तत्व S+T और I+G एक दूसरे के बराबर नहीं। यदि आय Y संतुलन पर नहीं हो सकता। ऐसी परिस्थितियों में अधिक स्वयं क्रियान्वित होकर आय का संतुलन कर देती है। इसलिए Y_0 आय का संतुलन स्तर कहा जाएगा।

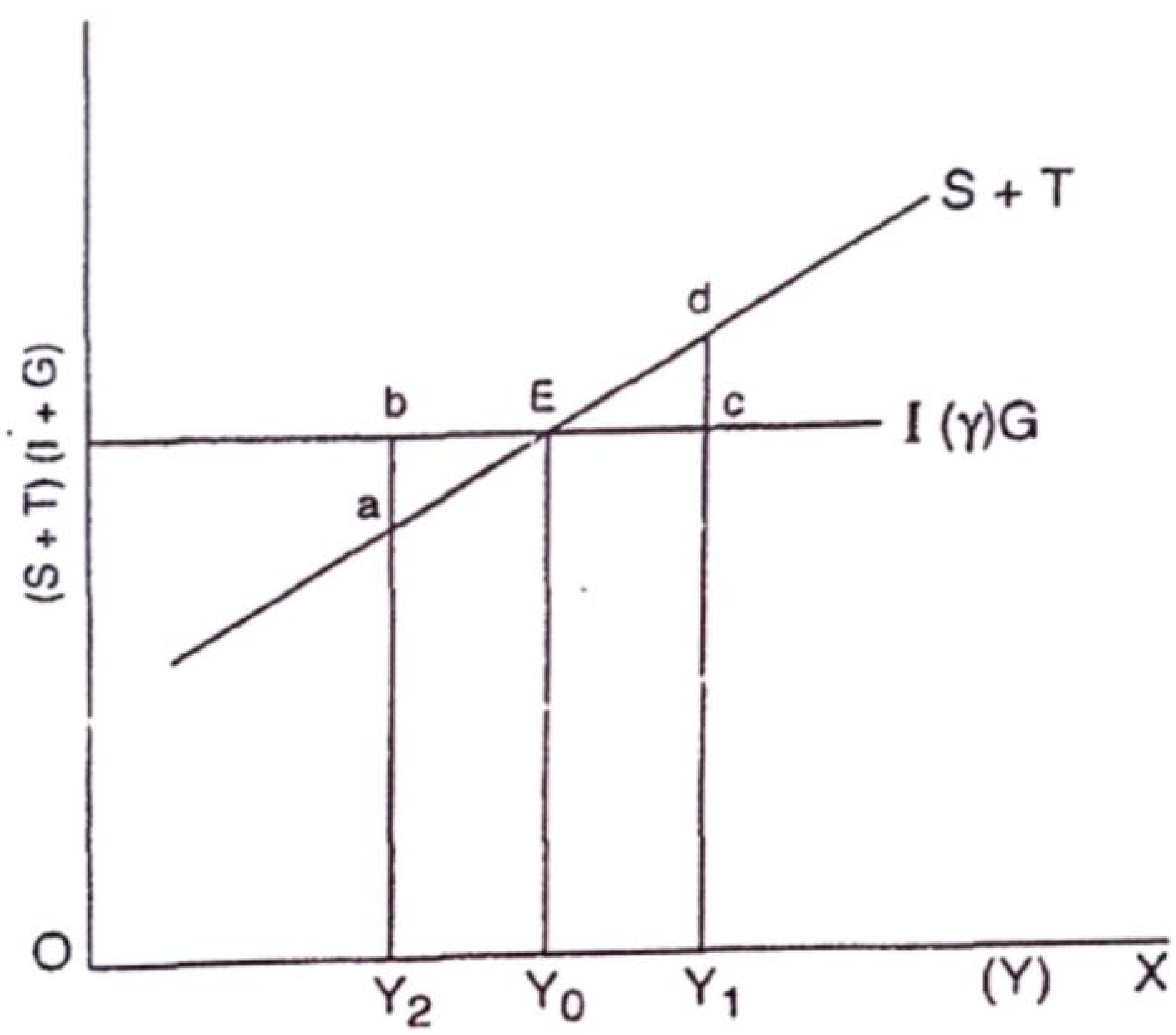

चित्र नं. 14

चित्र नं0 14 में दर्शाया गया है परन्तु Y पर S+T (स्त्राव) I (r) + G Injection से अधिक है। GNP (Gross National Product) yAnd D उत्पादन का भाग है। जो उपभोक्ताओं के द्वारा खरीदा नहीं गया है। क्योंकि उपभोक्ता तो केवल उपयोग पदार्थ ही खरीद सकते हैं और उत्पादन का जो भाग नहीं खरीदा गया। Y-C = S+T, जो चित्र में Y है परन्तु बाजार में केवल Y_1 {I(r) + G} के समान है। इसलिए CD उत्पादन का वह भाग है। जो बिक नहीं सका और स्टाक में अनैच्छिक रूप से CD के बराबर बढ़ा देगा। इसके विपरित स्थिति में Ya आय का स्तर उत्पन्न होती है। जहां माग पूर्ति से।b अधिक है। जो स्टाक को कम करके पूरी की जा सकती है। परन्तु स्टाक में यहां गिरावट अनैच्छिक है। इसे ऐच्छिक स्तर पर लाने के लिए उत्पादन की मांग बढेगी और बढ़ती रहेगी। जब तक Y^0 स्तर पर नहीं कर सकती है परन्तु 1+G वक्र स्थिर नहीं रहता क्योंकि I ब्याज दर (r) पर निर्भर करता है। I = F(r) ब्याज दर निवेश के लिए लागत है। चाहे निवेश उधार लेकर किया गया है या अपने आन्तरिक फण्ड़ लगा कर किया गया हो।

मान लीजिए यदि r में गिरावट आती है और r के गिरने से उत्पादकों के लाभ बढ़ते हैं और निवेश बढ़ा देते हैं। r बढ़ने से I गिर जाता है अर्थात r में परिवर्तन से i की मात्रा परिवर्तित होती है और I परिवर्तित होने से r की मात्रा परिवर्तित होती है और r के स्तर में परिवर्तन आता है। इसलिए वस्तु बाजार में संतुलन में संतुलित आय का समीकरण इस प्रकार है।

Y= C[Y-T (y)]+1(r) + G r में परिवर्तन से y कैसे परिवर्तित होती है। इसको एक चित्र के माध्यम से प्रकट r में परिवर्तन से y कैसे परिवर्तित होती है।

यह चित्र 15 में दर्शाया गया है। r_0 ब्याज दर $I(r_0)$+G वक्र S+T फलन को E बिन्दु पर काटता है। जिससे y_0 सन्तुलित आय का स्तर है परन्तु r बढ़कर r_1 होने के कारण I गिरकर I, (r,) + G को प्रदर्शित करता है। जो S+T फलन को E बिन्दु पर काटकर y_1 आय का स्तर निर्धारित करता है। इसी प्रकार r बढ़ने से आय (y) गिर जाती है।

चित्र नं0 15 में दर्शाया गया है कि अतः स्पष्ट है कि वस्तु बाजार में प्रत्येक r पर भिन्न–भिन्न संतुलन आय का स्तर निर्धारित होता है। जिस पर S+T और 1+G एक दूसरे के बराबर होते हैं। जैसे कि चित्र नं. 15 r_0 पर y_0 आय स्तर का r_1 और y_1 आय का स्तर निर्धारित होता है। r और y के संयोगों से जिन पर S+T = 1+G होता है।

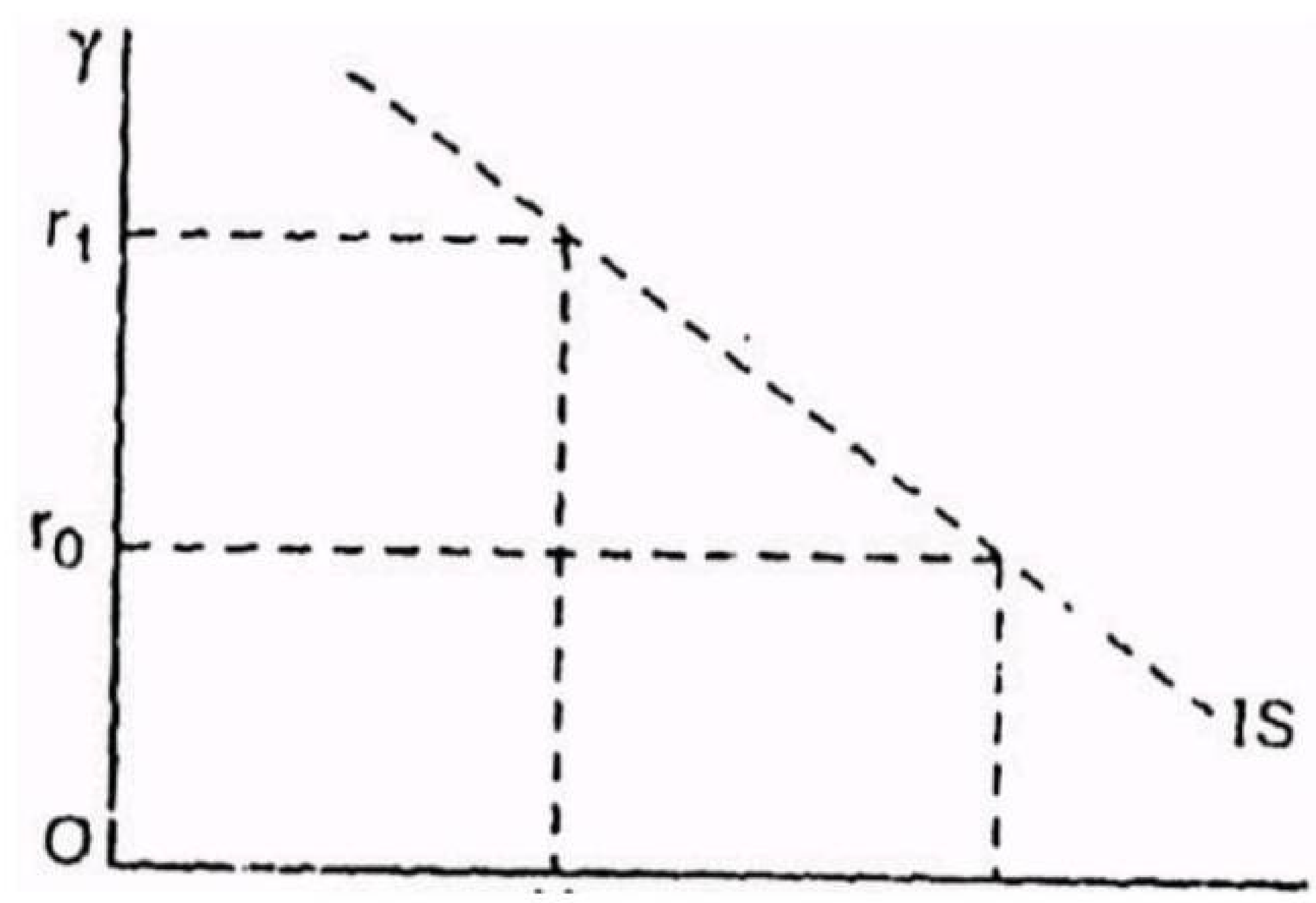

चित्र नं. 15

IS वक्र r और y को ऐसे संयोगों को प्रकट करता है, S+T = I+G होते है। इसका अर्थ है कि वस्तु, बाजार और साधन बाजार में अनेक संयोगों के कारण सन्तुलन पाया जाता है और इन सन्तुलन को LM वक्र के द्वारा भी प्रकट किया जा सकता है। जिसकी व्याख्या LM वक्र की सहायता की जा सकती है। जिसकी व्याख्या IS वक्र के बाद की गई। चित्र 16 के उपरी भाग में ब्याज की दर (r) और आय (y) के संयोगों को प्रकट करता है परन्तु उपरी दायें भाग में r और 1+G का फलन चित्र नं. 16 दर्शाया गया है। जहां G स्थिर है और नीचे के भाग में 1+G तथा S+T के मध्य समानता प्रकट करने के लिए 45^0 डिग्री की रेखा खीचीं गई है। जिस पर 1+G = S+T है। नीचे के भाग में S+T को Y का बढ़ता फलन दर्शाया गया है। वस्तु बाजार में ब्याज की दर (r) बाहर से मुद्रा बाजार निर्धारित होती है। इसलिए वस्तु बाजार में निश्चिता के लिए r की कल्पना की गई है तथा जांच करनी होगी कि उस आय का सन्तुलित जांच का स्तर क्या है। मान लीजिए कि ब्याज की दर r_0 है। सरकारी व्यय स्थिर है। इस पर ब्याज दर का कोई प्रभाव नहीं पड़ता जैसा कि ग्राफ के माध्यम से स्पष्ट है। r_0 ब्याज की दर (1+(i) व्यय निर्धारित करता है। वह कौन सा आय का स्वर होगा। (1+(i) = (S+T) है। Y_0 सन्तुलित आय का स्तर है। सन्तुलित आय का स्तर ब्याज दर से सम्बन्धित है। इसी प्रकार r_0 तथा i_a ऐसा संयोग है।

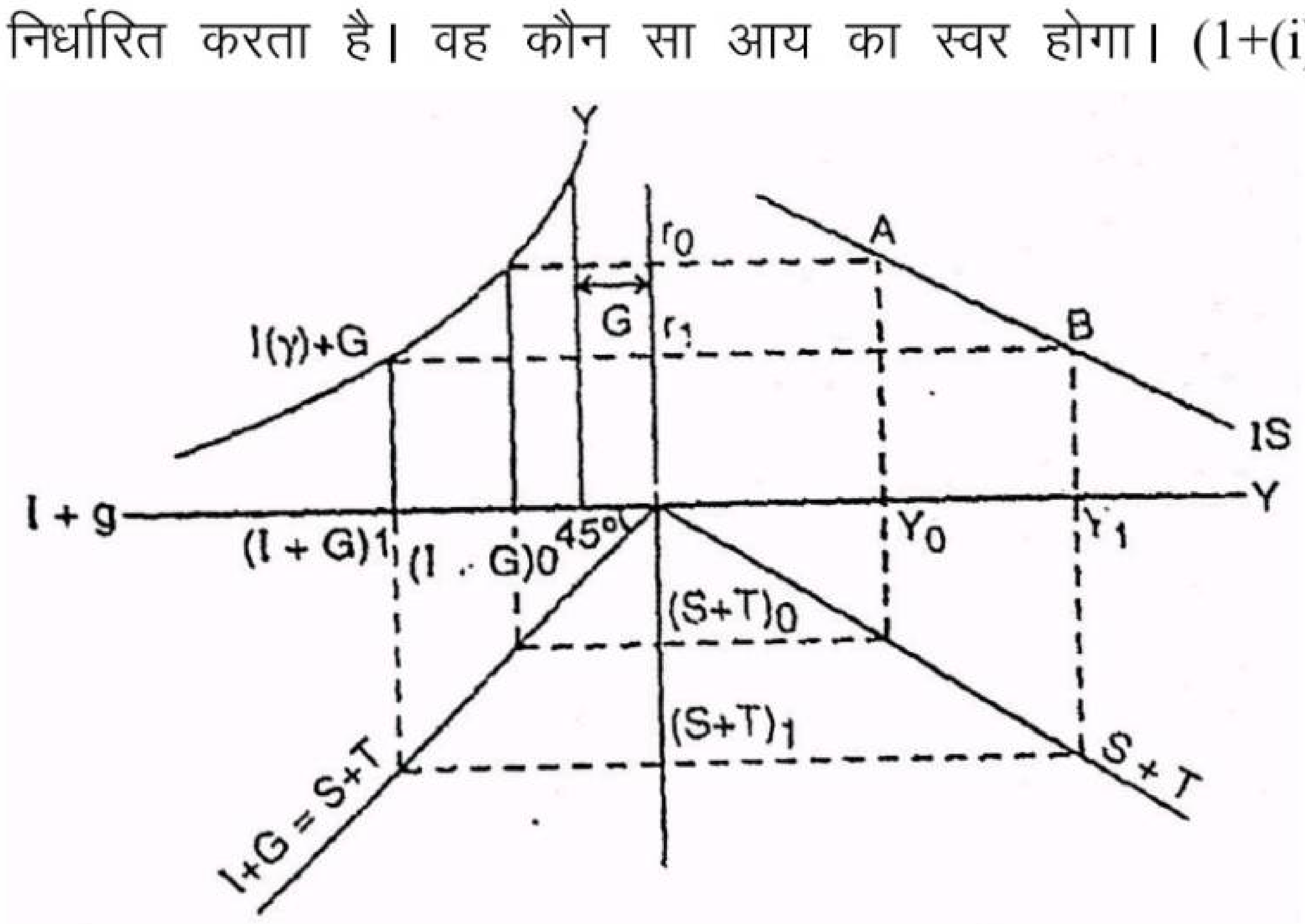

चित्र नं. 16

चित्र नं0–16 में दर्शाया गया है कि यदि ब्याज की दर गिरकर r_1 हो जाती है तो कुल व्यय बढ़कर (1+(i) के साधन है। अतः निवेश के बढ़ने के कारण गुणक के द्वारा आय बढ़ेगी और बढ़ती रहेगी। जब तक S+T बढ़कर 1+G के समान नहीं हो जाता। आय का स्तर वहां पर होगा। जिस पर (1+G) = (S+T) है। इसका अर्थ होता है कि र Y_1 संतुलित आय है। इसका सम्बन्ध ब्याज की r_1 दर से है। r_1 और Y_1 के

मिलाने से B बिन्दु का संयोग प्राप्त होता है। जिस पर (S+T)= (1+G) है। A और B बिन्दु को मिलाने से जो रेखा प्राप्त होगी उसे IS वक्र कहते है।

IS वक्र जिन तत्वों पर निर्भर करता है। सरकारनी व्यय निवेश व्यय (i) तथा बचत प्रवृति (S) कर की दर (t) यदि इनमें से किसी एक या अधिक में परिवर्तन कर दिया जाये तो IS वक्र का निवर्तन या अपना स्थान चित्र नं0–16 में दर्शाया गया है कि परिवर्तित कर देता है। माना की उद्यमियों की आशाओं में परिवर्तन के कारण उद्यमी पहले से लाभ कमाने की इच्छा रखते है। इसी कारण निवेश उपर की ओर खिसेगा। निवेश फलन उपर की ओर सरकने का IS वक्र पर पड़ने वाला प्रभाव निम्न ग्राफ की सहायता से दर्शाया जा सकता है।

व्यय फलन (1(r)+G) से बढ़कर (1(r) +G बन गया है। r_0 पर निवेश बढने के कारण 1+G बढ़कर $(1+G)_0$ से अधिक हो जाता है। इसी प्रकार 1+G के बराबर बढ़ा हुआ S+T अधिक आय y_{1r} से ही सम्भव होता है। इसी प्रकार y_{1r} तथा r_0 के संयोग से। बिन्दु प्राप्त होता है। जिस पर 1+G S+T है परन्तु जब ब्याज दर r होती है तो निवेश की मात्रा बढ़कर 1+G को अधिक बढ़ाकर $(1+G)_2$ के बराबर कर देती है। निवेश के बढ़ने के कारण आय बढ़ती है तथा बढ़कर y_{iii} बन जाती है। (1+G)ir के बराबर S+T बढ़ी हुई आय y_{iii} पर ही सम्भव है। इसी प्रकार मिलाने से नई वक्र IS प्राप्त होता है। जो IS_0 से उपर स्थापित है। इसी प्रकार निवेश में वृद्धि होने पर IS वक्र उपर की ओर सरक जाती है। इसी प्रकार (i) के बढ़ने या S+T के कम होने से IS वक्र उपर दाई ओर सरकता है। LM के बाद ही माध्यम से मुद्रा बाजार में संतुलन है।

मुद्रा बाजार में संतुलन

IS वक्र r और y के अनेक ऐसे संयोग प्रकट करता है। जिन पर वस्तु बाजार संतुलित हो सकता है परन्तु वास्तव में अर्थव्यवस्था r और y के कौन से संयोग प्रकट करता है। मुद्रा बाजार में संतुलन LM वक्र के द्वारा दर्शाया जा सकता है। मुद्रा बाजार में सन्तुलन बनाये रखने के लिए मुद्रा की मांग और मुद्रा की पूर्ति बराबर होनी चाहिए। मुद्रा की मांग केन्ज के अनुसार तीन उद्देश्यों से की जा सकती है।

1. लेन–देन उद्देश्य या क्रय–विक्रय के लिए मुद्रा की मांग की जा सकती है।
2. Demand for Money सावधानी उदेश्य के लिए
3. सट्टा उद्देश्य के लिए

1. क्रय–विक्रय उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग मुद्रा की मांग क्रय–विक्रय उद्देश्य के लिए की जा सकती है अर्थात हम अपने आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मुद्रा की मांग करते है। जैसे खाद्य पदार्थ के लिए जीवन निर्वाह की वस्तुओं के लिए जो मांग की जाती है, हमने उनका भुगतान मुद्रा में करना पड़ता है। सावधानी उद्देश्य के लिए भी मुद्रा की मांग की जाती है। मुद्रा की मांग दो बातों पर निर्भर करती है।

2. **आय का आकार** : आय प्राप्ति के मध्य समय–अन्तराल अधिक आय होने पर उपयोग पर अधिक व्यय किया जाता है। आय का आकार अर्थात कम आय होने पर उपयोग पर खर्च कम किया जाता है।

इसी प्रकार क्रय–विक्रय सम्बंधी मुद्रा की मांग (M+) और आय (y) पर निर्भर करती है।

M=K (y) : 1>K >0

R = Ratio of Income kept in Cash from the for transaction motive

चित्र नं0 17 में दर्शाया गया है कि मुद्रा की मांग आय प्राप्ति के अन्तराल पर निर्भर करती है। यदि आय का अन्तराल ज्यादा हो तो क्रय–विक्रय के लिए मुद्रा की मांग अधिक की जाएगी। आय प्राप्ति का समय अन्तराल कम होने पर क्रय–विक्रय सम्बन्धी मुद्रा की मांग कम की जाएगी।

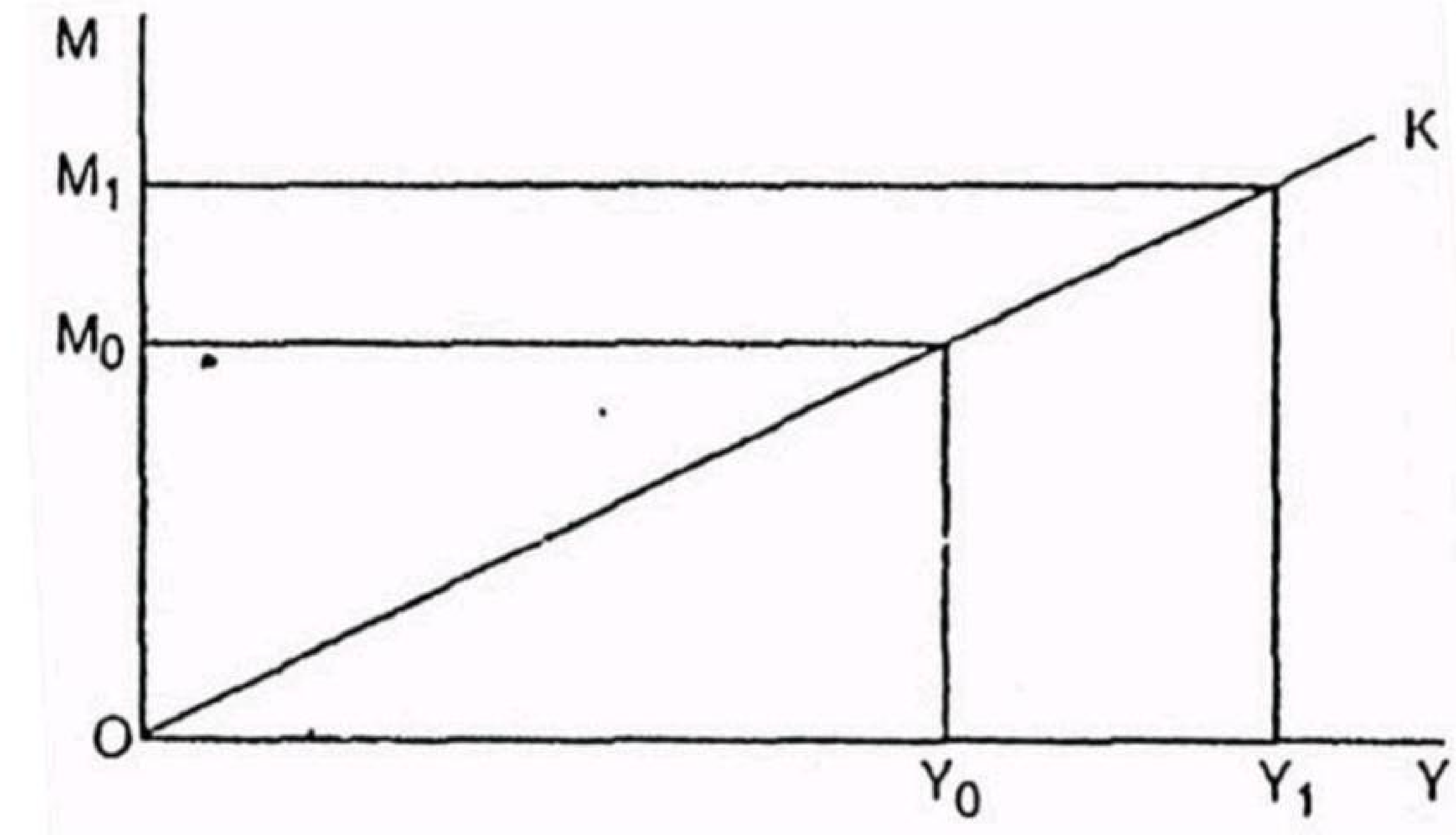

चित्र नं. 17

3. सट्टा उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग– मुद्रा योग सट्टा उद्देश्य के लिए भी की जाती है। ऋण–पत्रों पर ब्याज की दरों में उतार–चढ़ाव आता रहता है और उतार चढ़ाव के कारण सट्ट उद्देश्य के लिए मुद्रा की योग की जाती है और अगर नकदी हम मुद्रा अपने पास रखनी है तो ब्याज की प्राप्ति नहीं होती और नकदी मुद्रा को हम यदि (Brand & Share) ब्राण्ड और शेयर ये लगाते है तो ब्याज की प्राप्ति होती है और ब्याज की दर जितनी अधिक होगी और मुद्रा की उतनी ही मांग कम की जाएगी और अगर ब्याज की दर जितनी कम होगी मुद्रा की उतनी ही मांग की जाएगी। लेकिन ब्याज की दर कभी भी शून्य नहीं होती। शून्य ब्याज की दर से कभी भी लाल नहीं कमाया जा सकता। सट्टा उद्देश्य के लिए नकदी मुद्रा की मांग असीमित या पूर्ण लोचशील हो जाती है और मुद्रा मांग वक्र के इस भाग को तरलता–जाल कहा जाता है। इसलिए सट्टा उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग और ब्याज की दर में विपरित सम्बन्ध होता है।

Ms = L(r) ; L<0 : Means Negative Relationship

Ma : Money Demanded for speculative Motive

चित्र नं0–18 में दर्शाया गया है कि Ms और r में विपरित सम्बन्ध पाया जाता है। r_1 वक्र Ms की मांग M_0 है परन्तु जब यह गिरकर y_{11} होती है तो Ms के लिए मुद्रा की मांग गिरकर M हो जाती है। क्योंकि बॉण्ड की कीमत और मुदा के मध्य विपरित सम्बन्ध होता है। इसलिए r गिरने पर बॉण्ड की कीमत बढ़ जाती है तथा सटोरिये बॉण्ड बेचते हैं या अधिक नकदी अपने पास रखते हैं। r_0 और Ms की मांग पूर्णतः लोचशील बन जाती है। जिसे केन्ज ने तरलता जाल सिद्धांत कहा जाता है।

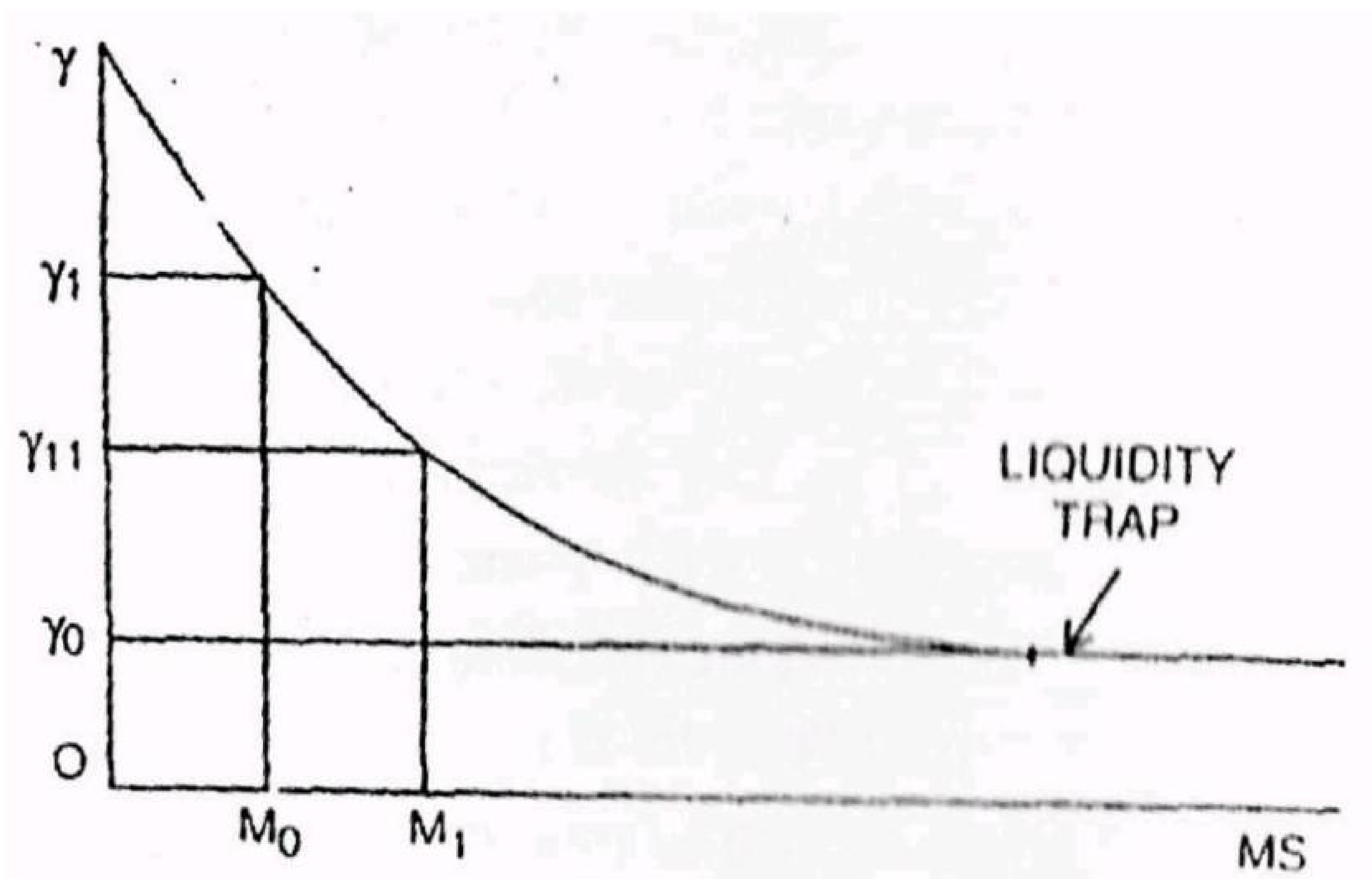

Money Supply
चित्र नं. 18

मुद्रा की कुल मांग (Total Demand for Money) मुद्रा की मांग (M_0 M_1) बन जाते हैं। मुद्रा की मांग के दोनों भागों को जमा करके कुल मांग प्राप्त की जा सकती है। $M^d = K(y) + L(r)$ मुद्रा की मांग क्रय विक्रय सम्बंधी भी की जा सकती है। मुद्रा की मांग r से और सट्टा उद्देश्य सम्बन्धी मांग y से भी प्रभावित होती है। यदि r बहुत ज्यादा होती है तो लोग अपनी क्रय–विक्रय सम्बन्धी मांग कम करके ब्याज कमाने के लिए कुछ नकदी बॉण्ड में लगा देगें। इसलिए मुद्रा की मांग y और r का फलन है।

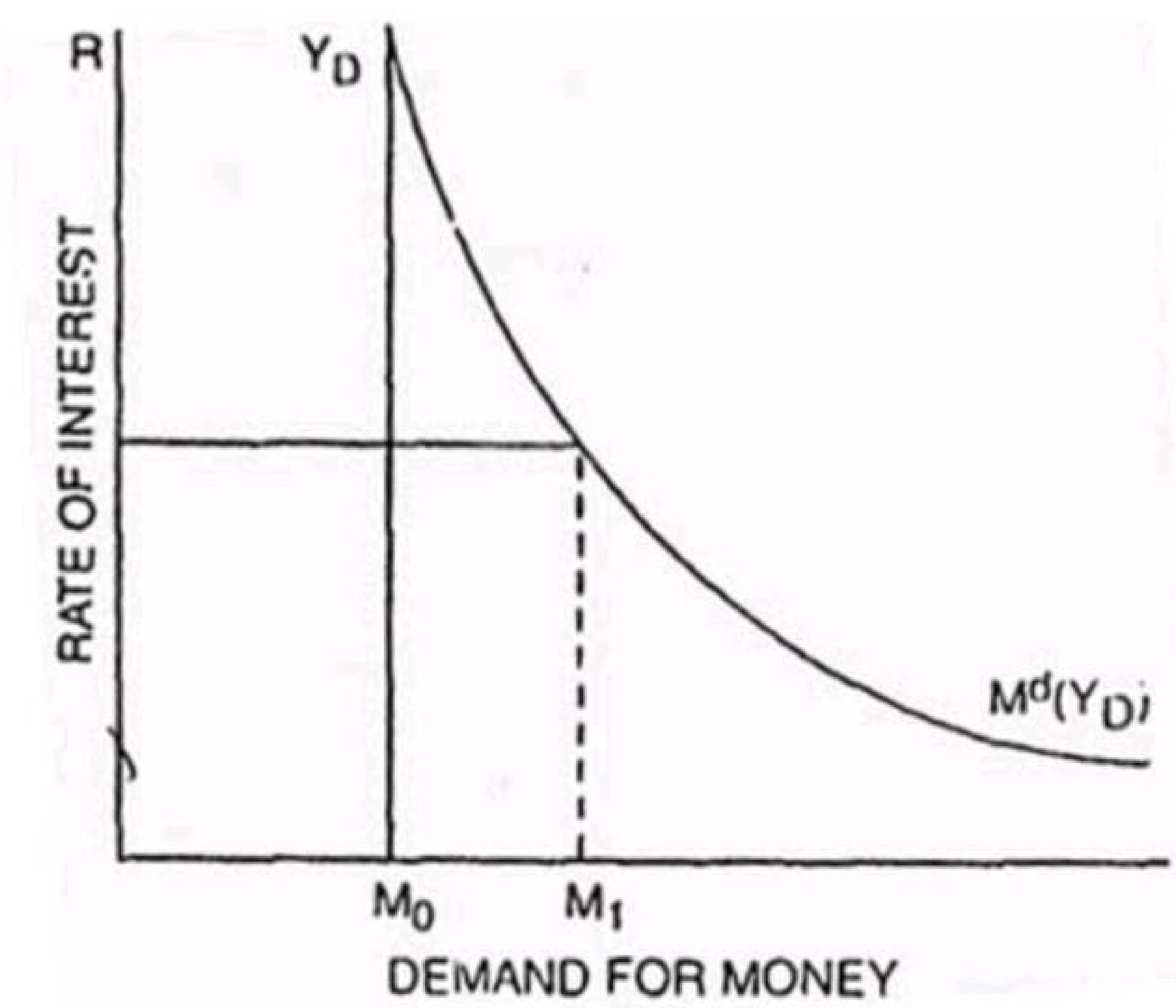

चित्र नं. 19

$M^d = F(y_1\ r)$ विशलेषण के लिए मुद्रा की मांग दो भागों में की जाती है। मुद्रा की मांग जमा करके कुल मुद्रा की मांग की जाती है।

चित्र नं0–19 में दर्शाया गया है कि मुद्रा की मांग दो भागों में विभाजित हो जाती है। मुद्रा की मांग जमा करके चित्र की सहायता से कुल मुद्रा की मांग की जा सकती है। क्रय–विक्रय की मांग वक्र सट्टा उद्देश्य के लिए कि गई मांग वक्र का समस्तरीय जोड़ है। कुल मांग वक्र उपर से नीचे झुकी हुई है।सामान्यतः M की मांग ब्याज की दर के प्रति बेलोच होती है। अतः विभिन्न ब्याज दरों पर M जो चित्र में M_0 है तथा आय y_0 स्तर से सम्बन्धित है। M_0 से M_1 की मांग जो r पर निर्भर करती है। M_1-F (r) जमा करके मुद्रा की कुल मांग (M^1) प्राप्त होती है। r_0 पर M क्रय–विक्रय सम्बन्धी मुद्रा की मांग है। M_0 और M_1 सट्टा उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग है। इसी प्रकार r_0 और y_0 पर मुद्रा की कुल मांग M_1 हुई है। निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है:–

$$M^d = K(y)+L(r)$$

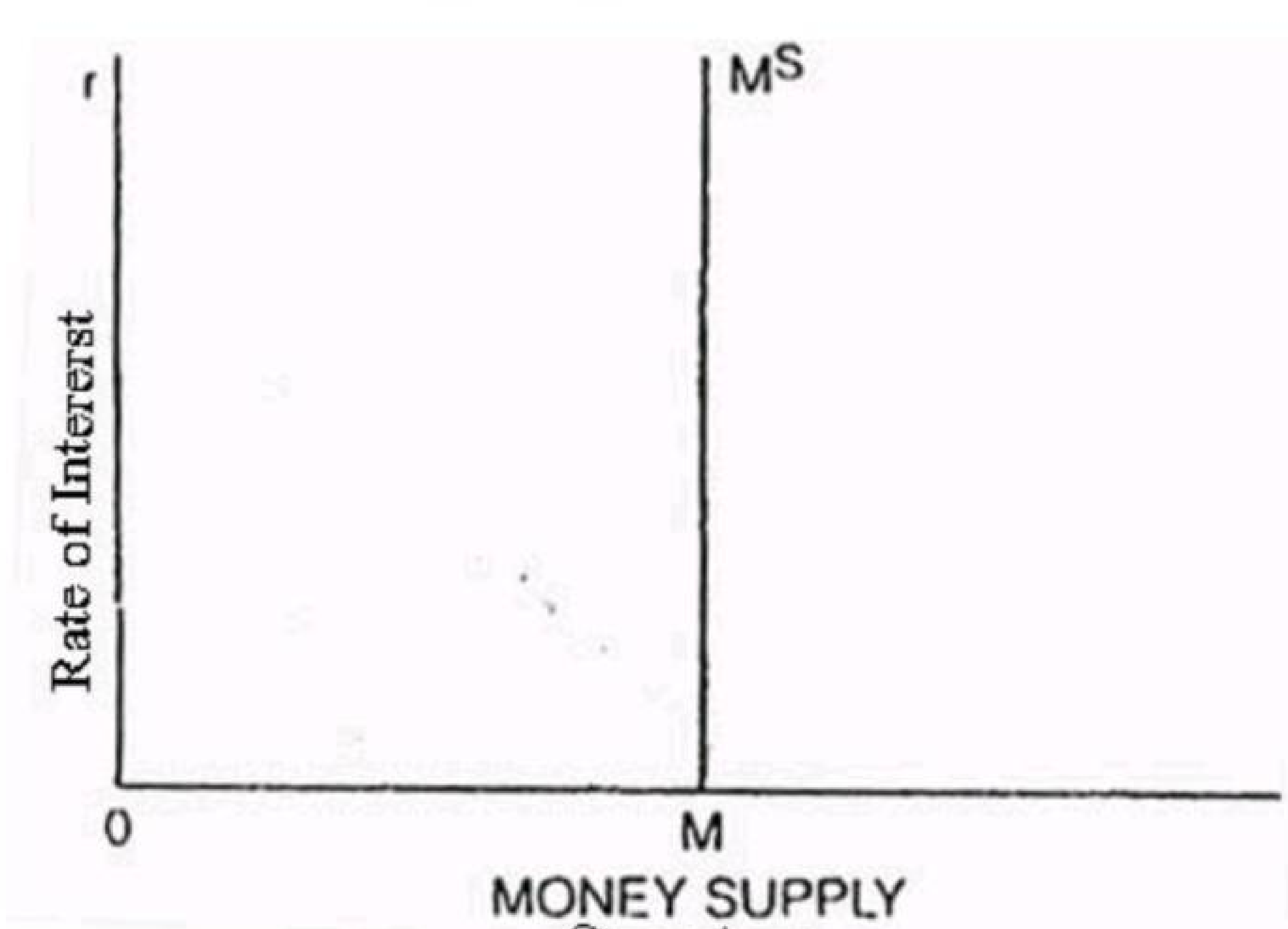

चित्र नं. 20

(Supply of Money)

मुद्रा की पूर्ति मौद्रिक अधिकारियों के द्वारा और केन्द्रीय बैंक के द्वारा जारी की जा सकती है परन्तु ब्याज व आय स्तर में परिवर्तन से यह नहीं बदलती है। जैसा कि चित्र नं0 21 में मुद्रा की पूर्ति M को स्थिर माना गया है।

चित्र नं0–20 में दर्शाया गया है कि मुद्रा की पूर्ति (M^s) को स्थिर माना गया है।

ब्याज की दर का निर्धारण

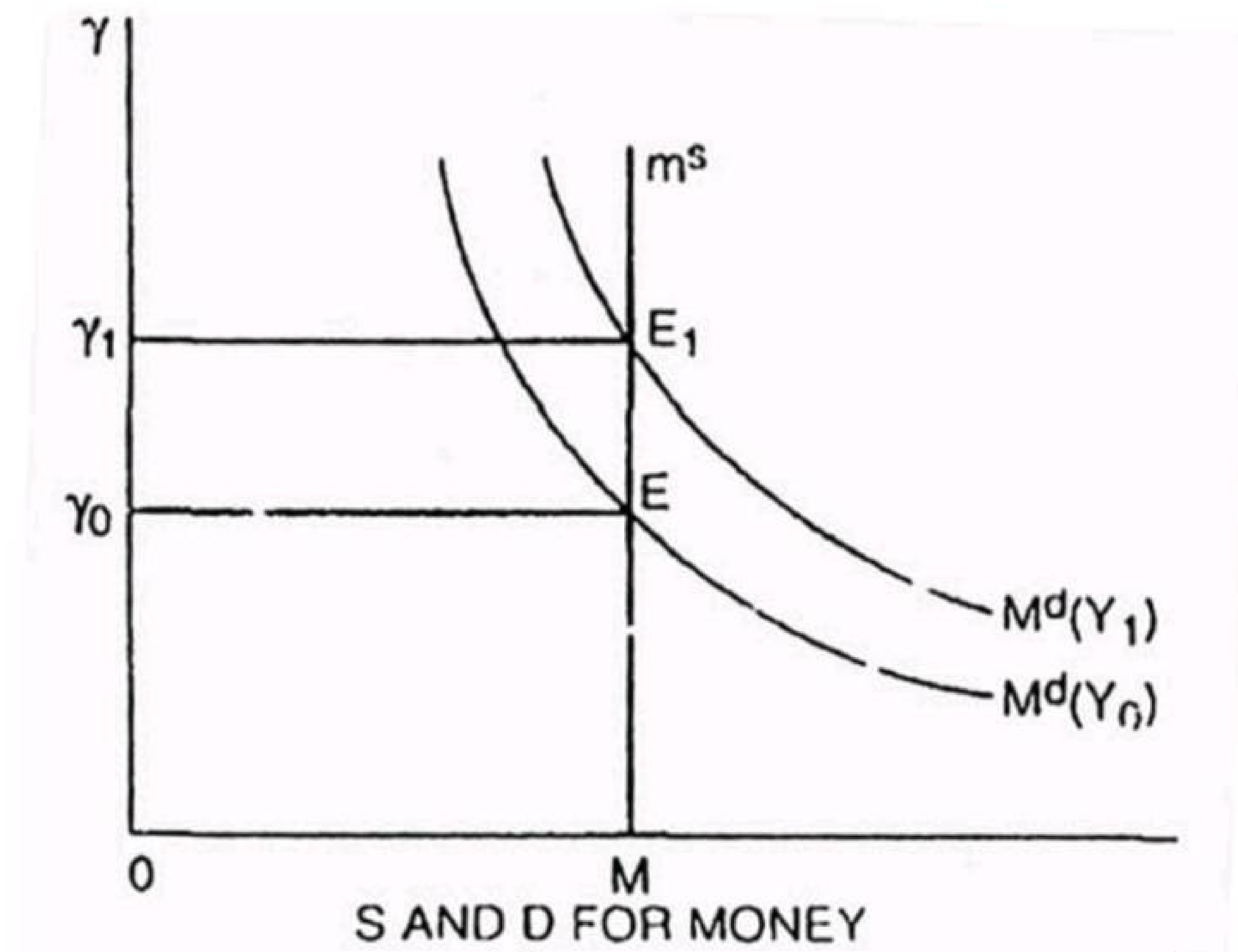

चित्र नं. 21

चित्र नं0–21 में दर्शाया गया है कि मुद्रा की मांग व पूर्ति वक्र प्राप्त करने के पश्चात r का निर्धारण किया जा सकता है। दोनों वक्र एक दूसरों को काटते हैं। अर्थात $M^P = M^S$ or $M^s = K(y) + L(r)$; $K > 0$, $L < 0$ जैसा कि चित्र नं0 22 में स्पष्ट किया गया है कि मांग वक्र $M^d(y0)$ वक्र प्राप्त होता है। यदि पूर्ति वक्र को E काटकर r_0 ब्याज दर निर्धारित करता है। y_1 आय के उच्चे स्तर पर $M^d(y1)$ मुद्रा का मांग वक्र है। जो पूर्ति वक्र पर E, काटकर r_1 ब्याज दर निर्धारित करता है। इसका अर्थ है कि मुद्रा बाजार में सन्तुलन r और y विभिन्न संयोगों पर हो सकता है। जहां पर $M^d = M^s$ है। इन सभी संयोगों को जोड़ने से जो वक्र प्राप्त होता है। वह LM वक्र प्राप्त होता है। LM वक्र का निकलना – LM वक्र वह वक्र है। जिस पर पड़ने वाले r और y के विभिन्न संयोग मुद्रा की मांग व मुद्रा की पूर्ति में संतुलन स्थापित किया जा सकता है। LM वक्र निकालने के लिए चार अन्तरीय रेखाचित्र का प्रयोग किया जाता है। जिसको चित्र नं0 22 की सहायता से दर्शाया जा सकता है।

भाग (क) ये दर्शाया गया है कि विभिन्न आय स्तरों पर मुद्रा की मांग कितनी की जा सकती है। यह K(y) के द्वारा दर्शाया जाता है और भाग ख में मुद्रा की कुल पूर्ति M में दर्शाया गया है और मुद्रा पूर्ति का जो P भाग क्रय–विक्रय के लिए जो मांग की जाती है। उसके बाद जो भाग बचता है। वह सट्टा उद्देश्य के लिए प्रवाहित होकर तरलता अधिमान वक्र $[M_d]$ $Md = f(r)$ के साथ मिलकर r का निर्धारण भाग घ प्रकट किया गया है। y और r के वे कौन–कौन से संयोग है। जिन पर मुद्रा की पूर्ति आरै मुद्रा की मांग के बराबर है और इन संयोगों को मिलाने से LM वक्र प्राप्त होता है।

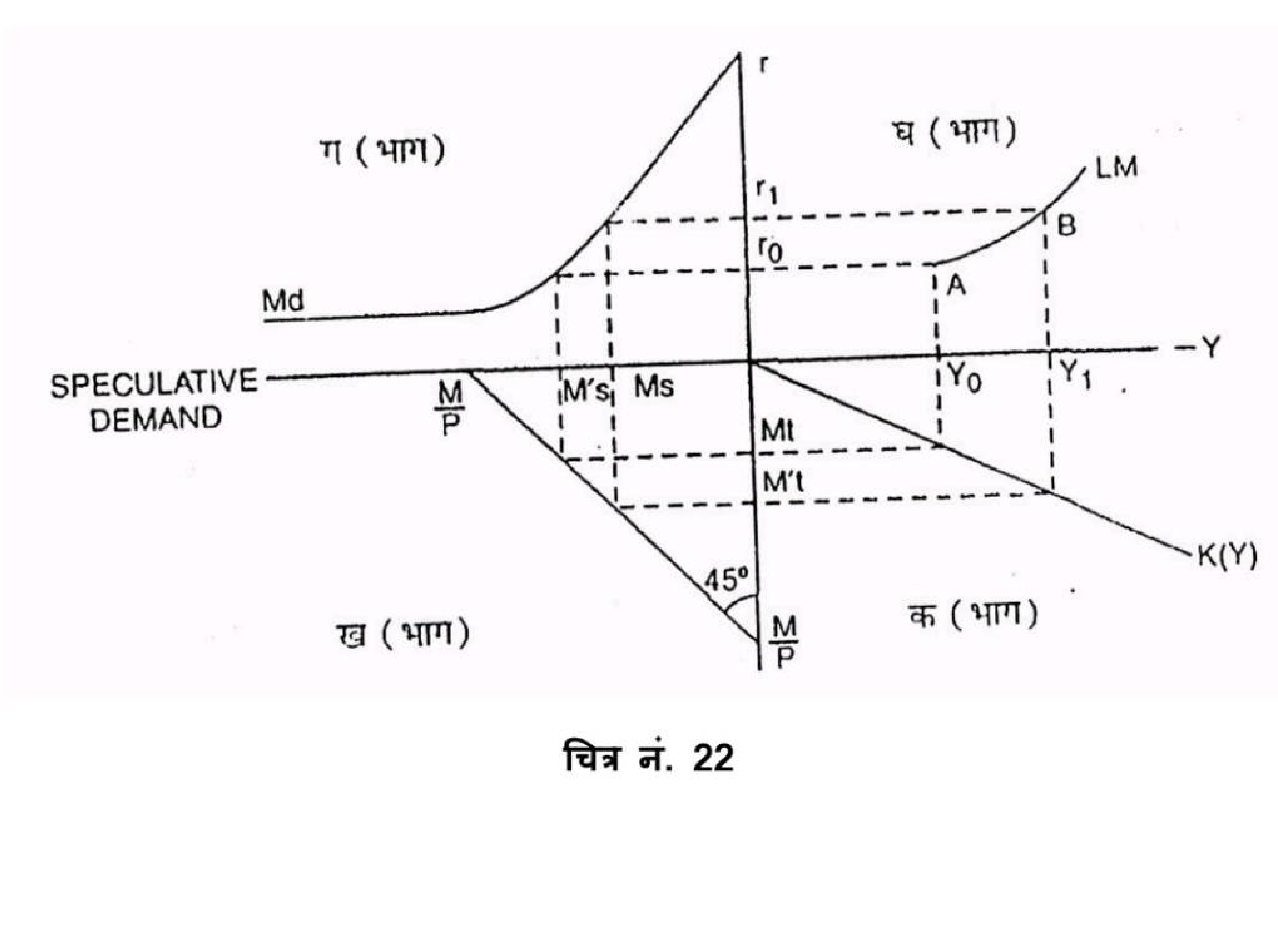

चित्र नं. 22

चित्र नं0–22 में दर्शाया गया है कि मुद्रा बाजार में ब्याज की दर का निर्धारण आय के स्तर पर निर्भर करता है। इसलिए हम आय के स्तर (y) की कल्पना करके उससे सम्बन्धित ब्याज की दर का निर्धारण करते हैं। चित्र में y_a स्तर पर क्रय–विक्रय सम्बन्धी मुद्रा की मांग M_1 होती है। बाकी मुद्रा M_4 सट्टा उद्देश्य के लिए की जाती है तो तरलता अधिमान के और तरलता अधिमान के साथ मिलकर r_0 निर्धारित होती है। इस प्रकार y_0 आय स्तर r_0 बज की दर से संयोग बनता है। जिस पर मुद्रा की मांग और मुद्रा की पूर्ति बराबर होती है। इस संयोग से। के द्वारा वक्त दिया गया है। अब यदि आय का स्तर y_1 होता है तो क्रय–विक्रय के लिए मुद्रा की मांग M हो जाती है और सट्टा उद्देश्य के लिए इसकी पूर्ति कम होकर M^1 हो जाती है। अतः r_1 और y_1 का दूसरा संयोग B द्वारा दर्शाया गया है। जिस पर मुद्रा बाजार सन्तुलन में है। इस प्रकार। और B को मिलाने से जो वक्र प्राप्त होता है। LM वक्र कहा जाता है। यह r और y के विभिन्न ऐसे संयोगों को प्रकट करता है। जहां $M^d = M^s$ मुद्रा बाजार में सन्तुलन में होता है। यह नीचे से उपर और बायीं से दायीं ओर सामान्य परिस्थितियों में उठता हुआ होता है।

LM वक्र का ढ़ाल Slope of LM Curve सामान्यतः LM वक्र का ढाल (dr/dy) नीचे से उपर की ओर बायीं से दायी ओर उठता है। ढाल का अधिक होना या कम होना। इस बात पर निर्भर करता है कि सट्टा उदेश्य के लिए मुद्रा की मांग (Md=F(r) ब्याज की दर के प्रति कितनी लोचशील है और K का मूल्य कम है या अधिक सट्टा उदेश्य के लिए मुद्रा की मांग r के प्रति जितनी अधिक लोचशील होगी। LM वक्र का उतना ही भाग लोचशील होगा। K जितना अधिक होगा। उतना ही LM वक्र लोचशील होगा। इस सामान्य स्थिति को छोड़कर LM वक्र कुछ विशेष आकृतियों वाला हो सकता है। जिसे निम्न चित्र की सहायता से दर्शाया जा सकता है।

1. **पूर्णतयाः बेलोच LM वक्र** के वक्र के प्रति पूर्णतः बेलोच हो सकता है। जब r की दर बहुत उंची हो और अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार प्राप्त किया जा सकता है। तब इस परिस्थिति में बहुत उंची r पर सट्टा उद्देश्य की मांग भी शून्य हो सकती है। सारी मुद्रा क्रय–विक्रय के लिए प्रयोग की जाती है।

2. **पूर्णतः बेलोचशील LM वक्र** निम्नतम r पर उद्देश्य के लिए मुद्रा की मांग असीमित होती है। इस r पर सट्टा उद्देश्य के लिए रखी है। वे सारी मुद्रा नकदी में रखेगें। क्योंकि r निम्नतम होने के कारण बॉण्ड की कीमत अधिकतर होगी और वे सभी बॉण्ड को बेचकर मुद्रा को नकदी में रखेगें और प्रतीक्षा करके भविष्य में बॉण्ड की कीमत गिरे और वे खरीदे। इसी परिस्थिति में LM की आकृति क्षितिज के समान्तर होगी और पूर्णलोचशील होगी। जैसा कि चित्र नं0 23 में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। LM वक्र के ढाल को LM

Equation $M/P = L(r)+K(Y)$ का Differentiation करने के बाद प्राप्त होता है।

$$M/P = L(r) + K(Y)$$

$$0 = l dr + k\, dy$$

$$dr = -k/l \,.dy$$

$$dr/dy = -k/l : k > 0 \text{ And } l<0$$

$$dr/dy = -k>0/l<0$$

Hence the slope is positive.

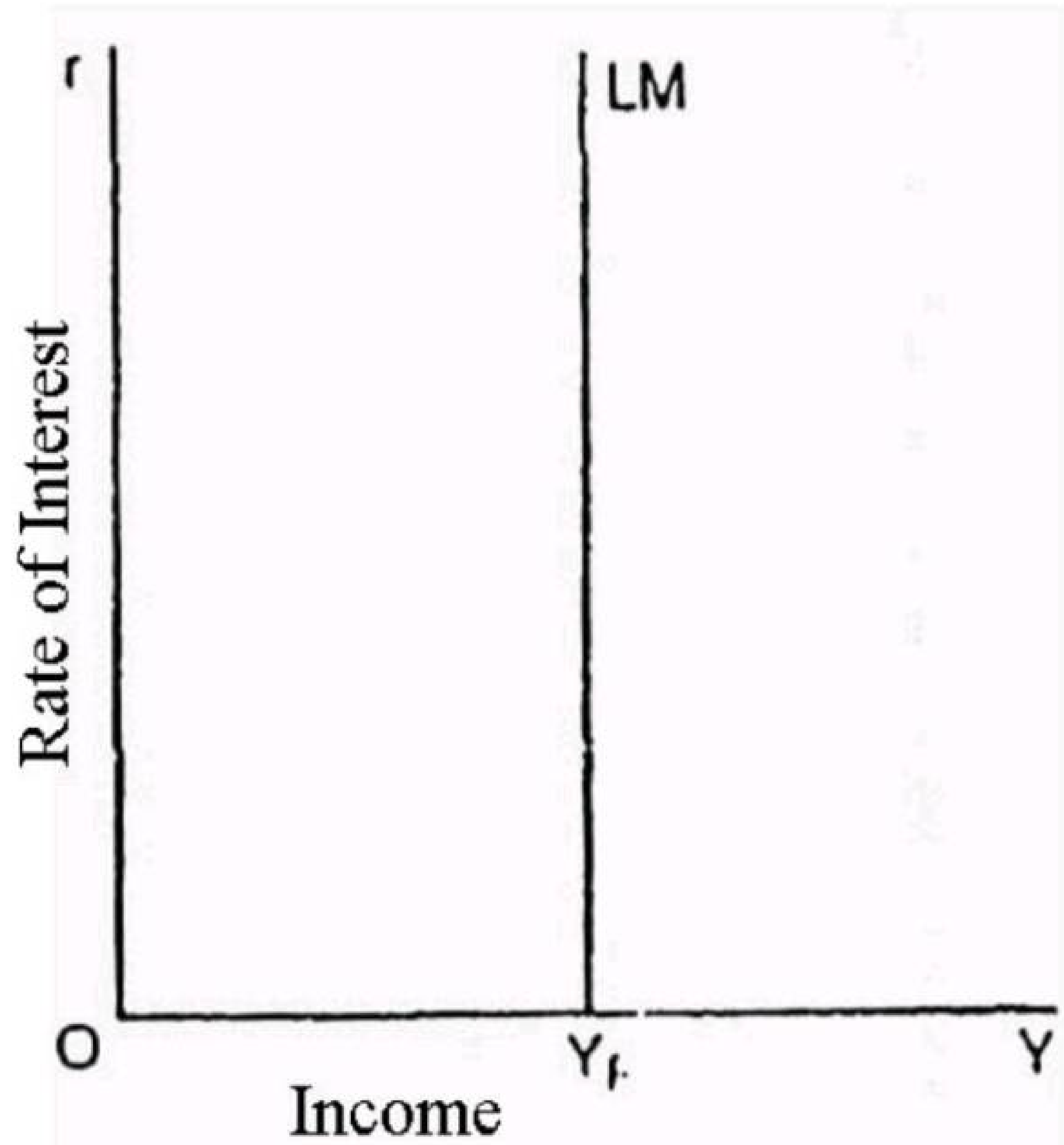

चित्र नं. 23

चित्र नं0–23 में दर्शाया गया है कि इसी प्रकार सामान्य स्थिति में LM वक्र धनात्मक ढाल वाला है परन्तु तरलता जाल की स्थिति में LM वक्र पूर्णतः लोचशील होगा।

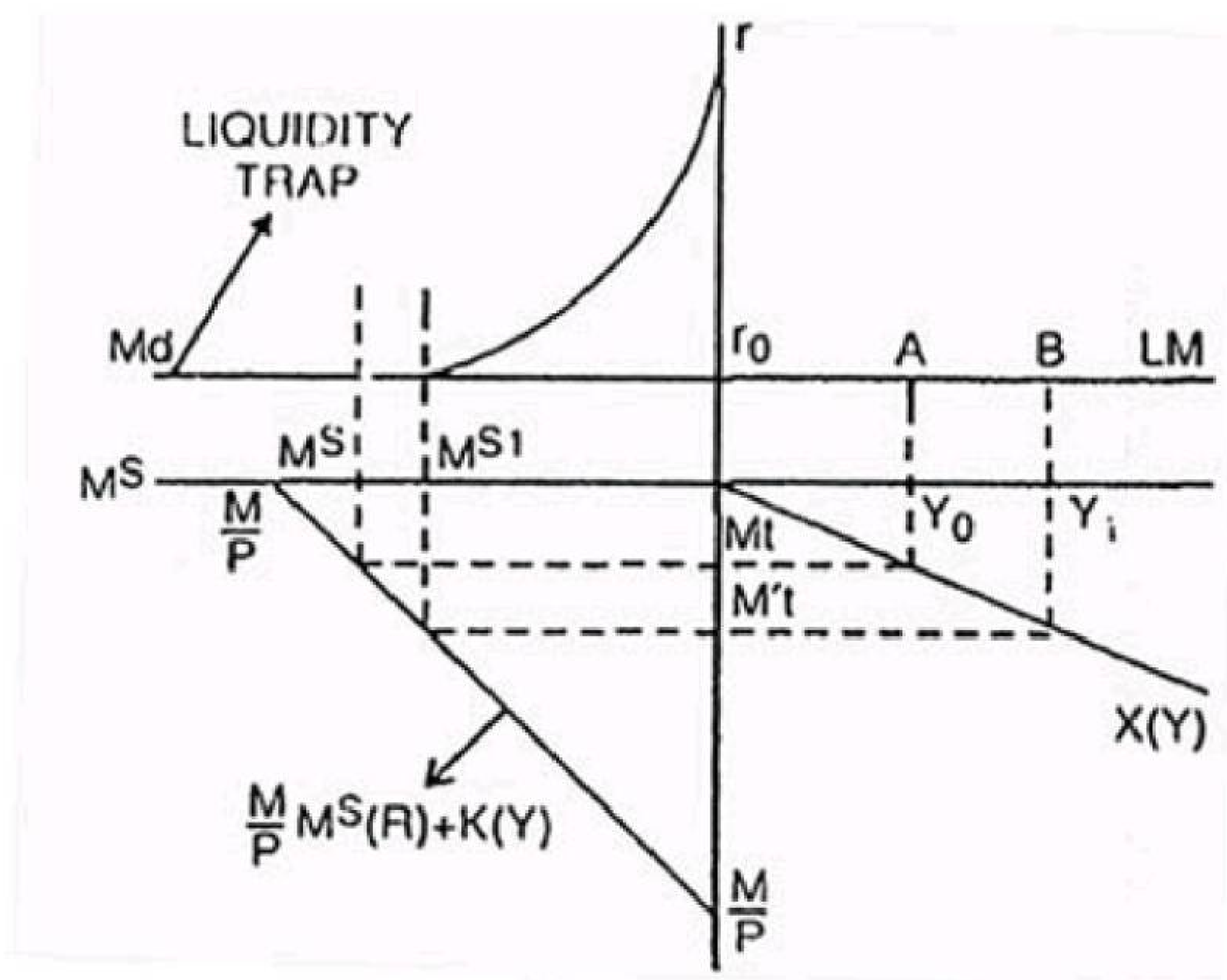

चित्र नं. 24

चित्र नं0–24 में दर्शाया गया है कि आय के y_0 से आय y_1 तक बढ़ने पर भी Y_0 स्थिर रहता है। इसलिए LM वक्र पूर्णतः लोचशील है। वस्तु व मुद्रा बाजारों में साथ–साथ सन्तुलन IS वक्र r और y के ऐसे संयोगों को प्रकट करता है। जिन पर वस्तुओं और सेवाओं कुल मांग और कुल पूर्ति बराबर है। इसलिए IS वक्र पर पड़ने वाला r और y के विभिन्न संयोगों का वस्तु बाजार में सन्तुलन स्थापित करता है परन्तु वास्तव में अर्थव्यवस्था में किसी समय CY के किसी एक संयोग को प्रकट करता है। जिसकी जानकारी IS वक्र से प्राप्त नहीं हो सकती है क्योंकि मुद्रा बराबर भी r से प्रभावित होता है। इसलिए वस्तु बाजार के साथ मुद्रा बाजार का सन्तुलन होना भी अनिवार्य है। मुद्रा बाजार ये सन्तुलन LM वक्र द्वारा सन्तुलन प्राप्त किया जाता है। क्योंकि LM वक्र r और y के ऐसे संयोग को प्रकट करता है। जिन पर मुद्रा की मांग और सन्तुलन बराबर है। यह संयोग IS और LM वक्र को इक्ठ्ठा रखने और उनके एक दूसरे से काटने से प्राप्त होता है।

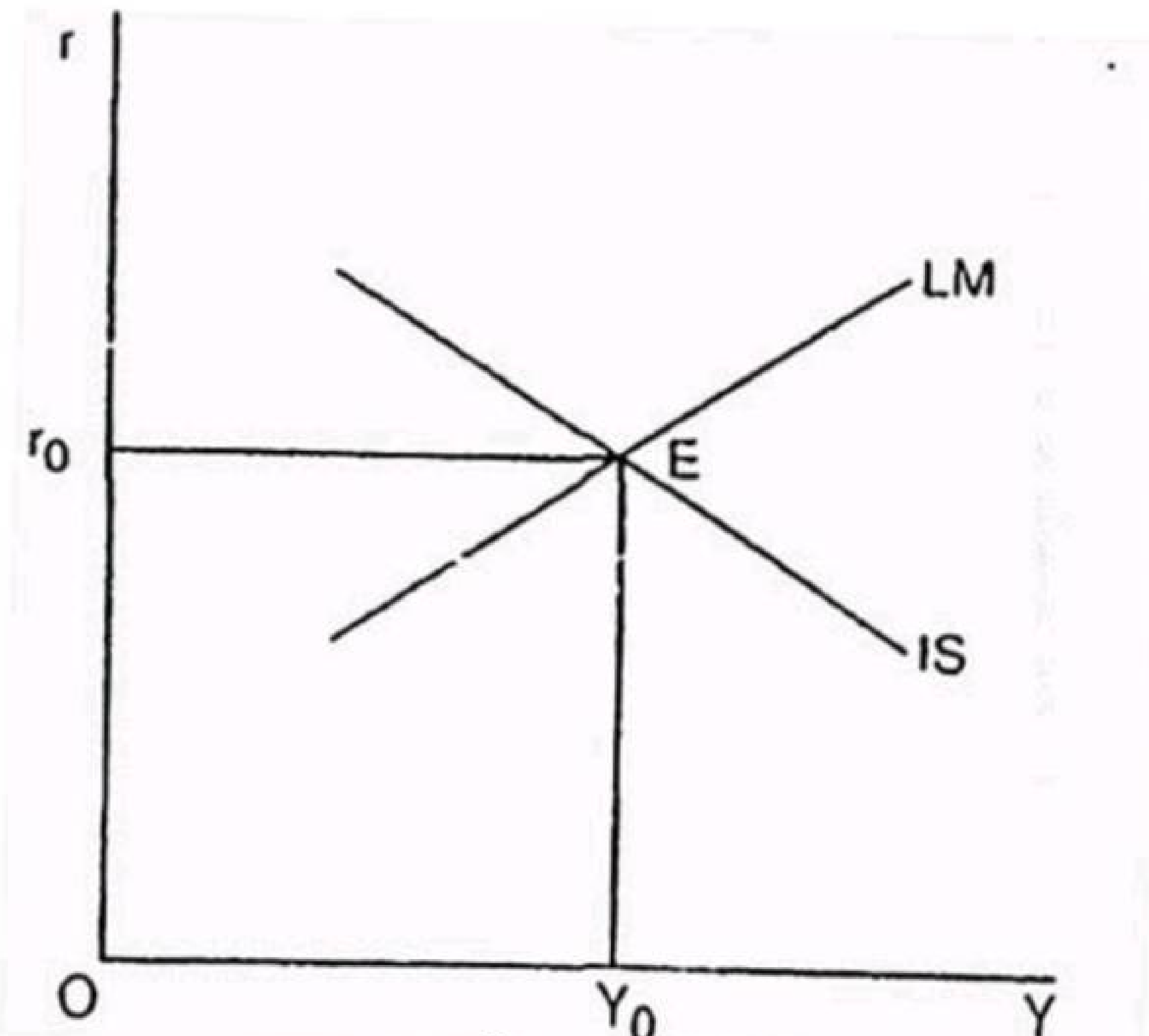

चित्र नं. 25

चित्र नं0 25 में दिखाया गया है IS-LM वक्र एक दूसरे को E बिन्दु पर काटते हैं। जिस पर वस्तु बाजार व मुद्रा बाजार दोनों में संतुलन में है। r और y का यह संयोग E बिन्दु द्वारा प्रकट किया गया है। जिस पर सारी अर्थव्यवस्था सन्तुलन में होगी, क्योंकि यहां वस्तु और मुद्रा बाजार में सन्तुलन में है।

असन्तुलन अव्यवस्था में सन्तुलन की ओर प्रक्रिया अर्थव्यवस्था में सन्तुलन की शर्त के लिए IS-LM वक्र एक दूसरों को काटते हैं। ऐसी परिस्थिति में कौन सी प्रक्रिया जिसके माध्यम से अर्थव्यवस्था y और r के उस संयोग को प्रकट करता है। जिन पर दोनों बाजार सन्तुलन में है। जब अर्थव्यवस्था में किसी भी बाजार में सन्तुलन में नहीं हो तो किस प्रक्रिया में सामान्य सन्तुलन बिन्दु प्राप्त करती है। यहां IS और LM वक्र एक दूसरों को काटते हैं। परन्तु विलियम ब्राउन के अनुसार मुद्रा बाजार वस्तु बाजार की अपेक्षा कहीं अधिक शीघ्रता से समन्वय हुआ है। इसलिए अर्थव्यवस्था में जब कभी असन्तुलन होता है तो LM वक्र पर ही गति करती हुई सन्तुलन को प्राप्त करती है यदि यह कल्पना की जाये कि मुद्रा बाजार व वस्तु बाजार से अधिक लोचशील है। यह समन्वय की प्रक्रिया चित्र नं0 26 में चलती रहती है।

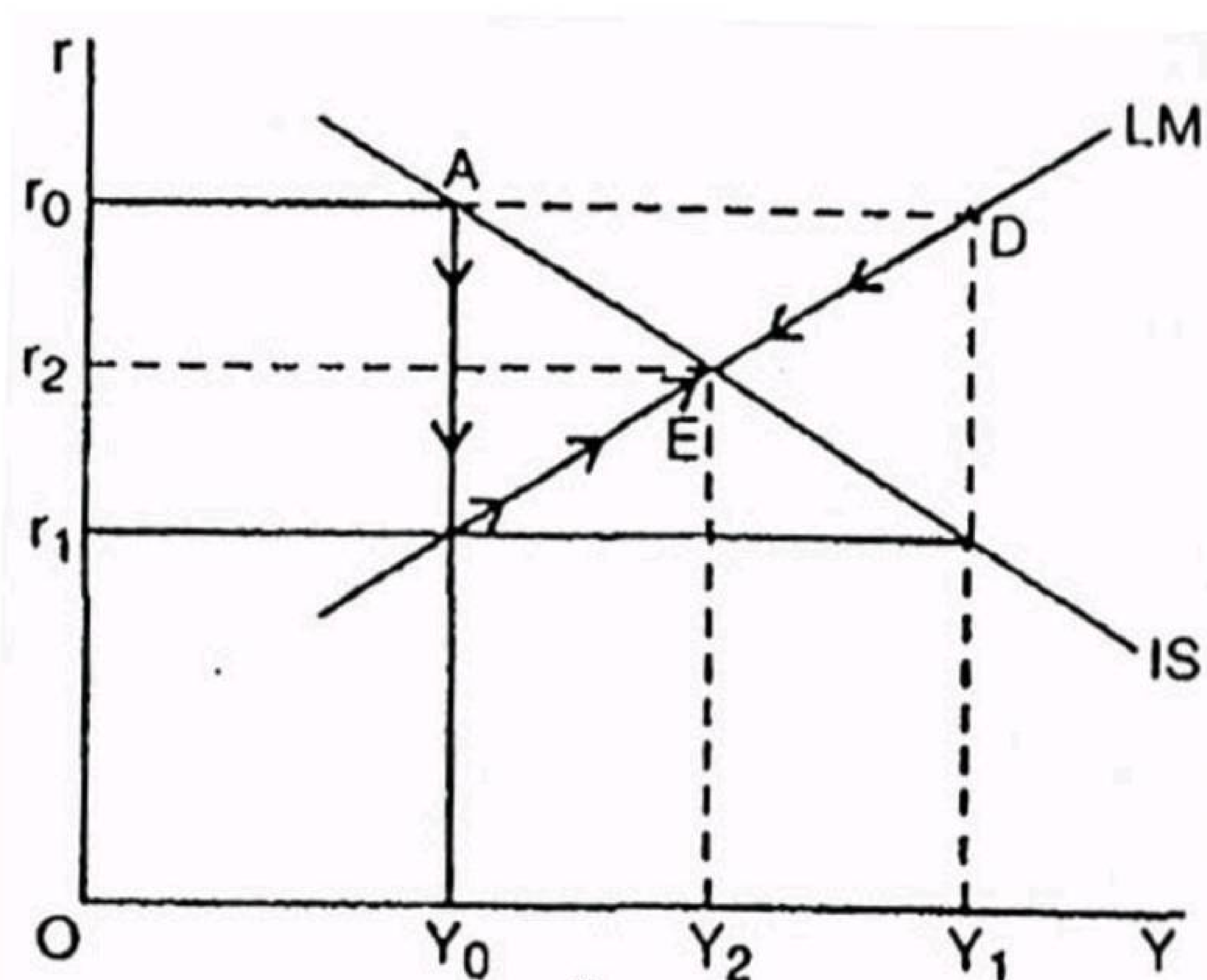

चित्र नं. 26

चित्र नं0 26 में दिखाया गया है कि। बिन्दु पर केवल वस्तु बाजार सन्तुलन में है। जहां मुद्रा की अपेक्षा मुद्रा की पूर्ति अधिक होती है। क्योंकि इन बिन्दुओं पर Y स्थिर रहते हुए ब्याज गिरकर LM को प्राप्त किया जा सकता है। यहां पर मुद्रा की मांग और पूर्ति बराबर है। Y_0 स्तर पर ब्याज r_0 से गिरकर r_1 को प्राप्त होगा। r_1 मुद्रा की मांग काफी कम है। इसलिए निवेश बढ़ेगा क्योंकि यहां पर 1 (r) + G > S+T है। इसलिए आय (y) बढ़ने पर मुद्रा की मांग बढ़ेगी। इसलिए r और r_1 से बढ़ना शुरू कर देगा। इसी प्रकार LM वक्र पर गति करते हुए अर्थव्यवस्था E को प्राप्त करेगी। बिन्दु D और S वक्र के दायीं ओर वस्तु बाजार में मांग की कमी को दर्शाते हैं। जिससे पहले आय बढ़ेगी और मुद्रा योग को घटायेगी और बाजार की दर नीचे गिरेगी और फिर LM वक्र का अनुशरण करती हुई E बिन्दु को प्राप्त हो जाएगी।

दूसरी प्रकार से जब अर्थव्यवस्था किसी भी प्रकार से सन्तुलन की अवस्था में नहीं हो तो कैसे सन्तुलन को प्राप्त किया जा सकता है। इसको चित्र नं0. 27 की सहायता से दर्शाया जा सकता है।

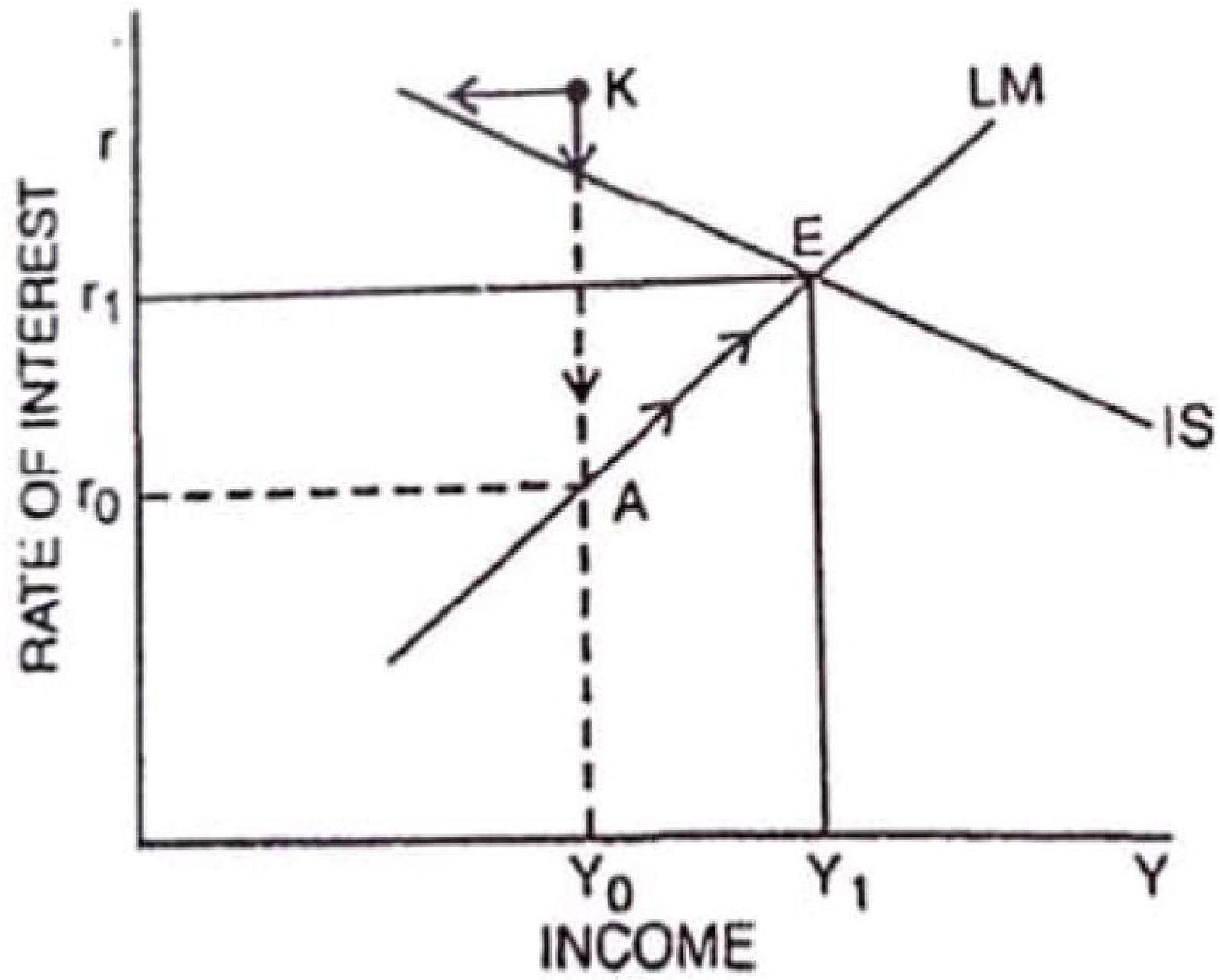

चित्र नं. 27

K बिन्दु में मुद्रा की पूर्ति अधिक होने के कारण ब्याज की दर गिरेगी परन्तु मुद्रा बाजार में परिवर्तन शीघ्र होते हैं।

चित्र नं0 27 में दिखाया गया है कि इसलिए r गिरकर r_0 हो जाती है। इसी प्रकार अर्थव्यवस्था LM वक्र के साथ नीचे से उपर की और बढ़ती हुई E बिन्दु को प्राप्त करती है।

IS-LM सन्तुलन का कुल भाग वक्र परम्परावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार पूर्ण रोजगार स्तर पर कुल पूर्ति वक्र पूर्णतयाः बेलोचदार होते है परन्तु कुल मांग वक्र मुद्रा की मात्रा के द्वारा निर्धारित होती है। परम्परावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार लोग मुद्रा अपने पास नहीं रखते, बल्कि सारी की सारी मृदा उपयोग पर खर्च कर देते हैं। दूसरी और बचत के रूप में पूंजीगत पदार्थ खरीद लेते है। जितनी मृद्रा उनके पास होती है। उनके खर्च या मांग को प्रकट करती है। यदि अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मात्रा बढ़ती है तो लोगों को कुल मांग उनके अनुसार बढ़ जाती है। किसी दी हुई कुल मुद्रा या व्यय की अवस्था में कीमत स्तर P बढ़ाने पर मांग कम और P घटने पर मांग अधिक हो जाती है। इसलिए कुल मांग परम्परावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार P तथा कुल मांग में विपरित सम्बन्ध होता है तथा यह बायीं से दायीं ओर झुकी हुई होती है।

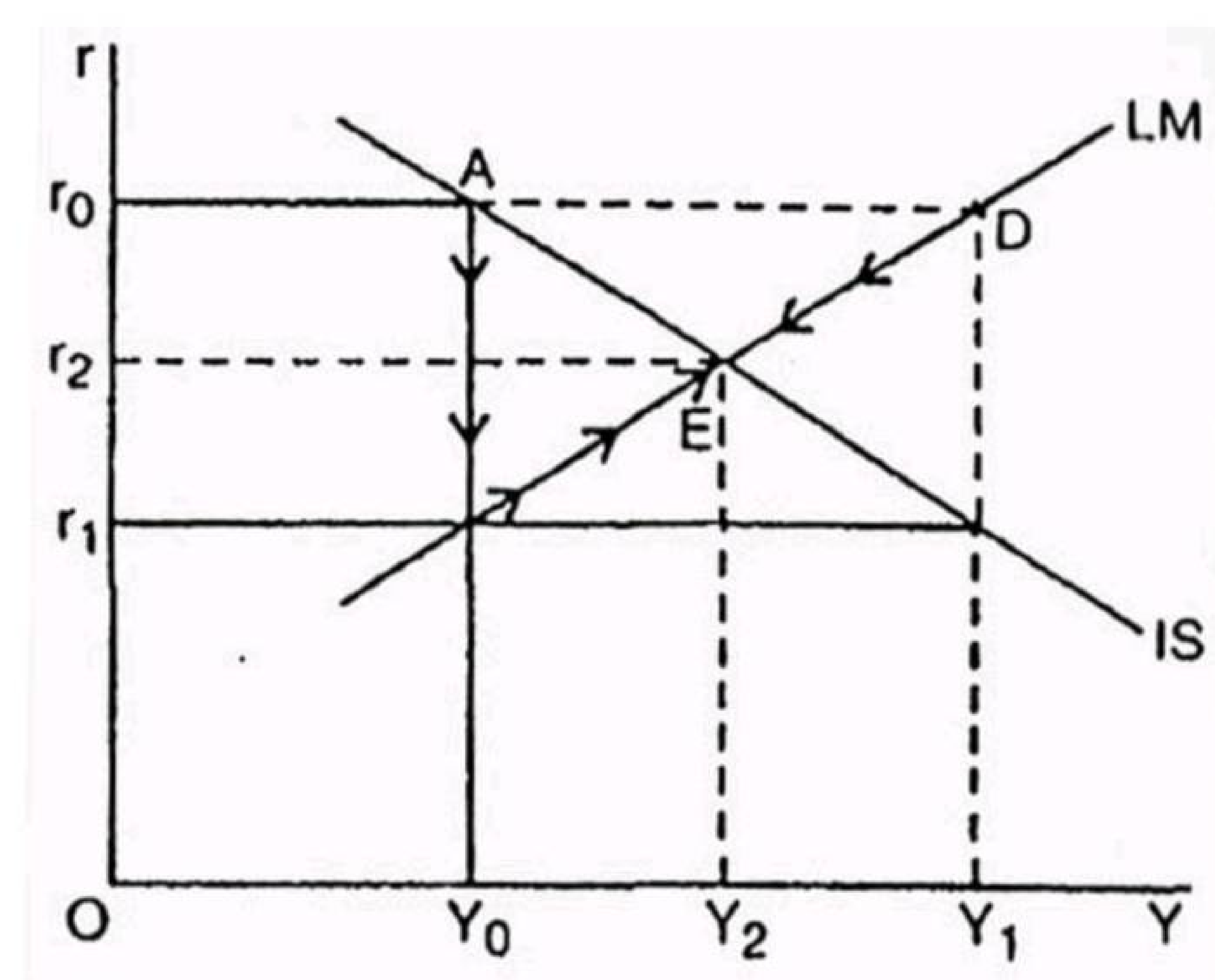

चित्र नं. 28

चित्र नं. 28 में दर्शाया गया है कि मुद्रा की मात्रा बढ़ने पर कुल व्यय और कुल मांग बढ़कर lD, हो जाता है और कीमत स्तर बढ़कर P_1 हो जाती है। इसके विपरित यदि IS-LM माडल में कुल पूर्ति वक्र (AS-Curve) वक्र उत्पादन के पूर्ण रोजगार स्तर तक पूर्णतः लोचशील तथा पूर्ण–रोजगार स्तर IS-LM माड़ल कुल पूर्ति वक्र (AS Curve) उत्पादन में पूर्ण रोजगार स्तर पर यह पूर्णतयाः बेलोच होता है। जैसा कि चित्र नं0 29 में दर्शाया गया है।

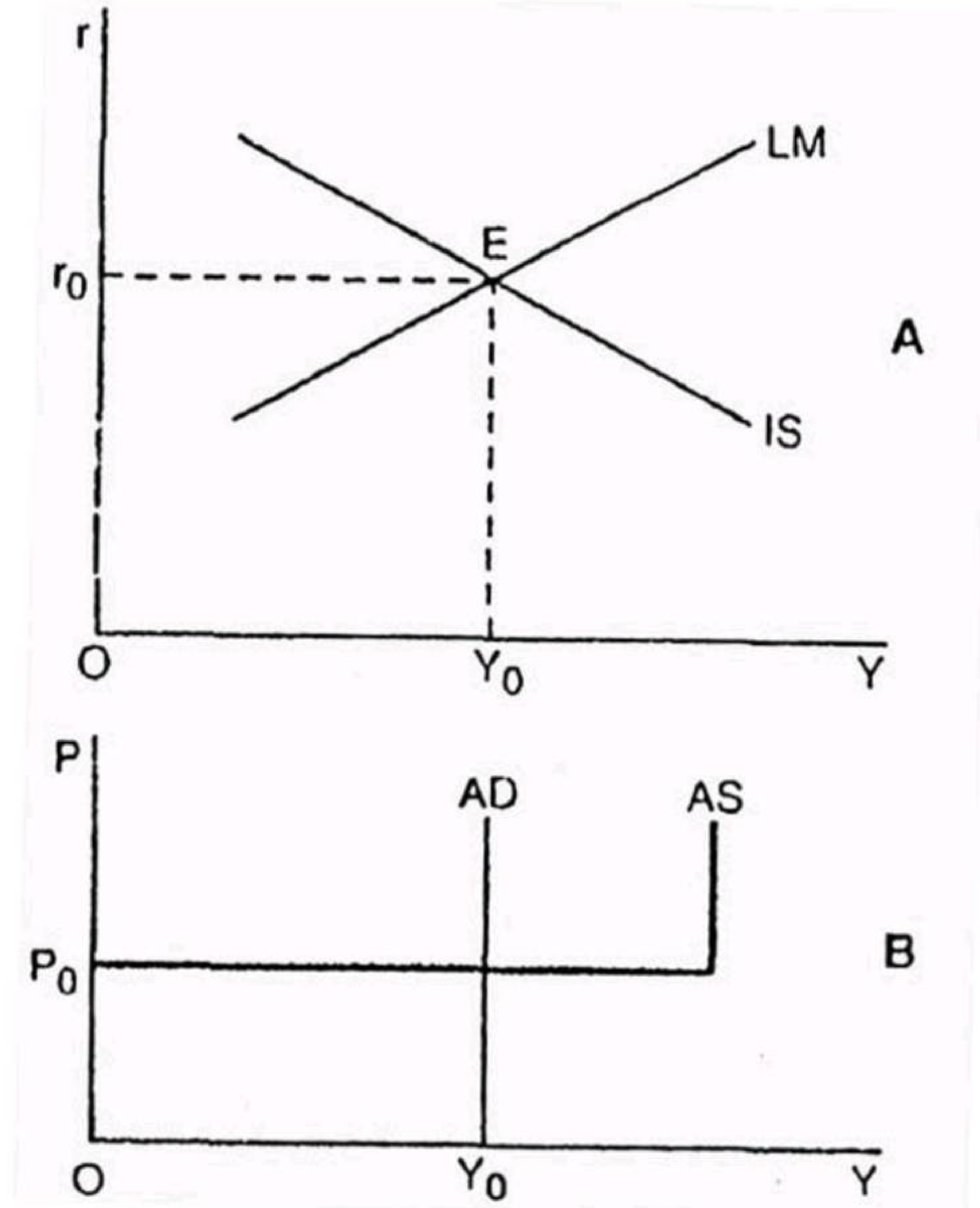

चित्र नं. 29

चित्र नं0 29 में दिखाया गया है कि IS-LM वक्र दर्शाया गया है। IS माडल के कुल पूर्ति वक्र उत्पादन के पूर्ण–रोजगार स्तर पर यह पूर्णतः बेलोच होता है।

IS-LM वक्र की यह मान्यता है कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण–रोजगार का स्तर पहली अवस्था में कुल पूर्ति वक्र के पूर्णतः लोचशील वाले भाग में ही उत्पादन कर रही होती है। उत्पादन का स्तर केवल कुल योग और कुल पूर्ति के द्वारा निर्धारित होता है। जबकि कुल पूर्ति वक्र केवल कीमत स्तर का निर्धारण करता है। जिस पर उत्पादन किया जाता है। परम्परावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार कुल मांग वक्र की खिसकना मुद्रा की मात्रा और मुद्रा की पूर्ति पर निर्भर करता है और यह केवल IS-LM वक्रों की स्थिति से ही सम्भव हो सकता है। मुद्रा की मात्रा इनमें से केवल एक तत्व है। अन्य तत्व निवेश सरकारी व्यय आदि में से किया जा सकता है जो कि IS-LM वक्रों की स्थिति से निर्धारित होता है। इन वक्रों की स्थिति निर्धारित करने के लिए दोनों एक दूसरों को काटते है और कुल मांग वक्र का निर्धारण किया जा सकता है। इस सिद्धान्त की मान्यता है कि P में परिवर्तन के साथ IS-LM वक्रों में परिवर्तन नहीं होता है।

Inflation:

पॉल इन्जिग के शब्दों में, ''मुद्रा स्फीति असंतुलन की वह अवस्था है जिसमें क्रयशक्ति बढ़ने के कारण या इसके परिणामस्वरूप कीमत स्तर में वृद्धि होती है।'' गार्डनर ऐक्ले के अनुसार, ''सामान्य कीमत स्तर में निरन्तर ऊँची वृद्धि को मुद्रा स्फीति कहा जाता है।'' मुद्रा स्फीति के सिद्धान्तों जैसे केन्ज तथा बेन्त हैनसन के मांग जनित मुद्रा स्फीति तथा पूर्ति जनित मुद्रा स्फीति का अध्ययन मुख्यतः दो भागों में बांटा गया हैः–

- मांग प्रेरित मुद्रा स्फीति सिद्धान्त
- लागत प्रेरित मुद्रा स्फीति सिद्धान्त

मांग प्रेरित मुद्रा स्फीतिः–

यह वह अवस्था है जिसमें वर्तमान कीमतों पर कुल मांग कुल पूर्ति से अधिक बनी रहती है। इस कारण कीमतें व कीमत स्तर बढ़ता रहता है। इस प्रकार की मुद्रा स्फीति का कारण मुद्रा स्फीति कहते है। कुल मांग की कुल पूर्ति पर अधिकतापूर्ण रोजगार व अपूर्ण रोजगार दोनों अवस्थाओं में हो सकती है।

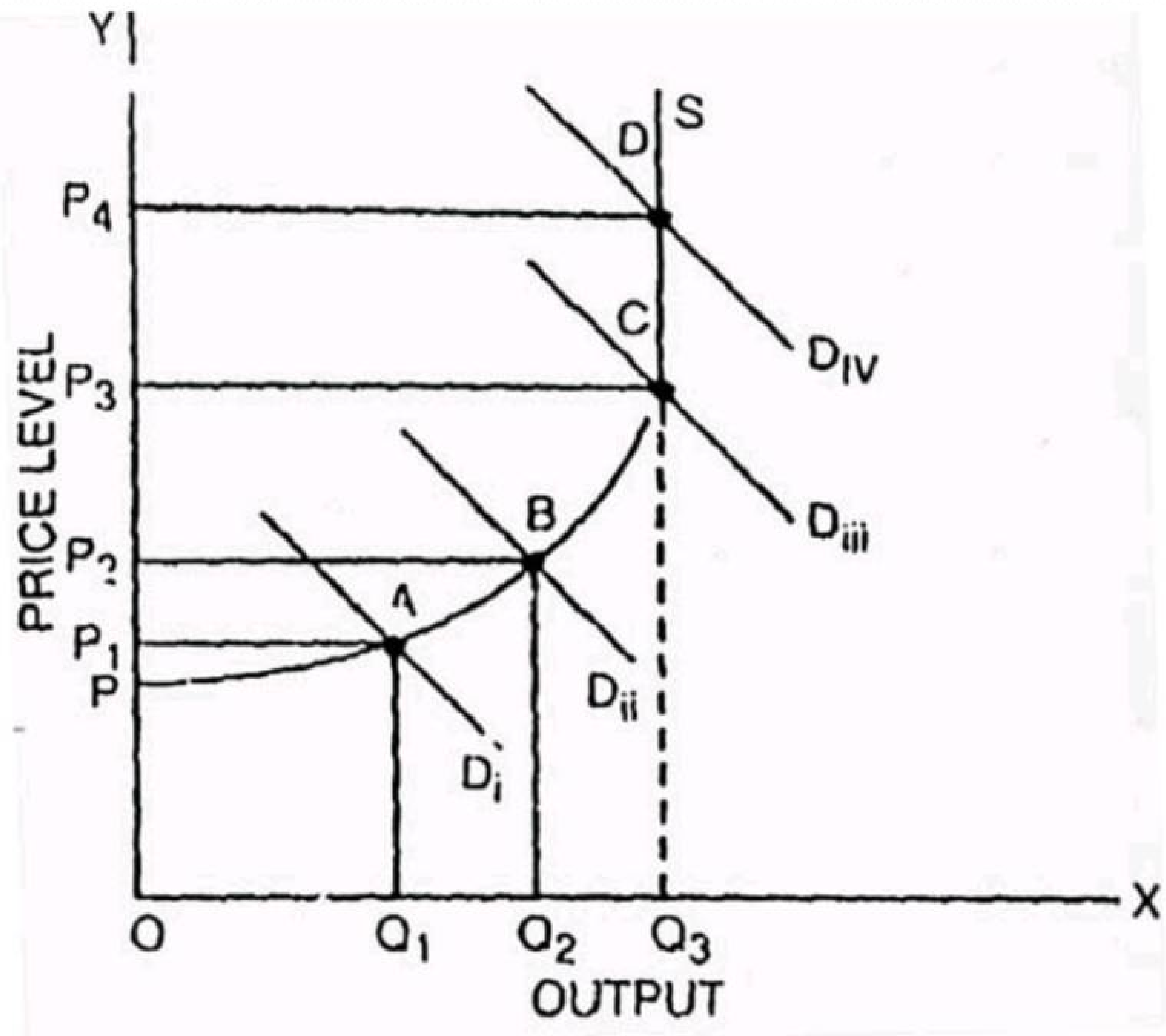

चित्र नं. 30

OX अक्ष उत्पादन स्तर व OY अक्ष पर कीमत स्तर। S कुल पूर्ति वक्र है। D_1 मांग वक्र S पूर्ति वक्र को काट कर P_1 कीमत स्तर निर्धारित होता है। OQ, CO2, पर मांग में वृद्धि (D_1 से D_{11}) कीमत स्तर को P_1 से P_2 बढ़ाती है। क्योंकि यहां अपूर्ण रोजगार स्तर है। इसलिए मांग बढ़ने पर उत्पादन व रोजगार तथा कीमतें सभी बढ़ते हैं। इसलिए कीमत स्तर बढ़ नहीं पाता। परन्तु पूर्ण रोजगार उत्पादन स्तर (of) पर कुल मांग जब Diii से बढ़कर Div होती है तो कीमत में वृद्धि (P_3 से P_4) अत्याधिक होती है क्योंकि यहा पूर्ण रोजगार प्राप्त है, इसलिए मांग बढ़ने पर उत्पादन नहीं बढ़ पाता। कीमत स्तर बढ़ता है।

बेन्त हैनसन का मांग मुद्रा स्फीति सिद्वान्तः–

केन्ज द्वारा प्रतिपादित मुद्रा स्फीति सिद्वान्त केवल वस्तु बाजार को धन मैं रखकर प्रतिपादित किया गया। वस्तु बाजार में वस्तुओं की मांग उनकी पूर्ति से अधिक होने के कारण मुद्रा स्फीति अन्तराल पैदा होता है। परन्तु डेनमार्क के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री वेन्त हैनसन ने अपनी पुस्तक A study in the theory of inflation में मांग जनित मुद्रा स्फीति का विश्लेशण किया जिसमें वस्तु बाजार व साधन बाजार दोनों को ध्यान रखते हुए मुद्रा स्फीति की व्याख्या की है। हैंनसन के अनुसार वस्तुओं की मांग की अधिकता तथा साधनों की मांग की अधिकता दोनों मुद्रा स्फीति उत्पन्न करती है।

Assumption -

1. वस्तु बाजार व साधन बाजार क्षेत्रों में पूर्ण प्रतियोगिता है।
2. साधनों की पूर्ति सीमित होती है।
3. मजदूरी दर न्यूनतम मजदूरी दर से नीचे नहीं हो सकती है।
4. कीमत तथा मजदूरी परिवर्तनशील है।
5. समय अन्तराल को स्वीकार किया गया है।
6. मजदूरी तथा कीमत स्तर में परिवर्तन की दर इन बाजारों में Goods gap & Factor gap के आकारों पर निर्भर करती है।

Explanation:- हेन्सन के अनुसार, अर्थव्यवस्था में पूर्ण मुद्रा स्फीति तभी होती है जब Goods gap तथा Facor gap दोनों विद्यमान होते हैं तथा धनात्मक होते है। किसी एक बाजार में मांग की पूर्ति पर अधिकता होने से मुद्रा स्फीति उत्पन्न हो सकती है। यदि वस्तु बाजार संतुलन में है या Good gap शून्य है परंतु साधन बाजार में साधनों की मांग पूर्ति से अधिक होने के कारण साधन कीमत बढ़ती है जो उत्पादन लागत बढ़ा देती है। इससे वस्तु बाजार में पूर्ति

बायीं ओर सरकेगी जो कीमत स्तर को बढ़ा देगी। इससे वस्तु बाजार में पूर्ति बायीं ओर सरकेगी जो कीमत स्तर को बढ़ा देगी मुद्रा स्फीति उत्पन्न हो जाएगी।

Rate of Inflation:- (a) Goods Gap और Factor Gap में अन्तराल का आकार। (b) बाजार प्रकृति की क्रियाशीलताः मांग की अधिकता के कारण कीमत स्तर तथा मजदरी तेजी से बढ़ती है या धीरे–धीरे बढ़ती है।

Diagram में

OX = Production

OY = Price level & Real Wage rate

D Curve – Demand Curve

वस्तु बाजार में मांग का कीमत स्तर से नकारात्मक सम्बन्ध बताता है। S वक्र पूर्ति फलन है जो वस्तु बाजार में श्रम पूर्ति सीमित होने के कारण विभिन्न वास्तविक मजदूरों पर कितनी मात्रा की पूर्ति की जा सकती है। So वक्र श्रम पूर्ति सीमित होने के कारण जो अधिक से अधिक उत्पादन किया जा सकता है। इस पर वास्तविक मजदूरी दर w/o में परिवर्तन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। D

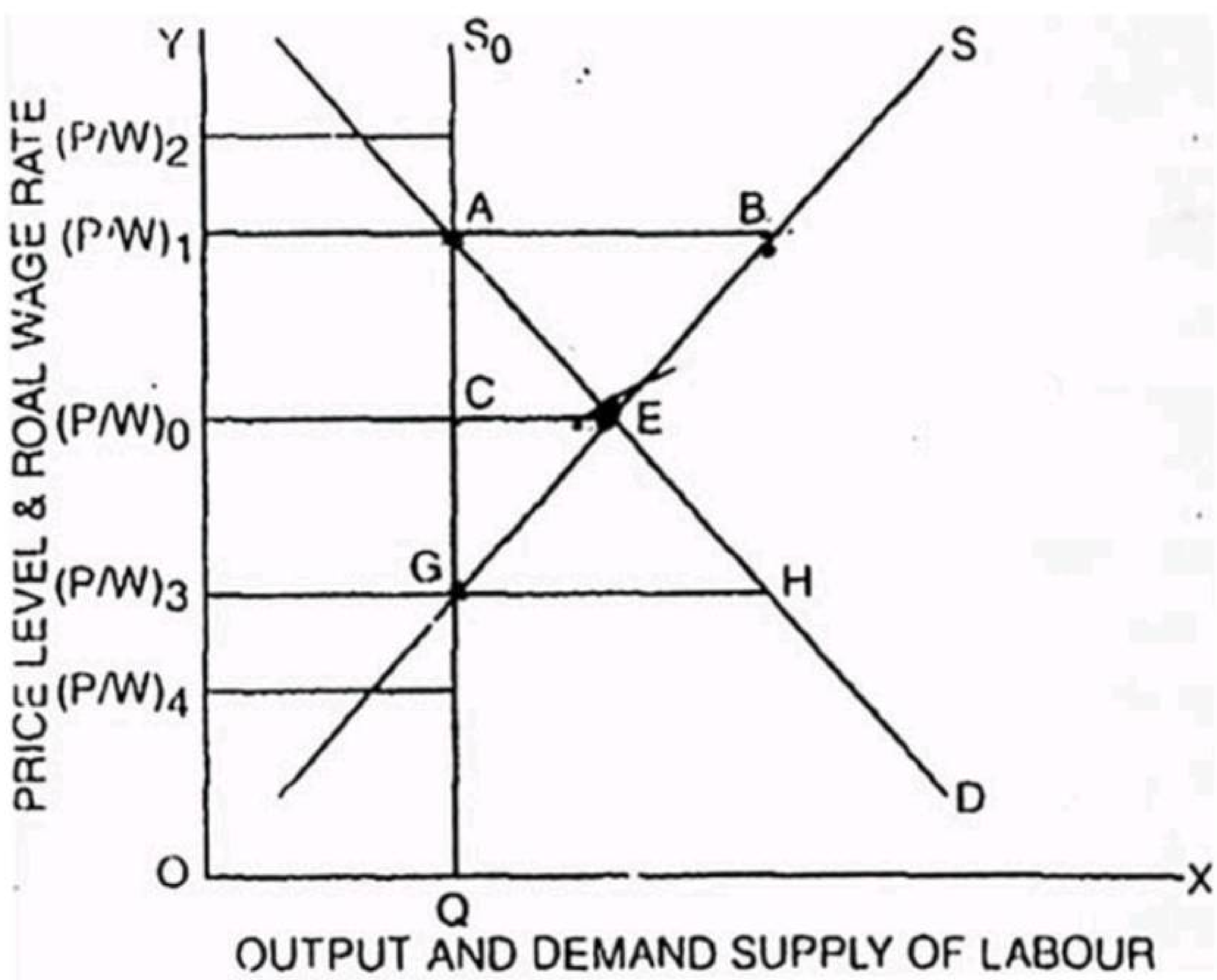

चित्र नं. 31

वक्र तथा So वक्र का अन्तर Goods Gap (D-So) तथा $S\text{-}S_0$ वक्रों का अन्तर factor gap को मापता है। Goods Gap के कारण कीमत स्तर बढ़ता है तथा factor gap के कारण मजदूरी बढ़ती है। p/w तथा p/w_2 के बीच Good Gap धनात्मक है। वस्तु तथा साधनों बाजारों में संतुलन की प्रक्रिया इस प्रकार होती है कि जब अर्थव्यवस्था। बिंदु पर होती है तो वस्तु बाजार में वस्तु की मांग व पूर्ति बराबर होने से। बिंदु संतुलन प्रकट करता है। परन्तु साधन बाजार में उत्पादक उत्पादन की B तक पूर्ति बढाना चाहते है, श्रमिकों की मांग बढ़ेंगी व मजदूरी बढ़ेगी जो p/w को नीचे की ओर ले जाएगा। इसके विपरीत G बिन्दु पर साधन बाजार संतुलन में पर वस्तु बाजार में मांग पूर्ति से दम अधिक है। इस कारण वस्तु कीमत (P) बढ़ेगी जो p/w को ऊपर की ओर ले जाएगी। Gap जितना ज्यादा होगा कीमत / मजदूरी दर जितनी अधिक परिवर्तनशील होगी मुद्रा स्फीति उतनी अधिक होगी। जब मजदूरी दर p/w है तो वस्तु बाजार में संतुलन है परन्तु साधन बाजार में ।B के समान Gap है तो मजदूरी दर बढ़ायेगा। Gap CE है तो वास्तविक मजदूरी स्थिर रहेगी।

Criticism:-

1. पूर्णप्रतियोगिता की अवास्तविक मान्यता
2. मांग की अपेक्षा मुद्रा स्फीति के अन्य कारण भी है – लागत वृद्धि
3. साधन बाजार में अंतराल की व्याख्या बनावटी।
4. सरकारी नीतियों की अवहेलना।

Cost Push Inflation:-

यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें कीमतों में वृद्धि उत्पादन लागत में वृद्धि के कारण होती है। रेनलर्ट के शब्दों में:–

''लागत प्रेरित मुद्रा स्फीति सिद्धान्त का आधार यह है कि नाम तथा व्यापार दोनों में ही संगठित समूह अपनी वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमत सामान्य प्रतिस्पर्धा बाजारों में प्रचलित कीमतें ऊंची रखते है।''

Explaination:-

प्रांरभिक अवस्था में SS पूर्ति वक्र DD मांग वक्र को P_0 पर काटता है तथा P_0 सतुंलित कीमत निर्धारित होती है। माना श्रमिक संबंधित मजदूरी अधिक प्राप्त करने में सफल हो जाते है। पूर्ति वक्र बायीं ओर पहले SS स्थापित होती है जो DD मांग वक्र के साथ मिलकर कीमत स्तर को P_1 तक बढ़ा देती है। इसके बाद फिर पूर्ति वक्र बायीं ओर सरककर $S_{11}S$ हो जाता है जो कीमत स्तर को P_{11} बढ़ा देता है। इस प्रकार कीमत स्तर P_0 से P_1 और P_1 और P_{11} बढ़ जाता है जबकि उत्पादन व रोजगार स्तर Q6 से गिर कर Q और Q से Q_1 स्थापित होता है।

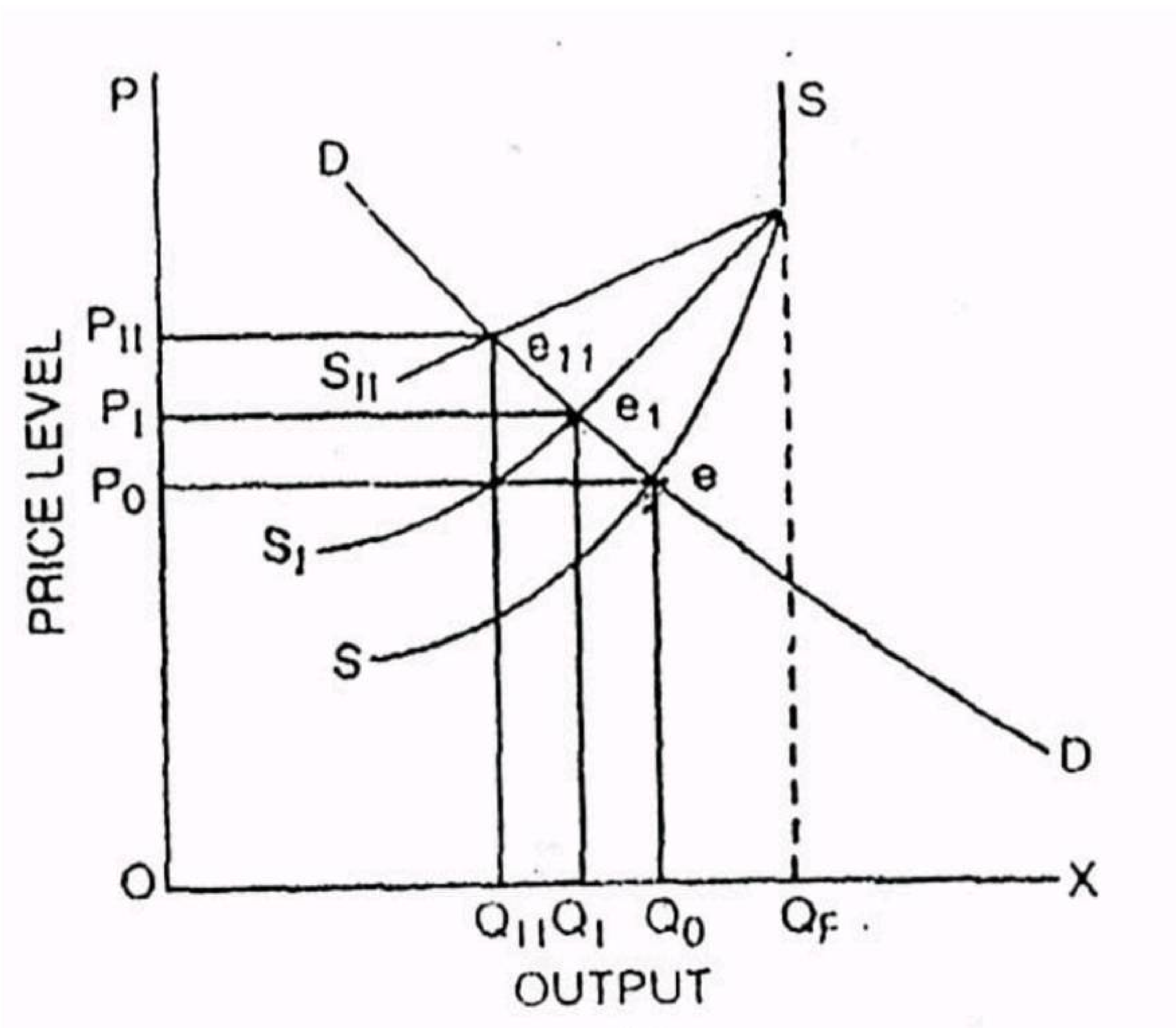

चित्र नं0 32

कारण –

1. **प्रमुख कच्चे माल की लागत में वृद्धि:–** जब प्रमुख कच्चे–माल की कीमत बढ़ने भी बढ़ती है।
2. **मजदूरी दर में वृद्धि:–** श्रमिक संगठित होकर श्रम संघों का निर्माण करते है। इससे उनमें सौदा करने की शक्ति बढ़ जाती है वे मजदूरी दर में वृद्धि करवाने में सफल हो जाते है।
3. **लाभ दर में वृद्धि:–** उत्पादक एकाधिकार अल्पाधिकार की स्थिति से लाभ उठाकर कीमतें बढ़ा देते है और अधिक लाभ कमाते है।

Inflation – Meaning Effect & Control

According to Ackley:- हम मुद्रा स्फीति की परिभाषा बढ़ती हुई कीमतों के रूप में देते हैं न कि ऊँची कीमतों के रूप में।

Causes of Inflation:- (i) Inflation on Demand Side: वास्तव में मुद्रा स्फीति वस्तुओं और सेवाओं के लिए मांग व पूर्ति के बीच अर्थव्यवस्था में असंतुलन पैदा होने से होती है। अर्थव्यवस्था में जब भी वस्तुओं और सेवाओं की मांग उनकी पूर्ति से अधिक हो तो इससे कीमत स्तर बढ़ता है।

1. **मुद्रा पूर्ति में वृद्धिः–** मुद्रा पूर्ति बढ़ने से अर्थव्यवस्था में वस्तुओं तथा सेवाओं की मांग में वृद्धि हो जाती है। यदि इस बढ़ी हुई मांग के साथ–साथ अर्थव्यवस्था में वस्तुओं त था सेवाओं की पूर्ति नहीं बढ़ती तो कीमतों का स्तर बढ़ना शुरू हो जाता है।

2. **घाटे की वित्त व्यवस्थाः–** आर्थिक विकास हेतु सरकार को मुद्रा स्फीति को नियन्त्रित करने के लिए आय से अधिक करना पड़ता है। उस स्थिति में मुद्रा पूर्ति में वृद्धि हो जाती है और मुद्रा स्फीति को बढ़ावा देती है।

3. **निवेश व्यय में वृद्धिः–** निवेश में वृद्धि होने से पूंजी पदार्थों की मांग पर दबाव बढ़ता है परिणामस्वरूप उन पदार्थों की कीमतों में वृद्धि होती है। जब पूंजी पदार्थों की कीमतें बढ़ती है तो अन्य पदर्थों की कीमतें भी बढ़ती है।

4. **सार्वजनिक खर्च में वृद्धिः–** सरकार द्वारा लोगों के कल्याण हेतु किए जाने वाले विभिन्न खर्चों के फलस्वरूप भी स्फीतिक अन्तराल को जन्म देती है।

II. Supply Side Causes:-

यदि वस्तुओं और सेवाओं की बढ़ी हुई मांग को पूरा करने हेतु पूर्ति में वृद्धि होती है तो अर्थव्यवस्था में कोई भी समस्या नहीं होगी। मुद्रा स्फीति पूर्ति के अपेक्षा मांग ज्यादा होने के फलस्वरूप बढ़ती है।

1. **खाद्य पदार्थों में कमीः–** खाद्य पदार्थों की पूर्ति, मांग की अपेक्षा कम होने के फलस्वरूप खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि होती है जो मुद्रा स्फीति को जन्म देती है।

2. **औद्योगिक पदार्थों में कमीः–** अर्थव्यवस्था में औद्योगिक पदार्थों की कमी होने के कारण कीमतें बढ़नी शुरू हो जाती है जैसे–कच्चे माल की कमी, कुशल श्रम की कमी, पुरानी टेक्नोलॉजी आदि।

3. **लागतों में वृद्धिः–** उत्पादन लागतों में वृद्धि के फलस्वरूप वस्तुओं व सेवाओं की कीमतें बढ़ती है तथा अर्थव्यवस्था में स्फीति पैदा करती है।

(i) **उत्पादन में वृद्धिः–** कीमतें बढ़ते रहने से उत्पादकों में आशावादी वातावरण बना रहता है। वे भविष्य में अधिक लाभ की आशाएं लगाते हैं। इसलिए अधिक निवेश करते हैं।

(ii) **बचत में वृद्धिः–** मुद्रा स्फीति से पूंजीपतियों को गरीब की अपेक्षा अधिक लाभ पहुंचता है। अमीर और अधिक अमीर गरीब अधिक गरीब होता जाता है। अमीर की बचत प्रवृत्ति अधिक होने के कारण देश की कुल बचत बढ़ती है क्योंकि मुद्रा स्फीति में पूंजीपतियों व अमीरों की आय बढ़ती है।

(iii) **पूंजी निर्माण में वृद्धिः–** मुद्रा स्फीति में पूंजी निर्माण की प्रक्रिया को बल मिलता है। कीमतें बढ़ने से वास्तविक उपभोग कम होने के फलस्वरूप वास्तविक बचत बढ़ जाती है। क्योंकि कीमतें बढ़ने से **राष्ट्र** की वास्तविक

आय कम नहीं हो सकती Y = C+S इस प्रकार हर प्रकार से बचत बढ़ती है। कीमतें बढ़ते से निवेश बढ़ता है जो पूंजी निर्माण की प्रक्रिया को तीव्र कर देता है।

(iv) रोजगार में वृद्धिः– कीमतें बढ़ने से रोजगार बढ़ता है क्योंकि उत्पादन कार्य बढ़ते है।

(v) व्यर्थ पड़े साधनों का प्रयोगः– लाभ की आशा में बेकार पड़े साधनों का उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग होने लगता है। इससे देश की उत्पादन क्षमता बढ़ती है।

(vi) उत्पादकता में वृद्धिः– साधनों की सीमान्त एवम् औसत उत्पादकता बढ़ जाती है।

Unfavourable Effects of Inflation on Economic Development:-

(i) प्रतिकूल व्यापार शेषः– कीमतें बढ़ती रहने के कारण निर्यात कम व आयात बढ़ जाते हैं। इससे भुगतान शेष प्रतिकूल हो जाता है। यह देश पर विदेशी ऋण को बढ़ता है जो हानिकारक।

(ii) आर्थिक असमानता में वृद्धिः– मुद्रा स्फीति में अमीर और अधिक अमीर हो जाता है इसके विपरित गरीब और अधिक गरीब होता जाता है। दोनों वर्गों के मध्य बढ़ती यह खाई सामाजिक तनाव का कारण बनती है।

(iii) काले धन में वृद्धिः– मुद्रा स्फीति मुनाफाखोरी व भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है। क्योंकि मुद्रा स्फीति में आर्थिक क्रियाएं अधिक व तीव्र गति से बढ़ती रहती हैं, इससे काले धन में भी वृद्धि होती है।

(iv) अनिश्चितताः– कब कीमतें बढ़ने से रूक जाए या तीव्र हो जाए, इस बारे में अनिश्चितता बनी रहती है।

बाल्डरस्टोन के अनुसार, "यह हमारी सबसे बड़ी भूल है कि हम ऐसा सोचते है कि थोड़ी सी स्फीति अच्छी होती है। यदि एक बार रेंगती हुई स्फीति को स्वीकार कर लेते हैं तो कुछ समय पश्चात् ही बच्चा रेंगना बन्द करके चलने, दौड़ने तथा कूदने लगता है।"

Measures to control inflation:-

हाट्रे के अनुसार– "यदि मुद्रा स्फीति को प्रारम्भ में ही स्थापित होने की अनुमति दे दी जाये तो इसके नियन्त्रण से बाहर होने की सम्भावना रहती है।" इसकी निम्न उपायों से नियन्त्रित किया जा सकता हैः–

1. **मौद्रिक उपायः–** मिल्टन फ्रीडमैंन के अनुसार् जब मुद्रा की पूर्ति उत्पादन में वृद्धि की दर से अधिक बढा दी जाती है तो उसका परिणाम मुद्रास्फीति होता है। मुद्रा स्फीति को रोकने हेतु मुद्रा पर नियन्त्रण करना होगाः–

(i) मुद्रा की मात्रा पर नियन्त्रणः– (a) केंद्रीय बैंक द्वारा नई करेन्सी के निर्गमन पर प्रतिबंध। (b) केन्द्रीय बैंक की सरकार उधार देने पर मजबूर न करे।

(ii) साख पर नियन्त्रणः– बैंको द्वारा साख का अधिक निर्माण मुद्रा स्फीति का कारण बनता है। इसलिए केन्द्रीय बैंक विभिन्न उपाय जैसे खुले बाजार की क्रियायें, बैंक दर, सी.आर.आर. एस.एल.आर. अपनाकर बैंकों की साख निर्माण की शक्ति कम कर सकता है।

(iii) पुरानी मुद्रा का विमुद्रीकरणः– (a) पुरानी करेन्सी के स्थान पर नई करेन्सी जारी कर दी जाती है।

2. **राजकोषीय उपायः–**

(i) करो में वृद्धिः– करों की संख्या व पुराने करों की दरों में वृद्धि करके सरकार लोगों की स्वायत आय को कम कर सकती है। स्वायत आय व क्रय शाक्ति कम होने पर लोग कम वस्तुएं व सेवाएं क्रय कर पाएगें।

(ii) बचत वाले बजटः– सरकार अपनी आय से कम खर्च करती है। इससे व्यय व मांग कम हो जाती है और मुद्रा स्फीति रूक सकती है।

(iii) अनुत्पादक सरकारी व्यय में कटौती:– सरकार से अनुत्पादक खर्च करती है जैसे चुनावों आदि पर व्यय।

(iv) सार्वजनिक ऋणों में वृद्धि:– सरकार बांड जारी करके निजी क्षेत्र से ऋण ले सकती है।

(v) पुराने ऋणें को चुकाने में विलम्ब:– जिन ऋणों को चुकाने का समय हो गया है सरकार उनके लौटाने में देर कर सकती है।

3. अन्य उपाय:–

(i) उत्पादन में वृद्धि:– मुद्रा स्फीति का महत्वपूर्ण कारण वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन में कमी होता है। अतः मांग के अनुसार उत्पादन बढ़ाना चाहिए।

(ii) आयातों में वृद्धि:– वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन में कमी होता है। अतः मांग के अनुसार उत्पादन बढ़ाना चाहिए।

(iii) निर्यातों में कमी:– वस्तुओं की पूर्ति बढ़ाने के निर्यातों को भी कम किया जा सकता है। इस कारण भी मुद्रा स्फीति रूक सकती है।

(iv) उचित निवेश नीति:– उन उद्योगों में निवेश बढ़ाना चाहिए जिनमें उत्पादन अल्पकाल में बढ़ाया जा सके।

(v) कीमत नियन्त्रण व राशनिंग:– सरकार विभिन्न वस्तुओं की कीमतें स्वंय निर्धारित कर सकती है तथा उनको बढ़ाने की अनुमति नहीं देती। इसी प्रकार वस्तुओं की कमी देख कर सरकार राशन की दुकानें खोल सकती है ताकि कम कीमतों पर प्रत्येक को वस्तुएं उपलब्ध हो सकें।

(vi) बचत को प्रोत्साहन:– सरकार विभिन्न बचत योजनाएं जैसे अनिवार्य बचत योजना आदि अपना कर लोगों के खर्च को कम कर सकती है।

(vii) उचित मजदूरी नीति:– मजदूरी में बढ़ोतरी लागत जनित मुद्रा स्फीति को बढ़ाती है। मजदरूी बढती है, फिर उत्पादन लागत बढ़ती है जो कीमतों की बढ़ाती है। बढ़ती कीमतों के कारण मजदूर फिर अधिक मजदूरी की मांग करते हैं।

सारांश :–

1950 के दशक के अंतिम वर्षों में अमेरिका में अर्थशास्त्रियों में यह सारी विवाद का विषय था कि क्या मुद्रा स्फीति की माँग का ऊपर की दिशा में वृद्धि का परिणाम है। अथवा यह लागतों के ऊपर के बढ़ने के कारण है। इस विषय से जुड़े पहलू ये थे कि कीमतों में वृद्धि का दोष किसे दिया जाना चाहिए और स्फीति पर काबू पाने के लिए उपयुक्त नीतियाँ होनी चाहिए।

(अभ्यास हेतू प्रश्न)

- अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न : –
  1. वस्तु बाजार और साधन बाजार के माध्यम से अर्थव्यवस्था में .... प्राप्त किया जा सकता है।
  2. परम्परावादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार पूर्ण रोजगार स्तर पर कुल पूर्ति वक्र पूर्णत्या ....होते है।
  3. उत्पादन का स्तर केवल ....के द्वारा निर्धारित होता है।
  4. यदि अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मात्रा बढ़ती है तो लोगों को ....बढ़ती है।
- अपनी प्रगति जानिए के उत्तर :
  1. रोजगार
  2. बेलोचदार
  3. कुल योग और कुल पूर्ति
  4. कुल मांग

(अभ्यास हेतू प्रश्न)

- लघु उत्तरीय प्रश्न : –
  1. वस्तु बाजार क्या है ?
  2. मुद्रा बाजार क्या है ?
  3. एल० एम० वक्र को परिभाषित किजिए ?
  4. प्रभावपूर्ण मांग क्या है ?
- दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : –
  1. वस्तु बाजार और मुद्रा बाजार में संतुलन को परिभाषित किजिए ?
  2. आई० एस० – एल० एम० वक्र की लोचशीलता से आप क्या समझते है ?
  3. हिक्स और हैन्सन का विस्तात्मक मॉडल क्या है ?
  4. रोजगार का निर्धारण किजिए ?
  5. प्रभावपूर्ण मांग में परिवर्तन को समझाइए ?

(मुद्रास्फीति)

- अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न : –
  1. अर्थव्यवस्था में जब भी वस्तुओं और सेवाओं की मांग उनकी पूर्ति से अधिक हो तो इससे .... बढ़ता है।
  2. .... मे वृद्धि होने से पूंजी पदार्थों की मांग पर दबाव बढ़ता है।
  3. सरकार द्वारा लोगों के कल्याण हेतु किए जाने वाले विभिन्न खर्चों के फलस्वरुप भी .... के जन्म देते हैं।
  4. उत्पादन लागतो में वृद्धि के फलस्वरुप .... की कीमतें बढ़ती हैं।
  5. मुद्रास्फीति में .... की आय बढ़ती है।
  6. मुद्रास्फीति में आर्थिक क्रियाएं .... से बढ़ती रहती है।
  7. बैंक द्वारा .... मुद्रास्फीति का कारण बनता है।
- अपनी प्रगति जानिए के उत्तर : –
  1. कीमत स्तर
  2. निवेश
  3. स्फीतिक अंतराल
  4. वस्तुओं एवं सेवाओं
  5. पूंजीपतियों
  6. अधिक व तीव्र गति
  7. साख का अधिक निर्माण

(अभ्यास हेतु प्रश्न)

- लघु उत्तरीय प्रश्न : –
  1. मुद्रास्फीति से आप क्या समझते है?
  2. घाटे की वित्त व्यवस्था क्या है?
  3. सी० आर० आर० क्या है?
  4. प्रतिकूल व्यापार शेष क्या होते हैं। उदाहरण सहित बताएं?
  5. अर्थशास्त्री बेन्त हैनसन की पुस्तक का नाम बताएं?
  6. Cost Push Inflation क्या है?
  7. उचित मजदूरी नीति क्या है?
  8. पुरानी मुद्रा का विमुद्रीकरण क्या होता है?

- दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : –
  1. मुद्रास्फीति क्या है। अर्थव्यवस्था पर मुद्रास्फीति के क्या प्रभाव होते हैं?
  2. प्रत्यक्ष मुद्रास्फीति का आय, धन तथा वितरण पर क्या प्रभाव पड़ता है?
  3. मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के उपायों को विस्तार से समझाएं?
  4. मुद्रास्फीति के मांग पक्ष एवं पूर्ति पक्ष के कारणों को समझाएं?

(मौद्रिक नीति के मांग पर प्रभाव)

- अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न
  1. .... के द्वारा भी मांग को प्रभावित किया जा सकता है।
  2. मौद्रिक नीति के अंतर्गत .... परिवर्तित की जा सकती है।
  3. मौद्रिक नीति का प्रभावशाली होना .... की शक्ति पर निर्भर करता है।
  4. मुद्रा पूर्ति में वृद्धि तुरंत .... में असंतुलन उत्पन करेगी।

- अपनी प्रगति जानिए के उत्तर
  1. मौद्रिक नीति में परिवर्तन।
  2. मुद्रा की पूर्ति।
  3. I S & L M मौद्रिक गुणक।
  4. मौद्रिक बाजार।

अभ्यास हेतू प्रश्न

- लघुउत्तरीय प्रश्न
  1. I S वक्र क्या है?
  2. L M वक्र क्या है?
  3. मौद्रिक बाजार से आप क्या समझते है?
  4. केंजीयन रेंज क्या होती है?
  5. मौद्रिक नीति की परिभाषा बताइए?
  6. इंटरमिडीएट रेंज क्या है?
- दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न
  1. मौद्रिक नीति क्या है? मौद्रिक नीति का मांग पर क्या प्रभाव पड़ता है? रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट करे?
  2. I S&L M वक्र क्या है? L M वक्र की ढाल कैसे होती है तथा इसका मांग पर क्या प्रभाव होता है, रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट करे?
  3. मौद्रिक तथा राजकोषिय नीति क्या है? I S&LM वक्रों की लोचशीलता को रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट करे?

Reference Readings

- William H. Branson, Macroeconomic TheoryAnd Policy, Harper&Row Publisher, Singapore, London
- Richard T. Froyen, Macroeconomics – TheoriesAnd Policies: Macmillan Publishing Company, NewYork, London.
- Edward Shapiro, Macroeconomic Analysis, Galgotia Publishcations Pvt. Ltd. 1988.
- Rudigar Dourburch Stanley Fischer, Banson Macroeconomics, International (Student Edition)

इकाई – 3

3.0 परिचय

3.1 इकाई के उद्देश्य

3.2 एक संसोधित फिलिप्स वक्र

3.3 विवेकपूर्ण प्रत्याशाये

3.4 मकड़जाल सिद्धांत की आंशाए

3.5 विवेकपूर्ण प्रत्याशाओ की आलोचना

3.6 सारांश

3.7 अपनी प्रगति जांचि,

3.8 अपनी प्रगति जांचि, के उत्तर

3.9 अभ्यास हेतु प्रश्न

3.10 आप ये भी पढ़ सकते हैं।

परिचय

विवेकपूर्ण प्रत्याशा सिद्धांत द्वारा प्रतिपादित मुद्रा स्फीति तथा बेरोजगारी सम्बन्धी विचार विचार की व्याख्या को समष्टिगत आर्थिक सिद्धांत का मूल आधार माना जाता है। यह समष्टि अर्थशास्त्र के नाम से लोकप्रिय है। अनुकूल प्रत्याशा सिद्धांत की कीमत स्तर में परिवर्तन पहले होता है तथा नगद मजदूरी में परिवर्तन बाद में होता है। नगद मजदूरी का कीमत स्तर से कम बने रहना फार्मों के लाभों में वृद्धि करता है। इससे अल्पकाल में फर्म उत्पादन तथा रोजगार में वृद्धि करती है तथा इसके परिणामस्वरूप बेरोजगारी की दर प्राकृतिक बेरोजगारी दर की अपेक्षा कम हो जाती है।

इकाई के उद्देश्यः–

(i) फिलिप्स वक्र का गहराई से अध्ययन करना।

(ii) अनुकूल प्रत्याशा तथा विवेकपूर्ण प्रत्याशा को समझना।

फिलिप्स वक्र विश्लेषण सिद्धांत की सक्षिप्त व्याख्या ए.डब्ल्यू. (A.W. Philips) में ब्रिटेन में 1861 से और 1952 के मध्य बेरोजगारी के प्रतिशत और मजदूरी के प्रतिशत के बीच सम्बन्धित सांख्यिकीय सयकों का विश्लेषण किया। इस सिद्धांत का मुख्य लक्ष्य यह था कि मांग में वृद्धि या लागत में वृद्धि अधिक प्रभावित थी और दूसरा सिद्धांत यह था कि प्रतिबन्धक मौद्रिक या राजकोषीय नीतियां किस हद तक स्फीति को नियन्त्रण करने में सफल हो सकती है। मांग स्फीति और मौद्रिक और राजकोषीय नीति कुल मांग को रोकने में ये नीतियां अत्याधिक सफल नहीं हो पाई है। पूर्ति स्फीति को रोकने का मुख्य कारण यह है कि बढ़ता हुआ कीमत स्तर बेरोजगारी के साथ सम्बन्धित होता है। प्रतिबन्धात्मक व राजकोषीय नीति मांग अधिक्य पर रोक लगाते हुए कीमतों में तो वृद्धि कर सकती है। यदि कीमत स्तर का बनाए रखना है तो दो समस्याओं का समाधान करना पड़ता है तो बेकारी का स्तर बढ़ता है और बेरोजगारी और मुद्रा स्फीति के बीच बेकारी विनिमय को प्रकट किया गया है। फिलिप्स ने यह विश्लेषण किया कि ब्रिटेन में जब बेकारी का स्तर कम था तो मजूदरी और कीमतों के स्तर की दर बढ़ती थी। जब बेकारी की दर 5.5

प्रतिशत थी तो मजदूरी और कीमतों के स्तर परिवर्तित थे। फिलिप्स के अनुसार बेकारी और मजदूरी तथा कीमतों की दरों में परिवर्तन का सम्बन्ध उल्टा और अरेखीय (Non Pineor) था। मजदूरी और कीमतों सम्बन्ध निम्नलिखित कारणों से होता है।

1. **मजदूरों और प्रबन्धकों की सापेक्ष सौदा शक्ति** बेरोजगारों की दरों और सामान्य व्यावसायिक क्रिया परिवर्तनों के साथ मजदूर संघों प्रबन्धों को सापेक्ष सौदा शक्ति बेरोजगारों की दरों और सामान्य व्यावासिक क्रिया परिवर्तनों के साथ मजदूर संघों प्रबन्धकों को सापेक्ष सौदा शक्ति काफी मात्रा में परिवर्तन होते हैं। जब बेकारी की दर कम होती है तो श्रम का अभाव पाया जाता है और श्रमिक नकदी मजदूरी को बढ़वाने के लिए परामर्श करते हैं। इसके विपरित उंचे बेकारी के समकों से प्रायः प्रबन्धकों पर उंची मजदूरी की मांगें नहीं रखी जा सकती है।

2. **श्रम का सामान्य मांग आधिक्य** – नकद मजदूरी और बेकारी की दरों में उल्टा सम्बन्ध पाया जाता है और अन्य कारण श्रम का मांग वक्र आधिक्य पाया जाता है। यह आवश्यक नहीं कि मजदूरी में वृद्धि केवल मजदूर संघों के संगठित संघों के द्वारा की जाती है। संगठित और असंगठित मजदूरी में वृद्धि होती है तो मुख्य कारण मांग के बढ़ने के कारण होता है।

3. **श्रम बाजार में पूर्ति और मांग में असंतुलन** नकद मजदूरी और बेकारी दरों में फिलिप्स का विश्लेषण का सम्बन्ध श्रम बाजार के विभिन्न भागों में मांग और पूर्ति में असन्तुलन के कारण होता है। यदि श्रम बाजार में मजदूरों की व्यावसायिक और भौगौलिक गतिशीलता में कठिनाईयां तो कुछ विशेष क्षेत्रों में मजूदरों की कमी होने से काफी बेकारी के समय में भी मजदूरी की दरों में वृद्धि सम्भावना है कि क्योंकि मजूदरों का उन क्षेत्रों या व्यावसायों में स्थानान्तरिक होना कठिन होता है। मजूदरों की मांग उनकी पूर्ति से अधिक होती है। फिलिप्स और मजदूरों दरों और बेकारी की दरों में विखरे बिन्दु चित्र पर दर्शाया गया है कि सर्वोतम किट एक अरेखीय वक्र AA के द्वारा दिया गया है। जिसे फिलिप्स वक्र कहा जाता है।

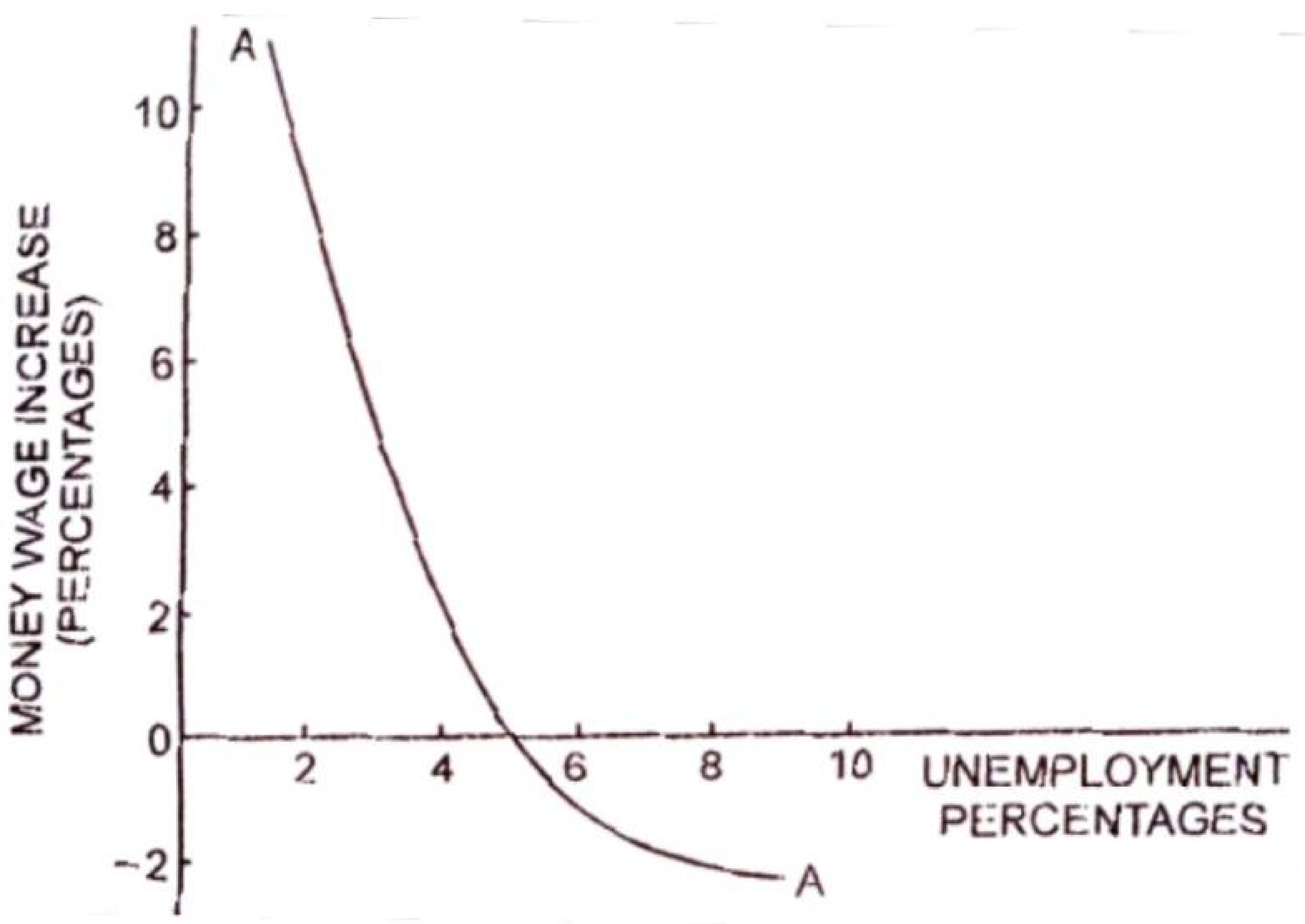

चित्र नं. 33

चित्र 33 से स्पष्ट है कि बेकारी की दर 5.5 प्रतिशत से कम है तो रिक्त स्थानों की संख्या काम ढूढने से अधिक है। श्रम की मांग की आधिक्य के कारण मजदूरी दर में वृद्धि हुई है। इसके विपरित बेकारी का प्रतिशत 5.5 प्रतिशत से अधिक था तो श्रम बाजार में पूर्ति आधिक्य के कारण मजदूरी की दर में कमी आती है।।A वक्र के आकार से प्रकट होता है कि फिलिप्स में मांग में वृद्धि और लागत में वृद्धि के तत्व को अधिक शक्तिशाली माना है। बेकारी दर

में कमी को फर्मों द्वारा श्रम की बढती हुई मांग का चिन्ह समझा जा सकता है। ऊंची मजदूरी दरों का पूर्व अनुमान करते हुए अधिक श्रम का काम पर लगाया जा सकता है। फिलिप्स ने निर्धारित किया कि मजूदरी दरों को स्थिर रखने के लिए 5.5 प्रतिशत बेकारी की आवश्यकता थी और सैम्युल्सन और सोलों में भी अमरीका के बारे में फिलिप्स वक्र फिट किया था। उनके अनुसार यदि श्रम उत्पादकता में वृद्धि 2.5 प्रतिशत बाछिक मान ली गई है तो कीमता स्थिरता को बनाये रखने के लिए बेकारी की दर 5–5 प्रतिशत आवश्यकता थी। फिलिप्स ने बताया कि बेरोजगारी की दर परिवर्तन के विश्लेषण को एक वक्र के द्वारा दर्शाया जा सकता है। चित्र नं0 33 में दर्शाया गया है। इसके X-Axis पर बेरोजगारी की दर और X-Axis पर बेरोजगारी की दर और X-Axis दर्शाया गया है। W/W के भिन्न स्तरों पर पाई जाने वाली बेरोजगारी की दर U बिन्दुओं को जोड़ने से जो वक्र बना नहीं। फिलिप्स वक्र कहलाता है।

PC वक्र स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है कि बेरोजगारी की दर में परिवर्तन और मजूदरी की दर में परिवर्तन के मध्य विपरित सम्बन्ध है। जब बेरोजगारी की दर OU_0 है तो मजदूरी की दर में वृद्धि OW_0 है।

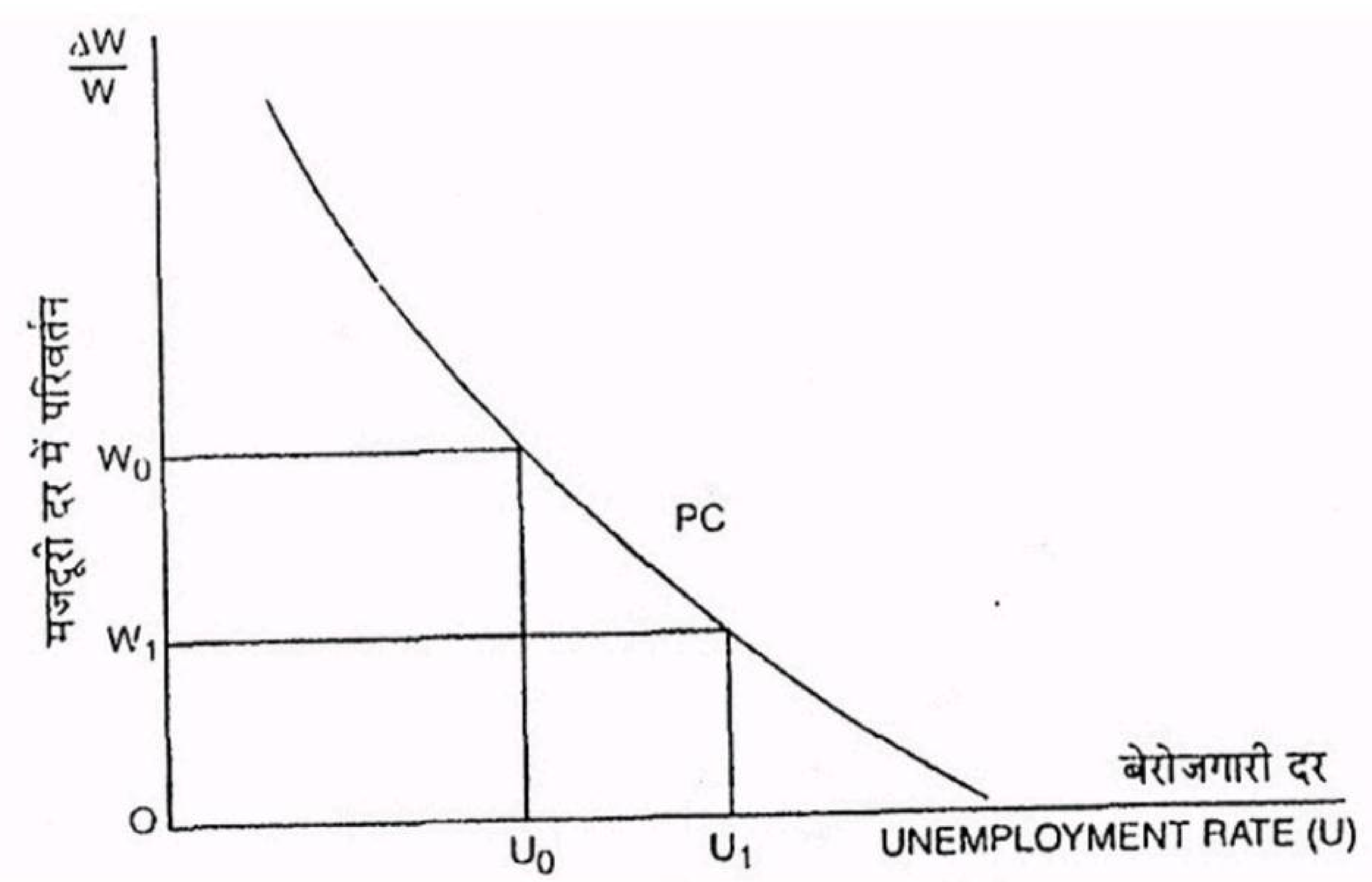

चित्र नं. 34

चित्र नं0 34 मजूदरी की बढ़कर OU_1 होती है तो मजदूरी में वृद्धि दर कम होकर OW_1 हो जाती है। दोनों के मध्य विनियम Trade off की दर कम करना चाहते है तो मजदूरी दर में वृद्धि दर अधिक सहन करनी पड़ती है। लागत या पूर्ति जनित मुद्रा स्फीति अधिक सहन करनी पड़ती है आरै उंची बेरोजगारी पर सहन कर सकते है तो मजदूरी दर कम रहेगी।

A Modified Philip Curve (एक संशोधित फिलिप्स वक्र)

फिलिप्स वक्र बेरोजगारी और मजदूरी दर में वृद्धि के मध्य सम्बन्ध स्थापित करता है। चालू वृद्धि दर मजदूरी दर मुद्रा स्फीति के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण बेरोजगारी के मध्य सम्बन्ध स्थापित करता है। मुद्रा

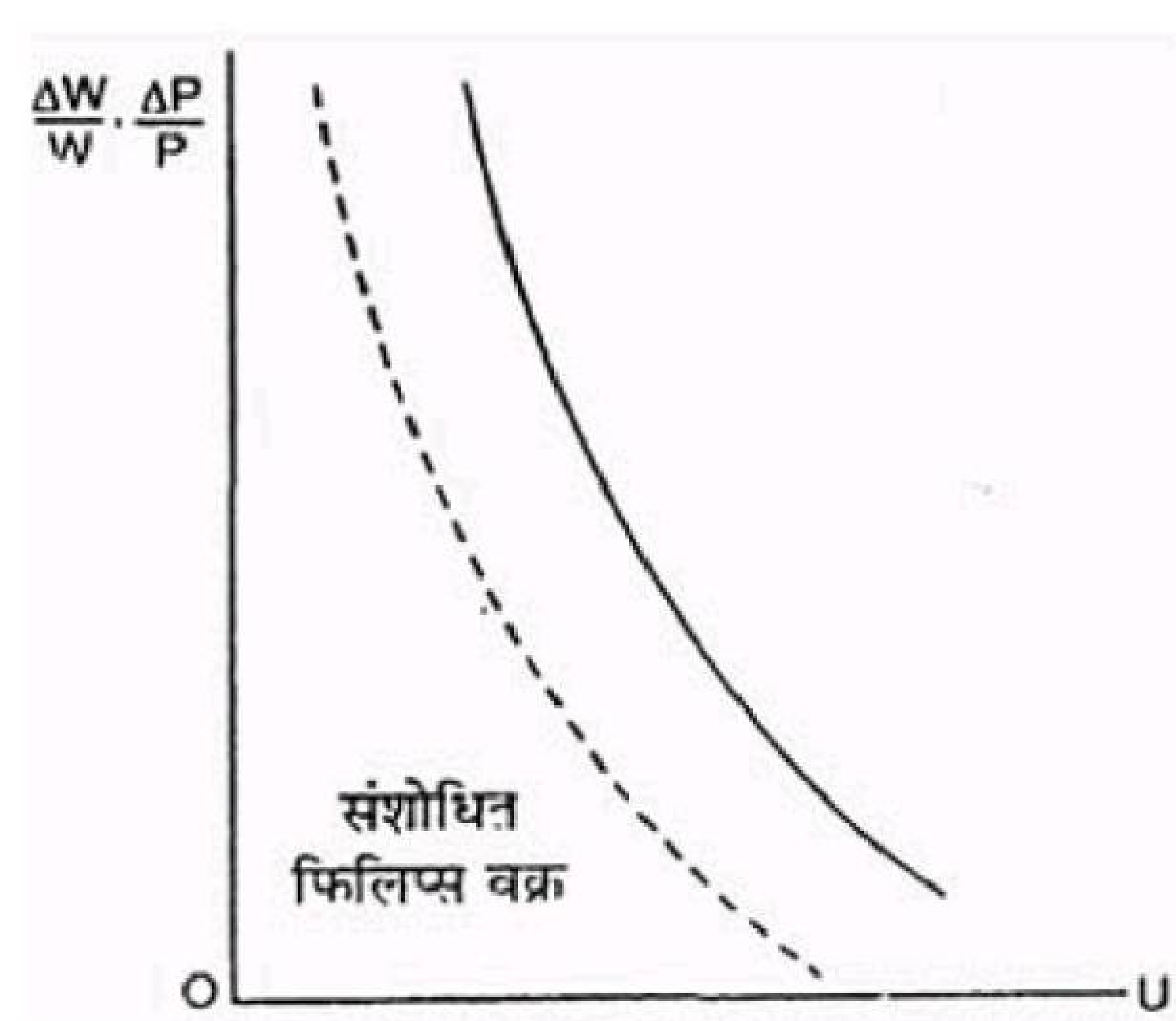

चित्र नं 35

स्फीति की दर और बेरोजगारी के दर के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने वाले वक्र को ही संशोधित फिलिप्स वक्र कहते हैं। मजदूरी की दर में वृद्धि मृदा स्फीति में कितनी वृद्धि करती है और यह निर्भर करता है। उत्पादन में वृद्धि की दर। यदि उत्पादकता उसी दर से बढ़ती है। जिस दर से मजदूरी दर में वृद्धि हुई है तो मुद्रा स्फीति में कोई बदलाव नहीं आता। फिलिप्स वक्र यथावत रहेगा परन्तु यदि मजदूरी की दर में 10 प्रतिशत वृद्धि होती है और उत्पादकता में 6 प्रतिशत की वृद्धि होती है तो मुद्रा स्फीति की दर 4 प्रतिशत बढ़ेगी न कि 10 प्रतिशत से। फिलिप्स वक्र जो मजदूरी की दर और बेरोजगारी के मध्य सम्बन्ध को व्यक्त करता है। उसी अनुपात में 6 प्रतिशत नीचे की ओर सरक जाएगा और कीमत स्तर में वृद्धि की दर और बेरोजगारी दर में सम्बन्ध प्रकट करेगा और यह टूटी हुई रेखा के माध्यम से दर्शाया गया है और यदि उत्पादकता दर स्थिर रहे और मजदूरी दर बढ़ जाए तो प्रारम्भिक फिलिप्स वक्र और संशोधित फिलिप्स वक्र समान दर से उपर सरक जायेगें।

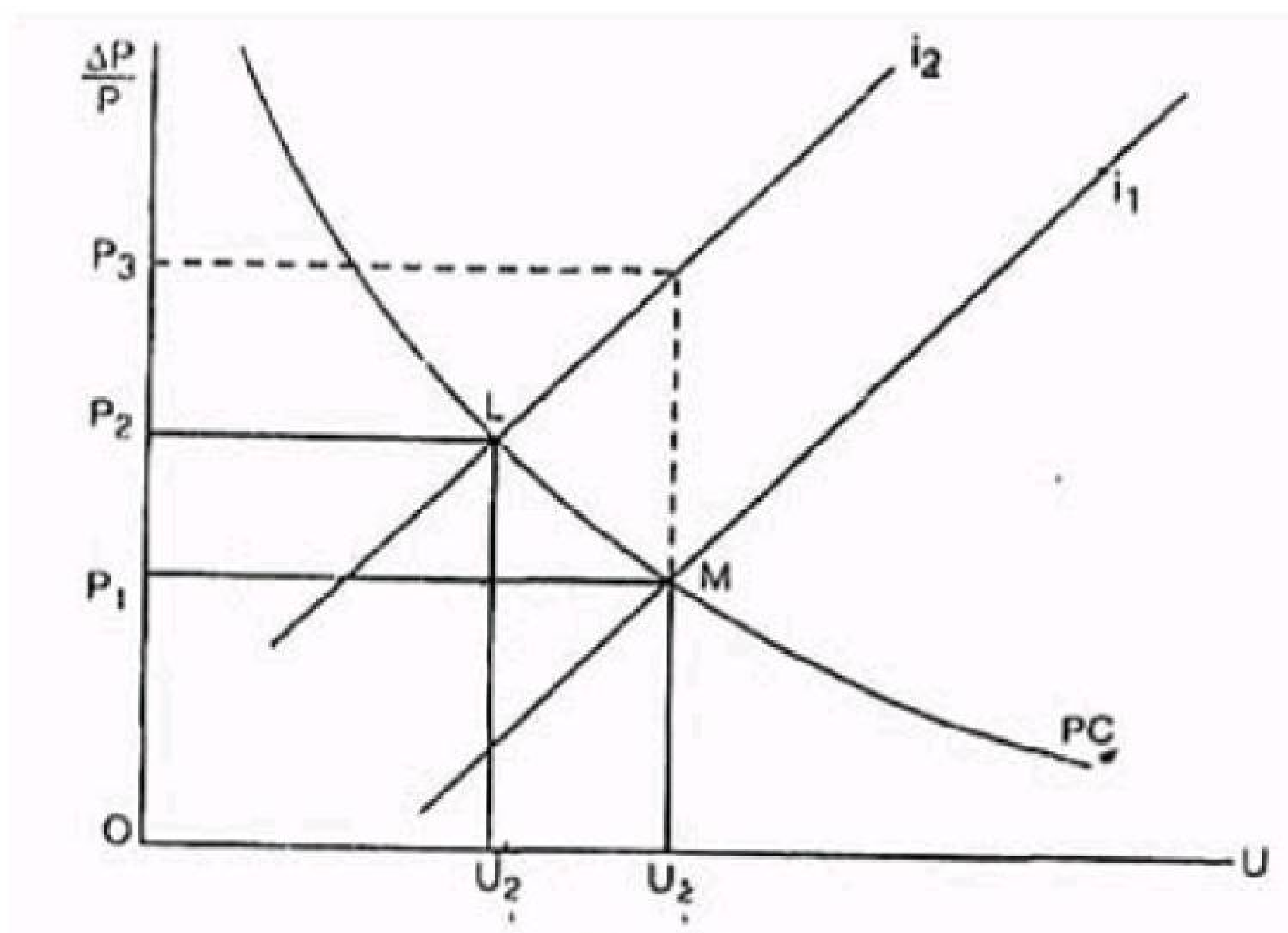

चित्र नं 36

चित्र नं0 36 के अनुसार मुद्रा स्फीति की दर P_1 और बेरोजगारी की दर U_1 निर्धारित होगी। जहां पर PC वक्र के M बिन्दु पर काटता है। यदि अर्थव्यवस्था में विस्तारवादी और मौद्रिक व राजकोषीय नीति अपनाई जाती है तो स्फीतिक दबाव सरक कर i_2 की स्थिति में पहुंच जाएगा और नया स्फीतिक वक्र Pe वक्र को L बिन्दु पर काटता है। जिससे मुद्रा स्फीति दर P_2 और बेरोजगारी की दर कम होकर U_2 हो जाती है क्योंकि यदि बेरोजगारी की दर U_1 ही रहे। तो कीमतों के P_3 तक पहुंचने की आशा बनी रहेगी। परन्तु उद्यमी कीमतों को बढ़ता हुआ देखकर उत्पादन बढ़ा लेते हैं। जिसका परिणाम बेरोजगारी दर का गिरना और मुद्रा स्फीति की दर P_2 और बेरोजगारी की दर U_2 निर्धारित हो जाएगी। मौद्रिक आय में परिवर्तन को प्रदर्शित करता है कि इसलिए यह कुल योग पक्ष प्रतिनिधि है। जबकि फिलिप्स वक्र पूर्ति वक्र पक्ष का प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है। कुल मांग और कुल पूर्ति पक्ष जहां काटते है। वहां पर वास्तविक मुद्रा स्फीति की दर वास्तविक उत्पादन और बेरोजगारी स्तर निर्धारित होती है।

फिलिप्स वक्र विनियम और गैर विनिमय दर यदि मुद्रा स्फीति की दर में स्थाई सम्बन्ध होता है। जो कि अर्थव्यवस्था में मुद्रा स्फीति और बेरोजगारी दर के मध्य विनिमय दर निर्धारित हो सकती है अर्थात एक बुराई को छोड़ने के लिए दूसरी बुराई को अपनाना पड़ता है। कम बेरोजगारी दर रखनी है तो ऊंची मुद्रा स्फीति दर सहन करनी पडेगी। मुद्रा स्फीति दर और बेरोजगारी की दर का निर्धारण मुद्रा स्फीति दबाव वक्र और फिलिप्स वक्र के काटने से होता है। यह निर्धारण दोनों वक्रों या किसी एक वक्र में परिवर्तन आने से बदल सकता है। इस तथ्य का विश्लेषण दो भागों में बांटा गया है। फिलिप्स वक्र के आधार पर बेरोजगारी की दर और मुद्रा स्फीति की दर के मध्य स्थाई विनिमय दर पाई जाती है। जिसमें फिलिप्स वक्र को अस्थाई माना गया है। उनके अनुसार यह विनिमय दर स्थाई नहीं है। विनिमय दर सभी फिलिप्स वक्र मुद्रा स्फीति दबाव वक्र काटता है। वहां बेरोजगारी की दर और मुद्रा स्फीति की दर निर्धारित हो जाती है। जैसे–जैसे मुद्रा स्फीति दबाव वक्र विस्तार स्थायी व मौद्रिक और राजकोषीय नीतियां अपनाने में बायीं ओर सरकता जाता है। उसी प्रकार मुद्रा स्फीति के बढ़ने की दर बढ़ती जाती है और

बेरोजगारी की दर कम होती जाती है। बेरोजगारी और मुद्रा स्फीति की दर के संयोग A,B,C के द्वारा दर्शाये गए हैं और जो दोनों के मध्य विनिमय दरों को दर्शाता है। अर्थव्यवस्था को इन संयोगों से ही चुनाव करना पड़ता है। जिस भी संयोग को पसन्द किया जाता है। उनके अनुसार ही मौद्रिक और राजकोषीय नीति अपनाई जाती है और उसके अनुसार एक स्फीतिक दबाव वक्र को आवश्यकता अनुसार सरकाया जा सकता है।

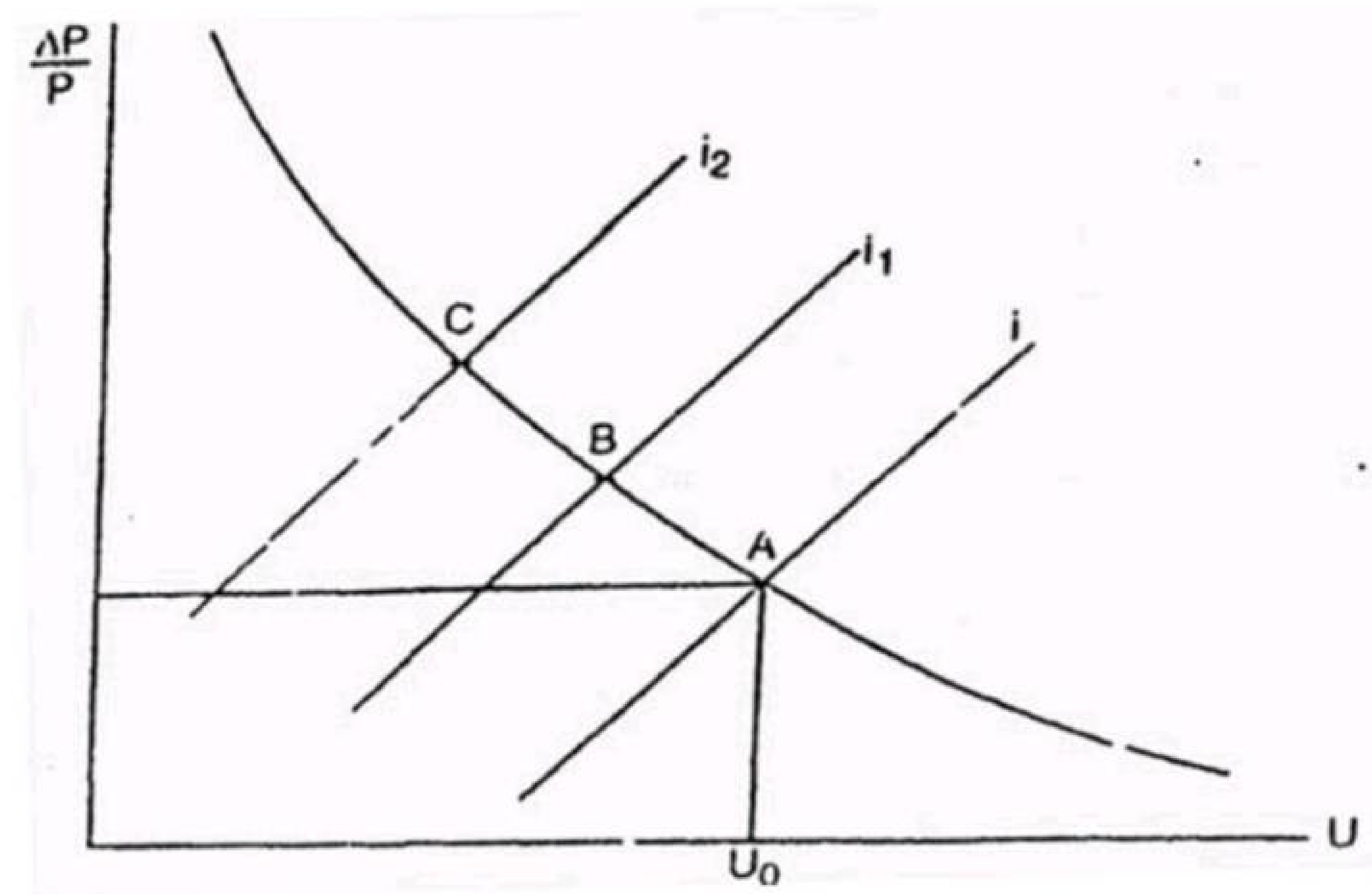

चित्र नं 37

किसी संयोग का चुनाव करते समय यह देखना होता है कि अर्थव्यवस्था का लाभ किसमें अधिक है। कम मुद्रा स्फीति दर रखकर अधिक बेरोजगारी स्वीकार करने या कम बेरोजगारी और अधिक उंची मुद्रा स्फीति सहन करने में है।

गैर विनिमय दर (The Non-Trade of Curve) फिलिप्स और फ्रीडमैंन जैसे अर्थशास्त्रियों ने फिलिप्स वक्र के मुद्रा स्फीति दर और बेरोजगारी दर के मध्य सम्बन्ध के बारे में सन्देह व्यक्त किया है। इन अर्थशास्त्रियों के अनुसार यह सम्बन्ध तभी तक सत्य है। जब तक फिलिप्स वक्र स्थाई है और जो अल्पकाल में भी स्थाई रह सकती है। जब तक अनुमानित मुद्र स्फीति और वास्तविक मुद्रा स्फीति में अन्तर है और जब यह वक्र समाप्त हो जाता है तो फिलिप्स वक्र नीचे की ओर झुका हुआ नहीं रहता है। बल्कि एक लम्बवत रेखा बना रहता है। जिस पर मुद्रा स्फीति और बेरोजगारी के मध्य विनिमय Trade Off नहीं रहता है। यह लम्बवत वक्र कैसे बन सकता है। इसके लिए प्राकृतिक बेरोजगारी की दर को जानना जरूरी है।

2. Rational Expectation : विवेकपूर्ण प्रत्याशाएं विवेकपूर्ण प्रत्याशाएं का अर्थ :– पूरे विश्व के स्तर पर बेरोजगारी और मुद्रा स्फीति का सामना करना पड़ता है और मौद्रिक और राजकोषीय नीति इस समस्याओं को हक करने में असफल रही है। इन सभी परिस्थितियों में तर्कपूर्ण आशाओं के सिद्धांत पर बल दिया है। जिसको Theory of Rotex भी कहा जाता है। The Theory of Rational Expectations का महत्व इस बात पर निर्भर करता है कि मुद्रा स्फीति और बेरोजगारी की दर साथ–साथ चलते हैं और प्रत्येक उपभोक्ता और उत्पादक सभी Rational Maximum सन्तुष्टि को प्राप्त करना चाहते हैं और उससे सम्बन्धित सूचनाओं इक्ठ्ठा करते हैं और सूचनाओं के आधार पर Expectation का निर्माण होता है।

Rotex Theory विशेष रूप से व्यक्त करती है कि यदि सूचनाएं अपूर्ण होती है तो Economics Agent Rational होने के बावजूद भी उनकी असत्यता सिद्ध होगी। Rational Expection किसी के स्तर पर Economics Variable परिवर्तन के बारे में स्पष्ट से भविष्यवाणी होती है। जो कि सूचनाओं पर आधारित होती है। Keynesian महत्व तो दिया परन्तु इसकी व्याख्या करने में असफल रहा है। फर्मों की अपनी वस्तु की Future Prices के बारे में सम्बन्ध की भविष्यवाणी करनी होती है। जिसके आधार पर वे भविष्य में उत्पादन सम्बन्धी निर्णय लेने में सफल हो सकती है। विवेकपूर्ण प्रत्याशाओं का सिद्धांत का प्रतिपादन John Muth ने किया। इनसे पहले जो भी प्रत्याशाएं दी गई थी। उनमें सबसे बड़ी कमी यह थी कि वे किसी सिद्धांत पर भी आधारित नहीं थी।

1. मकड़ी जाल सिद्धांत की आशाएं :–

Cob-web Model of Expectation – कृषि क्षेत्र से सम्बन्धित आशंसाओं को व्यक्त करता है। किसान फसल उगाते समय फसलों की कीमतों का अनुमान लगाते हैं कि जिस फसल का वे उत्पादन कर रहे हैं। उन फसलों से उनकी

अच्छी कीमतें प्राप्त होगी। यदि किसी एक फसल भी कीमत उस समय ज्यादा है अर्थात गेहूं की तो सभी किसान उस समय गेहूं की फसल का उत्पादन करेगे। क्योंकि किसानों को अच्छी कीमतें मिलने की आशाएं होती है। बाजार में अनाज की पूर्ति की मात्रा बढ़ जाती है और बाजार में गेहूं की कीमते गिर जाएगी और अगले समय में किसान यह अनुमान लगाता है कि वस्तु की कीमत बहुत कम है। किसी अन्य फसल के उत्पादन में उस भूमि का प्रयोग करने लगता है। परिणाम स्वरूप उसकी आशाओं के विपरित उस पहली वस्तु की कीमत उंची होती है क्योंकि यह वर्ष दुलर्भता का वर्ष होगा और अगला वर्ष अधिकता का वर्ष होगा। इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए उत्पादक का व्यवहार उदासीन हो जाएगा अर्थात वे ये नहीं समझते कि दूसरे किसान भी वही कर रहे हैं। जो कि एक किसान कर रहा है। इसलिए वे सभी जाल में फस जाते है। इसी कारण इसे आशाओं का मकड़ी जाल सिद्धांत कहा जाता है।

Extra polative expectation: Cab-web मॉडल की कमी थी कि किसी चर (Variable) के भूतकाल पर निर्भर करती है। इस कमी को दूर करने के लिए इस सिद्धांत में उस परिवर्तन की दिशा को आधार बनाया जाता है। इस सिद्धांत में मुद्रा स्फीति की दर के बारे में ही नहीं बल्कि मुद्रा स्फीति की दर में परिवर्तन के बारे में भी आशाएं बन रहती है।

Adoptive Expectation : Adoptive Expectation का निर्माण 1956 में किया गया था और 1956 में Cagon के द्वारा किया गया था। इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्याशांए पिछली भविष्यवाणी में कमियों के अनुसार संशोधित की जाती है। इसी प्रकार इनका नाम Error Learning Hypothesis भी है अर्थात भूतकाल में जो Expectation की गई है और ये सत्य नहीं पाई गई। तो ये देखा गया है कि आशाएं के निर्माण में कहीं कमी थी। इस कमी को दूर करके भविष्य के लिए घर फिर से Expectation का निर्माण किया जाता है।

Rational Expectation Hypothesis : Muth के अनुसार आशासाएं घटनाओं के प्रति भविष्यवाणी करती है और ये वास्तव में वैसी ही है। जैसा कि किसी आर्थिक सिद्धांत की भविष्यवाणी विशेष रूप से इस बात पर बल देती है कि भविष्य में अर्थव्यवस्था आशासाओं सूचनाओं को बेकार नहीं करती है। यह सिद्धांत परिकल्पनाओं के तीन सिद्धांत पर जोर देता है।

(i) सूचना दुलर्भ होती है और आर्थिक व्यवस्था सामान्यतः इसे व्यर्थ नहीं करती है।
(ii) प्रत्याशी (Expectation) का निर्माण इस बात पर भी निर्भर करता है कि अर्थव्यवस्था का ढांचा किस प्रकार का है जैसे कि समाजवादी, पूंजीवादी, मिश्रित अर्थव्यवस्था।
(iii) जनता प्रत्याशी द्वारा की गई भविष्यवाणी के कार्य प्रणाली पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

Rational Expectation में किसी वस्तु के कीमत उत्पादन, साधन व वस्तु की मांग व पूर्ति से सम्बन्धित होती है और अर्थव्यवस्था में इनको धन के समान समझा जाता है और सरकार का अन्य तत्वों के साथ क्या सम्बन्ध है। इसके बारे में ये भी भविष्यवाणी की जा सकती है। इसी प्रकार उपभोक्ता और उत्पादक अधिकतम सन्तुलित प्राप्त करने के लिए Expectation का प्रयोग करते हैं और विवेकपूर्ण आर्थिक इकाई जैसे कि फर्म आदि उत्पादन सम्बन्धी कार्यों का निर्माण करते है तथा आर्थिक प्रणाली सम्बन्धित सूचनाएं प्राप्त करती है।

विवेकपूर्ण प्रत्याशाओं की आलोचना –

Theory of Rational Expectation में निम्न प्रकार की कमियां रह गई है।

(i) **परिणाम की सत्यता–** विवेकपूर्ण आशाओं के आधार पर मद्रा स्फीति की दर तथा बेरोजगारी की दर के मध्य सम्बन्ध की भविष्यवाणी की गई है कि जब मुद्रा स्फीति की दर बढ़ती है तो बेरोजगारी की दर कम होगी कि अर्थव्यवस्था मुद्रास्फीति की दर बढ़ने के साथ–साथ बेरोजगारी की दर भी बढ़ी है।

(ii) **अवास्तविक तत्व –** Rational Expectation की इस बात को लेकर बहुत अधिक आलोचना की गई है कि व्यक्तिगत आशासाएं वैसी ही है। जैसे कि Economic Theory की भविष्यवाणी। यदि ऐसा हो सकता है तो विवेकपूर्ण प्रत्याशाएं का निर्माण करते समय व्यक्तियों को सभी प्रमाणित चरों की भूतकाल की कहानी मालूम नहीं होती है। परन्तु इन चरों का परस्पर क्या सम्बन्ध रहा है। उसकी जानकारी भी है।

(iii) **लोचशील कीमतें** : Rational Expection की आलोचना इस बात को लेकर की गई है कि कीमतें को लोचशील माना गया है परन्तु वस्तु की कीमत और मजदूरी आदि सम्बन्धित समझौते हो जाते हैं। जिससे इन चरों में इतना परिवर्तन नहीं होता जितना कल्पना की गई है।

(v) पूंजी तथा मुद्रा का कोई ध्यान नहीं रखा जा सकता। सिद्धांत की आलोचना की गई है कि विवेकपूर्ण प्रत्याशाओं का निर्माण किया जाता है।

(vi) **सिद्धांत की निष्पक्षता –** Muth का कहना है कि जब भविष्यवाणी की जा सकती है तो यह सभी उपलब्ध सूचनाओं पर आधारित होनी चाहिए।

(vii) **व्यवहार (Behaviour)** कुछ अर्थशास्त्री Rational Expectation को आर्थिक चरों पर निर्भर नहीं मानते हैं। उनके अनुसार व्यवहार में एक आर्थिक चरों जैसे परिवर्तित हो रहा है। उसी को सत्य माना जाना चाहिए ना कि भविष्यवाणी को सत्य मानना चाहिए।

सारांश

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट है कि स्फीतिक प्रकिया के कारण आर्थिक विकास को पूरा करने की संभावना नहीं है। अधिक से अधिक यह कहा जा सकता है कि कीमतों में बहुत धीमी वृद्धि कुछ हालात में विकास के लिए अनुकूल है। परंतु कीमतों में बहुत धीमी वृद्धि के भी अंत में विस्फोटक प्रभावों की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। इसलिए यह कम विकसित देशों के लिए एक मात्र महत्व की बात है कि एक ऊँचे दर्जे की कीमत स्थिरता को बनाए रखा जाए।

- अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न :–
  1. फिलिप्स वक्र विश्लेषण सिद्धांत की व्याख्या .... ने की।
  2. .... का पूर्व अनुमान करते हुए अधिक श्रम को काम पर लगाया जा सकता है।
  3. फिलिप्स वक्र ....में वृधि के मध्य संबध स्थापित करता है।
  4. विवेकपूर्ण प्रत्याशा सिद्धांत .... ने दिया।
- अपनी प्रगति जानिए के उत्तर :–
  1. ए० डब्लू० फिलिप्स।
  2. ऊँची मजदूरी दरों।
  3. बेरोजगारी और मजदूरी दर।
  4. प्रो० मुथ।

अभ्यास हेतू प्रश्न

- लघुउत्तरीय प्रश्न :–
  1. फिलिप्स वक्र विश्लेषण सिद्धांत क्या है ?परिभाषा बताइए ?

2. मकड़जाल सिद्धांत क्या है ?
3. प्रतिबंधात्मक मौद्रिक नीति क्या है ?
4. संसोधित फिलिप्स वक्र क्या है ?
5. विवेकपूर्ण प्रत्याशा सिद्धांत की

- दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न :–

1. फिलिप्स वक्र विश्लेषण सिद्धांत क्या है ? मजदूरी तथा कीमतों का संबध किन कारणों से होता है , रेखाचित्र द्वारा समझाइए ?
2. संसोधित फिलिप्स वक्र को रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट करे ?
3. विवेकपूर्ण प्रत्याशा सिद्धांत की विस्तारात्मक व्याख्या कीजिये तथा आलोचनाए भी बताइए ?

इकाई – 4

4.0 परिचय
4.1 इकाई के उदेश्य
4.2 व्यापार चक्र की अवस्थाएं
4.3 मंदी की अवस्था
4.4 समुत्थान
4.5 सैम्युल्सन मॉडल का गुणक त्वरक मॉडल
4.6 सीमाएं
4.7 हिक्स का व्यापारिक चक्र सिद्धांत
4.8 मान्यताएं
4.9 चढाव – उतार , ऊपरी तथा निचला मोड़ बिंदु
4.10 आलोचनाएं
4.11 व्यापारिक चक्र को नियंत्रित करने के उपाय
4.12 काल्डोर का व्यापारिक चक्र सिद्धांत
4.13 खुली अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण
4.14 सरकारी व्यय तथा कर प्रभाव
4.15 अंतर्राष्ट्रीय घटनाओ का हस्तान्तरण
4.16 विदेशी विनिमय दर
4.17 मुंडेल दृ फ्लेमिंग मॉडल
4.18 सारांश
4.19 अपनी प्रगति जांचिए
4.20 अपनी प्रगति जांचिए के उत्तर
4.21 अभ्यास हेतु प्रश्न
4.22 आप ये भी पढ़ सकते हैं।

परिचय :–

पूंजीवादी देशों में किसी अन्य समस्या सैद्धांतिकों, राजनेताओं और आम जनता को इतना प्रभावित नहीं किया जितना कि व्यापार चक्रों ने। इस जटिल घटना के कारणों के संबंध में अर्थशास्त्रियों में एक मत नहीं पाया जाता। उनकी व्याख्याएं प्राकृतिक प्रभाव से तकनीकी और अन्य बर्हिजात शक्तियों के रूप में व्यापक रूप से भिन्न – 2 है।

इकाई के उद्देश्य :–

1. सैमुअल्सन, हिक्स तथा कॉल्डोर के व्यापारिक चक्रों पर प्रकाश डालना।
2. हैरोड डॉमर तथा मुंडेल फ्लेमिंग मॉडल की विस्तृत व्याख्या करना।

व्यापारिक –चक्र

केन्ज़ के अनुसार व्यावसायिक क्रियाओं में बारी–बारी से विस्तारवादी तथा संकुचनात्मक उतार–चढ़ाव एक व्यापारिक–चक्र की विशेषता है। शूम्पिटर के अनुसार व्यावसायिक क्रियाओं में सन्तुलन से लहरनुमा उतार–चढ़ाव व्यापारिक चक्र को प्रकट करते हैं।

व्यापार–चक्र की अवस्थाएँ

(PHASES OFA BUSINESS CYCLE)

व्यापार चक्रों के उतार–चढ़ाव के दौरान राष्ट्रीय आय पूर्ण रोजगार और उंची कीमतें पाई जाती है। इसको समृद्धि काल कहा जाता है। इसके विपरित व्यापारिक चक्र के उतार–चढ़ाव के दौरान कम राष्ट्रीय आय, कम उत्पादन, कम रोजगार तथा नीचा कीमत स्तर पर पाया जाता है। और मन्दी काल में बेरोजगारी की स्थिति पाई जाती है।

व्यापार–चक्र की उपरोक्त चार अवस्थाएं: 1. तेजी (Boom or Expansion of Prosperity or Upswing); 2. अवसाद (Recession); 3. मन्दी (Depression or contraction or Downswing); तथा समुत्थान (Recovery or revival or lower turning point) पाई जाती हैं। इन अवस्थाओं की समयावधि निश्चित नहीं होती है। विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं की आर्थिक उन्नति सन्तुलित पथ के अनुसार न होकर इन उतार–चढ़ाव के माध्यम से होती रही है। यह जरूरी नहीं है कि ये व्यापारिक चक्र विभिन्न देशों या समयावधियों में बिल्कुल एक जैसे हों। व्यापारिक चक्र विभिन्न देशों में विभिन्न प्रकार के होते हैं शुम्पीटर ने अपने पुस्तक Trade cycle ने व्यापार चक्र सम्बन्धी अवस्थाएं पाई जाती है। और अर्थव्यवस्था में एक चक्रीय प्रभाव को जन्म देती है।

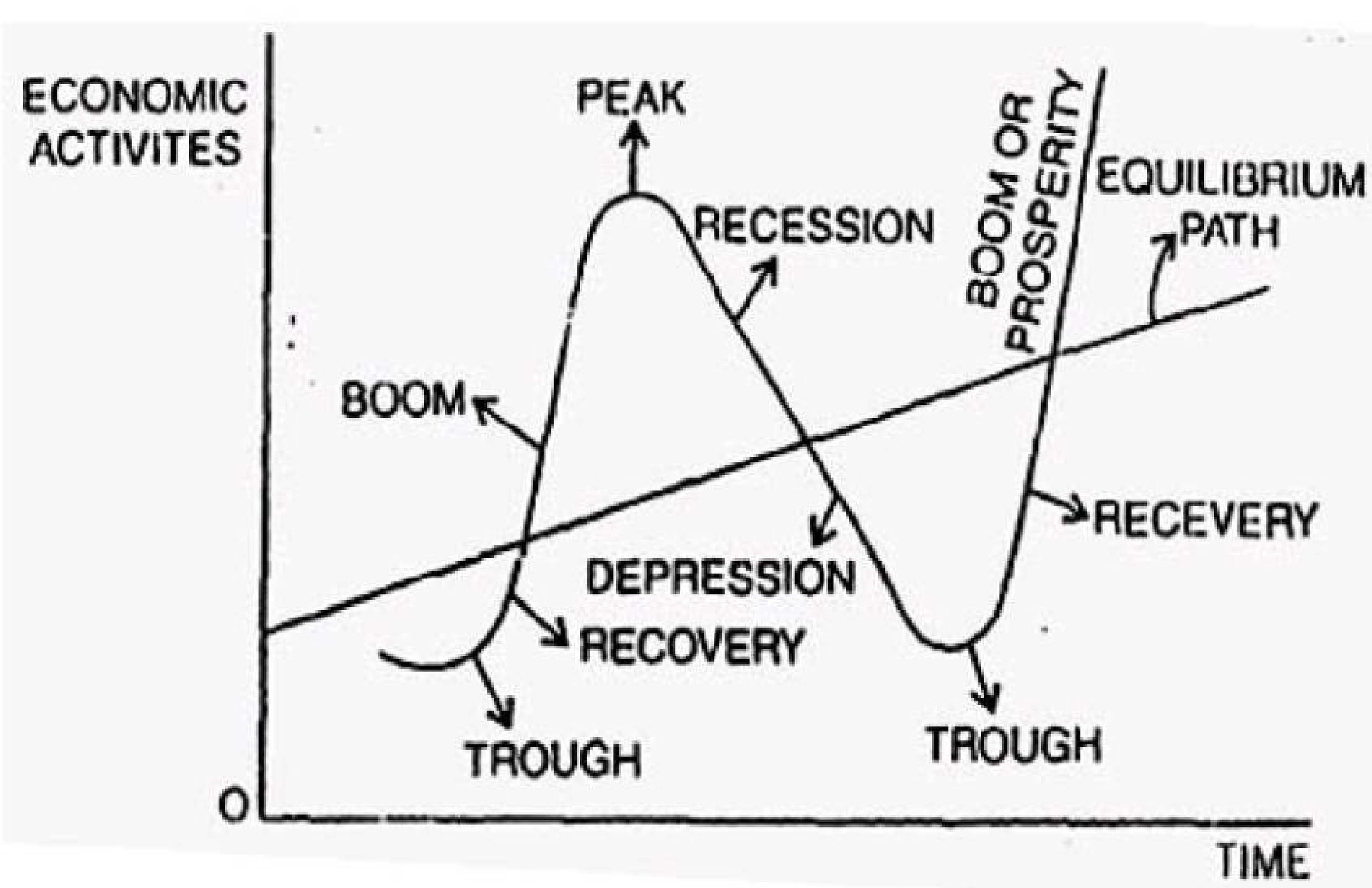

चित्र नं 38

तेजी (Boom or Prosperity) इस अवस्था में आय, रोजगार, माँग व कीमतें आदि ने केवल ऊंचे स्तर पर होती हैं बल्कि वे बढ़ भी रही होती हैं। इस अवस्था में वस्तुओं की कीमतें तेजी से बढ़ती हैं परन्तु साधनों की आय जैसे मजदूरी, ब्याज दर, लगान आदि इतनी तेजी से नहीं बढ़ती हैं। अर्थात् वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि की तुलना में उत्पादन–लागत कम बढ़ती है। इससे उत्पादकों के लाभ बढ़ते रहते हैं। अर्थव्यवस्था में आशावादी वातावरण छा जाता है तथा निवेश व अन्य आर्थिक क्रियाओं का तेजी से विस्तार होता है। इसमें मुद्रास्फीति तथा पूर्ण रोज़गार से अधिक वाली अवस्था उत्पन्न हो जाती है। यह अवस्था सन्तुलित पथ से उपर तथा चोटी (Peak) के बीच की अवस्था होती है।

अवसाद (Recession) जब आर्थिक क्रियाएँ उच्चतम सीमा (Peak) को प्राप्त करने बाद नीचे गिरना शुरू करती हैं तो वह अवसाद की अवस्था कहलाती है। यह अवस्था अपेक्षाकृत कम समय अवधि की होती है। इसका विस्तार उच्चतम सीमा से सन्तुलन पथ तक का होता है। इस अवस्था में संकुचनवादी शक्तियां विस्तारवादी शक्तियों पर विजय प्राप्त कर लेती हैं तथा चक्र को नीचे मोड़ने में सफल हो जाती हैं। इसके अन्तर्गत कीमतें गिरने लग जाती हैं जो फर्मों के लाभ को कम करती रहती हैं। कुछ फर्में अपना उत्पादन कम कर देती हैं तथा अन्य बन्द कर देती

हैं। अतः इस अवस्था में एक ऐसी प्रक्रिया शुरू हो जाती है जिसमें निवेश, रोजगार, आय, माँग तथा कीमतें इत्यादि सभी निरन्तर गिरते रहते हैं।

मन्दी **(Depression)** इस अवस्था में लोगों की क्रयशक्ति में कमी के कारण कीमतें गिरती रहती हैं। सामान्य आर्थिक क्रियाओं में निरन्तर गिरावट की प्रक्रिया अर्थव्यवस्था में अति उत्पादन, बेरोज़गारी आदि समस्याओं को और गम्भीर बना देती है। सामान्य आर्थिक क्रियाओं में गिरावट के कारण साख का संकुचन होता जाता है। ब्याज दर काफी नीचे आ जाती है परन्तु निवेश नहीं बढ़ा पाता क्योंकि उद्यमियों में निराशावादी वातावरण छाया रहता है। अतः मन्दी की विशे**ष**ता यह है कि इस अवस्था में बड़े पैमाने पर बेरोज़गारी, कीमतों में सामान्य गिरावट के कारण लाभ, मजदूरी, ब्याज दर, उपभोग, निवेश, बैंक जमा व साख सभी निरन्तर गिर कर निम्नतम सीमता (Trough) तक पहुंच जाते हैं।

समुत्थान (Recovery or Revival) मन्दी काल के कुछ समय बाद कुछ वस्तुओं की मांग करनी पड़ती है जो उत्पादन, रोज़गार आदि को बढ़ावा देती है तथा समुत्थान की अवस्था को जन्म देती है। जैसे कम टिकाऊ पदार्थ (Semi-durable goods) कुछ समय बाद समाप्त हो जाते हैं तथा इन पदार्थों की मांग अर्थव्यवस्था में अपने आप बढ़ जाती है। इस बढ़ी हुई मांग को पूरा करने के लिए निवेश बढ़ता है जो आय व उत्पादन तथा रोज़गार को बढ़ाता रहता है। इससे उद्योगों का उत्थान शुरू हो जाता है। इससे पूँजीगत पदार्थ के उद्योगों में भी उत्थान शुरू हो जाता है। तथा अर्थव्यवस्था में आशावादी वातावरण शुरू हो जाता है। व्यावसायिक आशंसाएं बढ़ जाती हैं तथा निवेश बढ़ने लग जाता है। इस अवस्था में साख का विस्तार होने लग जाता है। इस प्रकार निवेश, आय, उत्पादन, रोज़गार, मांग, कीमतें आदि सभी एक–दूसरे को निरन्तर बढ़ाती रही हैं। अन्ततः समुत्थान की अवस्था तेजी या सम्पन्नता (Prosperity) की अवस्था में प्रवेश कर जाती है।

सैम्युल्सन मॉडल का गुणक–त्वरक मॉडल

(SAMUELSON MODEL OR MULTIPLIER-ACCELERATOR MODEL)

केन्ज़ का व्यापारिक–चक्र सिद्वान्त गुणक पर निर्भर करता है। परन्तु गुणक तथा त्वरक की अंतक्रिया व्यापारिक–चक्र सिद्वान्त के लिए अधिक महत्वपूर्ण है। केन्ज़ सिद्वान्त में त्वरक की अवहेलना की गई है जो इसकी मुख्य कमजोरी मानी जाती है। सेम्युलसन के अनुसार गुणक अकेला व्यापारिक चक्र की पूर्ण व्याख्या नहीं कर सकता। व्यापारिक चक्र की पूर्ण व्याख्या गुणक तथा त्वरक की अंतक्रियाओं द्वारा ही की जा सकती है। इस मॉडल की मुख्य

मान्यताएँ निम्न प्रकार हैं:

- वर्तमान काल (t) का उपभोग व्यय पूर्व काल (t-1) की आय से सम्बन्धित होता है।
- वर्तमान काल का निवेश (I) पूर्वकाल की आय (Y_{t-1}) तथा वर्तमान आय (Y_t) पर निर्भर करता है।
- इस मॉडल में बाह्य तत्त्व सरकारी व्यय के रूप में शामिल किया गया है जो स्थिर माना गया है।
- गुणक तथा त्वरक की सभी मान्यताएँ इस मॉडल की भी मान्यताएँ समझी जाती हैं।

निवेश में परिवर्तन होने से कुल आय या कुल मांग में परिवर्तन गुणक के प्रभाव से आता है। गुणक का मूल्य सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (MPC) पर निर्भर करता है। परन्तु गुणक के द्वारा जब आय में वृद्धि होती है तो त्वरक (Accelerator) द्वारा प्रेरित निवेश (Induced Investment) में वृद्धि होती है। त्वरक का आकार या मूल्य पूँजी–उत्पादन अनुपात (Capitaloutput Ratio) अथवा W के आकार या मूल्य पर निर्भर करता है। इस प्रकार इन

दोनों क्रियाओं अर्थात् गुणक तथा त्वरक के परस्पर सम्बन्धों या अन्तर्क्रिया (Interaction) के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था में अस्थिरता रहती है अर्थात् चक्र आते रहते हैं। इसको निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

स्वतन्त्र निवेश (autonomous investment) में वृद्धि कर दी जाती है जो स्थिर रहती है। इसके गुणक के द्वारा आया (Y) में वृद्धि होगी। यह वृद्धि कितनी होती है यह स्वतन्त्र निवेश (I_a) की मात्रा तथा गुणक के मूल्य पर निर्भर करता है। आय व माँग में वृद्धि से प्रेरित निवेश (induced investment) बढ़ेगा। प्रेरित निवेश में यह वृद्धि त्वरक (W) के आकार अर्थात् पूँजी–उत्पादन अनुपात के आकार पर निर्भर करता है। अब प्रेरित निवेश में वृद्धि से आय में और वृद्धि होगी जिससे उपभोग की बढ़ता जायेगा। उपभोग (C) में वृद्धि से आगे आय में और वृद्धि होगी जिससे उपभोग भी बढ़ता जायेगा। उपभोग (C) में वृद्धि से आगे आय में और वृद्धि होती जायेगी। जिससे प्रेरित निवेश और बढ़ेगा। इस प्रकार यह अन्तक्रिया चलती रहेगी। अतः गुणक तथा त्वरक की इस अन्तक्रिया के माध्यम से अर्थव्यवस्था में स्वतः ही बिना किसी बाहरी शक्ति के आय, उपभोग तथा निवेश में परिवर्तन होते रहते हैं तथा व्यापारिक–चक्र उत्पन्न होते रहते हैं। अर्थ–व्यवस्था में व्यापारिक–चक्र गहरा होगा या हल्का होगा, यह सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति (b) तथा पूँजी–उत्पादन अनुपात अथवा त्वरक (W) की मात्रा पर निर्भर करता है। गुणक तथा त्वरक की अन्तर्क्रिया मॉडल को निम्न समीकरणों के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है:

$$Y_t = C_t + I_t \quad \text{... (i)}$$

$$C_t = C_a + b\,(Y_{t-1}) \quad \text{... (ii)}$$

$$I_t = I_a + w\,(Y_{t-1} - Y_{t-2}) \quad \text{... (iii)}$$

समीकरण (i), (ii) तथा (iii) में किसी t वर्ष में क्रमशः आय (Y_t), उपभोग (C_t) तथा निवेश (I_t) को व्यक्त करते हैं। C_a = स्वतन्त्र उपभोग तथा I_a = स्वतन्त्र निवेश के सूचक हैं। b = सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति तथा w = पूँजी–उत्पादन अनुपात या त्वरक है। समीकरण (ii) में उपभोग गत वर्ष की आय (Y_{t-1}) का फलन माना गया है अर्थात् उपभोग में एक अवधि का अन्तर (One period lag) माना गया है। जबकि प्रेरित निवेश (Induced Investment) में गत वर्ष ($_{t-1}$) में आय में हुई वृद्धि का फलन माना गया है। अर्थात् प्रेरित निवेश को गत दो अवधियों की आय में अन्तर (two past periods gap) का फलन (w (Y_{t-1}-T_{t-2})) माना गया है। समीकरण (ii) तथा (iii) को समीकरण (i) में प्रतिस्थापित करने पर राष्ट्रीय आय (Y_t) के स्तर का निम्न समीकरण प्राप्त होता है:

$$Y_t = C_a + b\,(Y_{t-1}) + I_a + w\,(Y_{t-1} - Y_{t-2}) \quad \text{...(iv)}$$

अर्थव्यवस्था में स्थैतिक सन्तुलन, जिनमें सभी वर्षों की आय समान रहती है, की अवस्था में समीकरण (iv) को निम्न प्रकार प्रकट किया जा सकता है:–

$Y = C_a + b\,(Y) + I$ इसका कारण यह है कि स्थैतिक सन्तुलन की दशा में विभिन्न वर्ष की निर्धारित राष्ट्रीय आय का सन्तुलन स्तर स्थिर ($Y_t = Y_{t-1} = Y_{t-2}$) रहता है। इस अवस्था में समयावधि अन्तर (time lags) समाप्त हो जाते हैं तथा त्वरक शून्य हो जाता है। यदि त्वरक धनात्मक है तो समीकरण (iv) एक असन्तुलित आय के उस पथ को व्यक्त करता है जो आय को सन्तुलन स्तर से दूर या उसकी ओर ले जाता है।

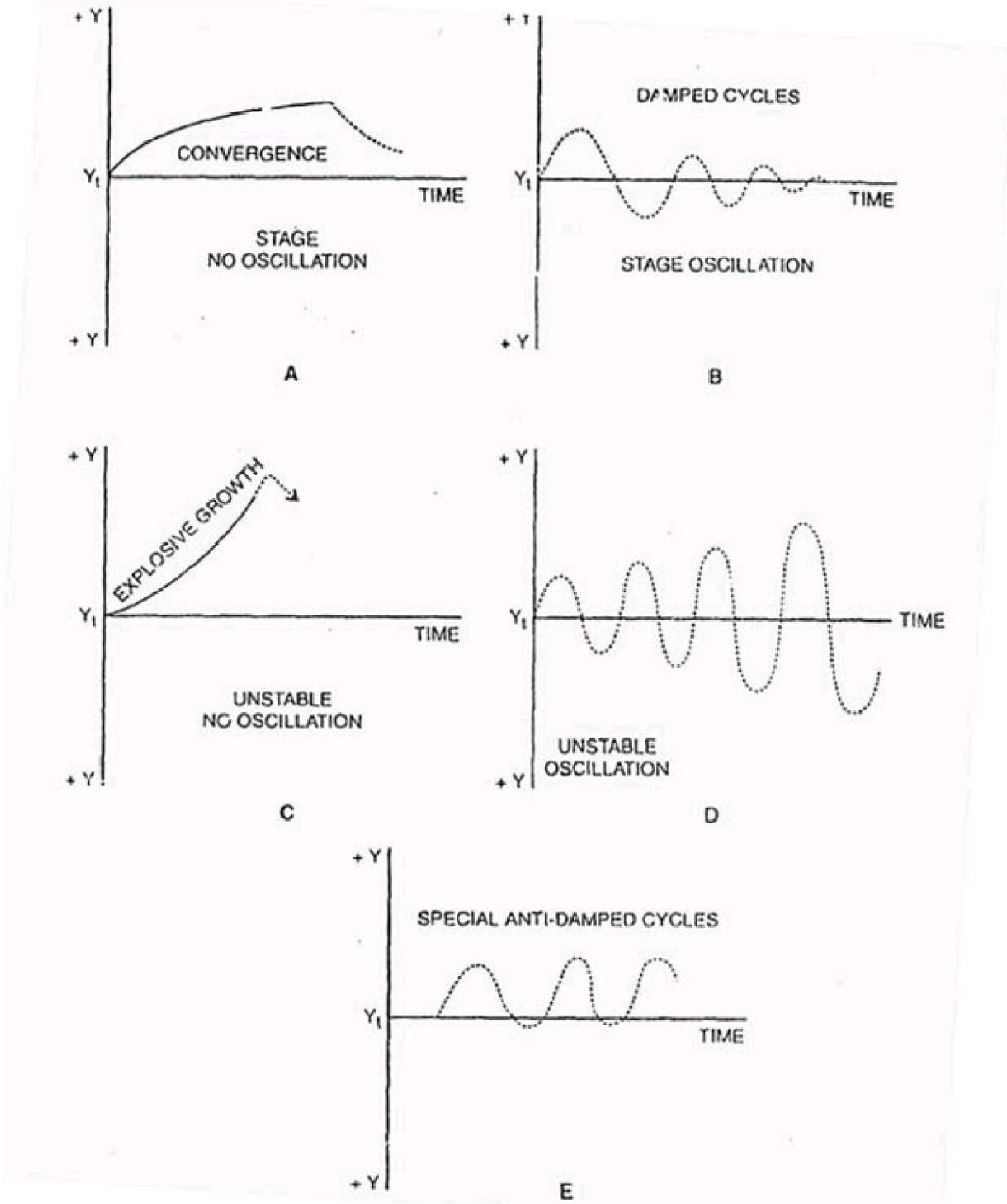

चित्र नं 39

सैम्युलल्सन ने अपने लेख में आय के उन विभिन्न पथों को दर्शाया है जो आय सीमान्त प्रवृत्ति (b) तथा त्वरक (w) के विभिन्न मूल्यों के संयोग पर अपना सकती है। यह तभी हो सकता है जब पूर्व सन्तुलन की अवस्था को स्वतन्त्र व्यय (autonomous Expenditure) द्वारा असन्तुलित कर दिया जाता है। इन पथों को निम्न पांच चित्रों की सहायता से प्रकट किया जा सकता है। जिनमें एक विशे**ष** अवस्था (Special Anti-Damped Cycle) को भी दर्शाता हैः चित्र 39 के।भाग में आय नीचे या ऊपर की ओर घटती दर से बढ़ती है तथा एक नये सन्तुलन को प्राप्त करती है। भाग

B दर्शाता है कि आय में उतार चढ़ाव विभिन्न चक्रों के माध्यम से होता है तथा प्रत्येक अगला चक्र छोटा हो जाता है व अन्त में व्यापारिक–चक्र समाप्त हो जाता है। भाग C में व्यापारिक चक्र बढ़ता जाता है। भाग C में आय ऊपर या नीचे बढ़ती दर से परिवर्तित होता है। भाग E में (एक विशे**ष** अवस्था) आय में उतार–चढा़व समान रूप से होता है। इतना ही नहीं प्रोफैसर सैम्युलसन ने आगे यह भी दर्शाया है कि गुणक तथा त्वरक के विभिन्न मूल्यों के संयोगों द्वारा आय में होने वाले विभिन्न प्रकार के उतार–चढ़ावों को दर्शाया जा सकता है। सैम्युलसन द्वारा प्रस्तुत यह निम्न सारणी 1 स्थिति को और भी स्पश्ट कर देती हैः

Table : 1 (Unit : One Dollar)

Period	b = .5 w = 0 Income Path	b = .5 w = 2 Income Path	b = .6 w = 2 Income Path	b = .8 w = 4 Income Path
1	1.00	1.00	1.00	1.00
2	1.50	2.50	2.80	5.50
3	1.75	3.75	4.84	17.80
4	1.87	4.12	6.35	56.20
5	1.93	3.43	6.62	169.84
6	1.96	2.03	5.30	500.52
7	1.98	0.91	2.59	1459.59
8	1.99	0.11	-0.69	4227.70
9	2.0	6.21	-3.36	12242.12

Table : 1 की व्याख्या निम्न प्रकार की जा सकती है :

1. जब b = .5 तथा w = 0 होता है तो आय (Y) पर केवल गुणक प्रभाव होता है तथा आय बढ़ती जाती है। यहां त्वरक शून्य है। इस अवस्था को चित्र में। भाग द्वारा दर्शाया गया है। इस अवस्था में आय में उतार–चढ़ाव नहीं होता है। एक बार व्यय में वृद्धि करने से आय गुणक के माध्यम से बढ़ती है तथा अन्ततः उपभोग में वृद्धि

समाप्त होने पर आय गिर कर प्रारम्भिक स्तर को प्राप्त करती है। चित्र 41 का भाग। भी इस अवस्था में दर्शा रहा है।

2. जब b = .5, w = 1 होता है (यह Table 1 में नहीं दर्शाया गया है) तो यह चित्र 2 के B भाग की तरह व्यापारिक चक्र उत्पन्न करती है जो कम शक्तिशाली (Damped) होता जाता है।

3. जब b = .5, w = 2 होता है तो यह निरन्तर व्यापारिक–चक्र को उत्पन्न करता है।

4. जब b = .6, w = 2 होता है तो आय हमेशा चक्रवृद्धि दर (Compound growth rate) से बढ़ती जाती है जैस कि चित्र 39 के भाग D द्वारा दर्शाया गया है। उपरोक्त 2 से 5 प्रकार की अवस्थाएँ सतत व्यापारिक–चक्र को उत्पन्न करती हैं जो अर्थ–व्यवस्थाओं के वास्तविक व्यवहार की ओर संकेत करती हैं। ये व्यापारिक चक्र आन्तरिक शशक्तियों (endogenous factors) पर निर्भर करती हैं या स्वयंजनित हैं। इन व्यापारिक चक्रों को पूर्ण रूप से समाप्त किया जा सकता है ऐसा नहीं कहा जा सकता है। परन्तु कुछ उचित राजकोषीय व मौद्रिक के द्वारा इनके आकार को कम किया जा सकता है। उपरोक्त परिणामों को चित्र 39 में संक्षिप्त रूप में दर्शाया जा सकता है। चित्र 39 का। भाग केवल गुणक प्रभाव है क्योंकि यहां त्वरक का मूल्य शून्य है। इस चित्र का B भाग व्यापारिक चक्र का आकार कम होता (Damped Oscillations) दर्शा रहा है। भाग C विस्फोटक व्यापारिक–चक्र को दर्शा रहा है। भाग D राष्ट्रीय आय में चक्र वृद्धि दर से होती वृद्धि को दर्शा रहा है। अतः गुणक–त्वरक की अन्तर्क्रिया विभिन्न प्रकार के व्यापारिक चक्रों को जन्म देने में सक्षम है। इन चक्रों के आकार गुणक तथा त्वरक के मूल्यों पर निर्भर करते हैं। व्यापारिक–चक्र का गुणक–त्वरक सिद्धान्त आगे हिक्स तथा हैन्सन (Hansen) के सिद्धान्तों को जन्म देता है।

सीमाएँ (Limitations) – मुख्य सीमाएं निम्न प्रकार हैं :

1. यह सिद्धान्त स्वतन्त्र व्यय में की गई एक बार की वृद्धि को स्थिर मानता है परन्तु सरकारी व्यय बढ़ता रहता है। इस अवस्था में यह सिद्धान्त चक्र की व्याख्या नहीं कर सकता है।

2. इस सिद्धान्त में बाहरी तत्त्वों जैसे युद्ध आदि संकट को शामिल नहीं किया गया है।

3. यह सिद्धान्त व्यवहारिक कम तथा सैद्धान्तिक अधिक माना जाता है।

4. इसमें b तथा w को स्थिर माना है जो वास्तव में बदलते रहते हैं।

5. व्यापारिक–चक्र की समयावधि नहीं दी गई। इन सीमाओं के होते हुए भी सिद्धान्त–चक्र की भली–भांति व्याख्या करता है तथा नये सिद्धान्तों की उत्पत्ति करने में सहायक सिद्ध हुआ है।

हिक्स का व्यापारिक चक्र सिद्धान्त (HICK's THEORY OF TRADE CYCLES)

प्रोफैसर हिक्स ने भी यह व्याख्या 1950 में अपनी पुस्तक। Contribution to the Theory of theTrade Cycle में की है। हिक्स ने भी सैम्युल्सन की तरह गुणक तथा त्वरक की अन्तर्क्रिया द्वारा व्यापारिक चक्रों की घटने की व्याख्या की है। इन दोनों में अन्तर यह है कि हिक्स ने व्यापारिक–चक्र को आर्थिक विकास से जोड़ दिया है। उन्होंने व्यापारिक–चक्र की समस्या को एक विकासमान अर्थव्यवस्था (Growing Economy) की समस्या माना है। अर्थात् एक ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें आर्थिक उतार–चढ़ाव एक बढ़ती प्रवृत्ति। rising trend के इर्द–गिर्द होते हैं। इस प्रकार हिक्स का व्यापारिक–चक्र मॉडल व्यापारिक चक्र सिद्धान्त को आर्थिक विस्तार के साधनों से जोड़ने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मॉडल में स्वतन्त्र निवेश (Autonomous investment) को विकास का साधन (growth factor) माना गया है जो बढ़ती जनसंख्या तथा तकनीकी प्रगति के अन्तर्गत गति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः

हिक्स के मॉडल में जो धारणाएं महत्वपूर्ण हैं वे इस प्रकार हैं: सन्तुलित विकास दर (Warranted rate of growth) अर्थात् वास्तविक बचत तथा वास्तविक निवेश में सन्तुलन, प्रेरित व स्वतन्त्र निवेश तथा गुणक–त्वरक अन्तर्क्रिया की परिक्रियाएं पाई जाती है। स्वतन्त्र निवेश तथा प्रेरित निवेश में अन्तर इस प्रकार किया गया है कि प्रेरित निवेश उत्पादन स्तर में परिवर्तन का तथा स्वतन्त्र निवेश वर्तमान उत्पादन स्तर का फलन है। हिक्स स्वतन्त्र निवेश में सार्वजनिक निवेश को सम्मिलित करता है जो आविष्कार होने के साथ–साथ बढ़ता है। हैरोड ने इसे दीर्घकालीन निवेश (Long range investment) कहा है।

मान्यताएँ (Assumptions) अपने व्यापारिक–चक्र सिद्धान्त को विकसित करने के लिए हिक्स ने निम्न मान्यताएं दी है:

1. हिक्स ने एक प्रगतिशील अर्थव्यवस्था की कल्पना की है जिसमें स्वतन्त्र निवेश नियमित दर से बढ़ रहा होता है ताकि व्यवस्था में सन्तुलन बना रहे।
2. बचत तथा निवेश दरों में वृद्धि अर्थव्यवस्था को संतुलन पथ से दूर ले जाती है।
3. हिक्स ने गुणक तथा त्वरक के मूल्यों को स्थिर माना है।
4. उत्पादन को पूर्ण रोज़गार स्तर से ज्यादा नहीं बढ़ाया जा सकता है।
5. त्वरक का मूल्य इकाई से अधिक होता है तथा कुल निवेश कभी भी शून्य से नीचे नहीं गिरता है।

चढ़ाव–उतार–ऊपरी तथा निचला मोड़ बिन्दु

(UPSWING DOWNSWING-UPPERAND LOWER TRUNING POINTS)

चढ़ाव (upswing) के अन्तर्गत गुणक तथा त्वरक की मिली–जुली क्रिया से आय बढती है। अर्थव्यवस्था में गुणक त्वरक की अन्तर्किया से आय प्रजनन तथा निवेश की एक निरन्तर बढ़ती प्रक्रिया प्राप्त होती है जिसको 'leverage effects' कहा जाता है। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है जब तक पूर्ण रोज़गार का सीमा बिन्दु (full employments ceiling point) प्राप्त नहीं हो जाता। एक गतिशील अर्थव्यवस्था (Dynamic economy) में यह पूर्ण रोज़गार सीमा बिन्दु ऊपर सरकता रहता है, इसलिए स्थैतिक अर्थव्यवस्था की तुलना में इसको प्राप्त करने में अधिक समय लग सकता है। परन्तु जब एक बार यह उच्चतम सीमा (Ceiling) छू ली जाती है तो चक्र नीचे की ओर रूझान कर देता है।

आय का ऊपर वाला मोड़ बिन्दु (turning point) कुछ साधनों जैसे जनसंख्या, तकनीकी, पूँजी स्टॉक आदि द्वारा निर्धारित होता है। विस्तार की प्रक्रिया उच्चतम सीमा से टकराती है तथा नीचे की ओर मुड़ जाती है या कुछ अवस्थाओं में जब गुणक–त्वरक की अन्तक्रिया इतनी मजबूत नहीं होती तो सीमा को छूने से पहले ही नीचे की ओर मोड़ शुरू हो जाता है। निवेश में कटौती निरन्तर होती जाती है परन्तु यह कटौती अनन्त तक नहीं होती क्योंकि अर्थव्यवस्था की निचली सीमा (Lower limit) भी होती है जो इस बात निर्भर करती है कि कुल निवेश शून्य से नीचे नहीं गिर सकता। इस नीचली सीमा पर कुछ अनिवार्य मूल निवेश, जो मशीनों के रख–रखाव आदि पर खर्च अवश्य करना पड़ता है। इतना ही नहीं स्वतन्त्र निवेश इस अवस्था में अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होता है तथा यह अनिवेश (Disinvestment) की मात्रा से अधिक होता है। इस प्रकार शुद्ध निवेश में वृद्धि राष्ट्रीय आय को ऊपर बढ़ाने का कारण बनता है। हिक्स का व्यापारिक चक्र सिद्धान्त निम्न रेखाचित्र के द्वारा समझा जा सकता है :

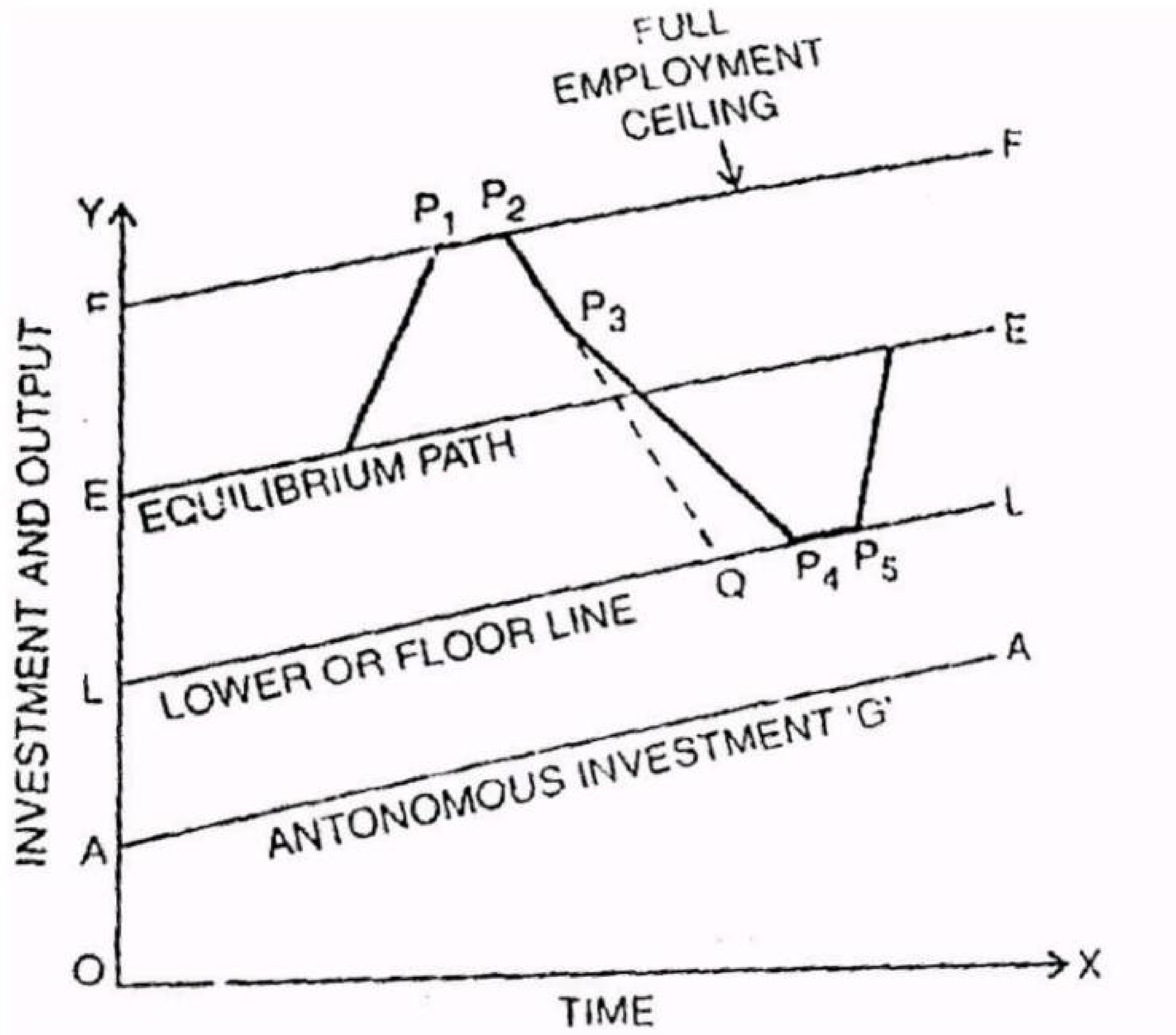

1. AA रेखा स्वतन्त्र निवेश (autonomous investment) को दर्शाती है। स्वतन्त्र निवेश एक निश्चित दर 'g' से बढ़ रहा होता है।
2. LL रेखा नीचली या निम्नत्तम रेखा (Floor line) है जो उत्पादन ने निचले सन्तुलित पथ को दर्शाती है।
3. EE रेखा उत्पादन के सन्तुलन पथ (Equilibrium Path) को दर्शाती है। यह गुणक–त्वरक अन्तर्क्रिया द्वारा प्राप्त होती है।
4. FF रेखा पूर्ण–रोजगार सीमा को प्रकट करती है जो साधनों की दुर्लभता होने के कारण अधिकतम उत्पादन या विस्तार को प्रकट करती है। मान्यता यहा है कि यह रेखा EE सन्तुलित पथ से ऊपर होती है तथा यह उसी दर से बढ़ रही होती है जिस दर से AA में वृद्धि हो रही होती है। AA रेखा स्वतन्त्र निवेश में एक स्थिर दर, जिसको हिक्स ने 'g' कहा है, से हो रही वृद्धि को प्रकट करती है। स्वतन्त्र निवेश में यह वृद्धि कुल आय में वृद्धि करेगी जो प्रेरित निवेश (Induced Investment) को त्वरक के अनुसार बढ़ायेगी। स्वतन्त्र निवेश तथा प्रेरित निवेश मिलकर राष्ट्रीय आय को EE रेखा के अनुसार बढ़ायेंगे। अतः EE रेखा आय में सन्तुलित वृद्धि को प्रकट करती है तथा दर्शाती है कि अर्थव्यवस्था में आय समय के साथ EE रेखा के अनुसार बढ़ती जाती है। राष्ट्रीय आय P_0 बिन्दु पर होती है तो मान लो अर्थव्यवस्था में नये आविष्कार या युद्ध आदि के कारण स्वतन्त्र निवेश में आकस्मिक बहुत बड़ी वृद्धि हो जाती है। इससे गुणक के द्वारा आय में तेजी में वृद्धि होती है तथा यह EE रेखा के ऊपर चढ़ने लगेगी। राष्ट्रीय आय में तेजी से वृद्धि प्रेरित निवेश को भी अधिक तीव्र गति बढ़ा देगी। इससे आगे गुणक प्रभाव अपना कार्य करेगा। इसके परिणामस्वरूप गुणक व त्वरक के कारण राष्ट्रीय आय P_0 P_1 के पथ पर बढ़ती जायेगी। परन्तु यह पूर्ण रोज़गार रेखा FF के ऊपर नहीं जा सकती क्योंकि साधनों की सीमितता के कारण इससे आगे राष्ट्रीय आय नहीं बढ़ सकती है। आय जब P_1 बिन्दु पर पहुंचती है तो इसका अधिक गति से बढ़ना रूक जाता है क्योंकि अतिरिक्त मानवीय व भौतिक साधन उपलब्ध नहीं होते हैं। सामान्य स्वतन्त्र निवेश में AA के अनुसार वृद्धि होते रहने के कारण पूर्ण रोज़गार के उच्चत्तम स्तर (Ceiling) में भी वृद्धि हो रही होती है क्योंकि इससे पूँजी पदार्थों अर्थात् भौतिक उत्पादक साधनों में वृद्धि हो रही होती है। हिक्स के अनुसार पूर्ण रोज़गार स्तर की रेखा FF उस गति से बढ़ती है जिसे गति से स्वतन्त्र निवेश (AA) बढ़ रहा होता है। इससे राष्ट्रीय आय FF रेखा पर P_1 से P_2 तक बढ़ती जाती है। कुछ समय बाद प्रेरित निवेश की कमी के

कारण आय घटना आरम्भ कर देती है। तथा यह P_2 से नीचे को गिरने लगती है। नीचे गिरती हुई आय EE रेखा तक पहुंच जायेगी तथा EE रेखा को भी पार कर जायेगी। नीचे गिरती हुई आय (Downswing) के अन्तर्गत त्वरक प्रक्रिया विपरीत दिशा (Inverse dirctions) में कार्य करती है। इसके अन्तर्गत गिरता निवेश आय को कम करता जायेगा, कम आय निवेश को कम करती जायेगी तथा यह बढ़ चढ़ कर होता रहेगा। आय में यह गिरावट बहुत तेज गति की हो सकती है जैसा कि चित्र में P_2P_3Q द्वारा दर्शाया गया है। परन्तु उतार के अन्तर्गत त्वरक इतनी शीघ्रता से कार्य नहीं करता जितनी शीघ्रता से यह चढ़ाव के दौरान कार्य करता है। यदि मांग में भारी कमी है तो प्रेरित निवेश श्शीघ्र ही शून्य को प्राप्त कर लेता है तथा त्वरक का मूल्य शून्य हो जाता है। परन्तु निवेश की दर में गिरावट को टूट–फूट की दर (rate of depreciation) रोक देती है। प्रेरित निवेश के शून्य होने पर अर्थव्यवस्था में निवेश की कुल मात्रा स्वतन्त्र निवेश में गिरावट धीमी दर से होती है तथा उतार चढ़ाव की अपेक्षा लम्बी समयावधि वाला होता है। जैसा कि P_3P_4 द्वारा दर्शाया गया है जो और अधिक लम्बा हो सकता है। आय गिर कर निम्नत्तम बिन्दु (Floor) P_4 पर पहुंच जाती है जैसा कि यह बिन्दु LL रेखा पर पड़ता है। अब अर्थव्यवस्था एक दम से ऊपर की आरे नहीं मुड़ जाती है परन्तु कुछ समय यह LL रेखा पर चलती है जिसमें आय की वृद्धि AA रेखा की वृद्धि के समान होती है तथा या P_5 तक पहुंच जाती है। इस आय में वृद्धि के कारण तथा अतिरिक्त उत्पादन क्षमता समाप्त होने, कुछ मशीनें बेकार हो जाती हैं के कारण प्रेरित निवेश बढ़ेगा जो आय को तेजी से बढ़ायेगा तथा चढ़ाव की अवस्था प्राप्त होगी। गुणक त्वरक की अंतक्रिया आय को EE रेखा के पार तक ले जाती है। इस प्रकार व्यापारिक चक्र निर्धारित होते हैं।

सीमाएं व आलोचना (LimitationsAnd Criticism)

इस सिद्धान्त की निम्न कटु आलोचना की गई है :

1. हिक्स ने व्यापारिक–चक्र की व्याख्या करते समय गुणक तथा त्वरक को स्थिर माना है।
2. हिक्स का सिद्धान्त यह मान कर चलता है कि साधनों को पूर्ण रोज़गार प्राप्त होता है। परन्तु कॉल्डोर के अनुसार उद्योगों में अतिरिक्त उत्पादन क्षमता हमेशा विद्यमान रहती है।
3. हिक्स का सिद्धान्त अत्यधिक गणितीय तथा यांत्रिक है। परन्तु वास्तविक अर्थव्यवस्थाओं में परिवर्तन इतने यान्त्रिक नहीं पाये जाते हैं।
4. इस सिद्धान्त की उच्चतम सीमा कैसे मोड़ उत्पन्न करती है इस तथ्य पर भी अनेक अर्थशास्त्रियों ने सन्देह व्यक्त किया है।
5. अर्थव्यवस्था का निम्नत्तम सीमा पर पहुंचने का कारण यह होता है कि यहां अनिवेश की दर अधिकत्तम होती है। अर्थात अनिवेश के कारण आय पर नीचे गिरने के दबाव की अपेक्षा स्वतन्त्र निवेश का आय पर उपर चढ़ने का दबाव अधिक होता है।
6. कुछ अर्थशास्त्रियों ने स्वतन्त्र निवेश तथा प्रेरित निवेश में अन्तर करना निरर्थक माना है क्योंकि दोनों का प्रभाव उत्पादन व आय पर समान हो सकता है। अल्पकाल में प्रत्येक निवेश स्वतन्त्र निवेश होता है। इसी प्रकार दीर्घकाल में प्रत्येक निवेश प्रेरित निवेश होता है।
7. यह सिद्धान्त व्यापारिक–चक्र की शक्तियों को आर्थिक विकास की श्शक्तियों के साथ पूर्ण रूप से समावेश करने में असफल रहा है।

व्यापारिक चक्र को नियन्त्रित करने के उपाय

1. मौद्रिक नीति के माध्यम से व्यापार चक्र को नियन्त्रित किया जा सकता है।
2. राजकोषीय नीति के द्वारा भी व्यापार चक्र चक्रीय स्थिरताओं को रोका जा सकता है।

3. राज्य सरकार निजी निवेश के द्वारा भी व्यापार चक्र को नियन्त्रित करती है।
4. प्रमाणीकृत क्षेत्रों में आर्थिक स्थिरता राज्य सरकार के द्वारा स्थापित की जा सकती है जिस पर राज्य सरकार चक्रीय परिवर्तनों पर अकुंश लगाने में समर्थ हो जाती है।
5. विकासशील देश आर्थिक नीतियों के माध्यम से और योजनाओं के माध्यम से व्यापारिक चक्र को रोकने के लिए उद्देश्य निर्धारित करते है।

1. **मौद्रिक नीति** – सरकार मौद्रिक नीति के माध्यम से भी व्यापार चक्रों को नियन्त्रित कर सकती है सरकार नई मुद्रा जारी कर सकती है। और नई मुद्रा जारी होने से बैकों के पास जमा सावधि बढ़ जाती है जिससे बैंक साख का निर्माण–कर सकते है। और लोग बैंकों से अधिक पैसा की मांग करते है। क्योंकि अधिक मुद्रा होने से बैंकों की ब्याज की दर कम हो जाती है। और लोग बैंकों से अधिक पैसा उधार लेते है। और मौद्रिक नीति के विस्तार से व्यापार चक्र को नियन्त्रित किया जा सकता है।
2. **राजकोषीय नीति** – मन्दी से निपटने के लिए सरकार की राजकोषीय नीति सबसे अधिक अच्छा उपकरण है। सरकार की राजकोषीय नीति के कई अंग होते है। जैसे कि सार्वजनिक राजस्व, सार्वजनिक ऋण, सार्वजनिक व्यय, राजकोषीय नीति के माध्यम से ही व्यापार चक्रों को नियन्त्रित किया जा सकता है।
3. **State Control Private Investment** – राज्य सरकार निजी निवेश के द्वारा भी चक्रों को नियन्त्रित कर सकती है। राज्य सरकार निजी निवेशकों को राज्य में निवेश करके व्यापार चक्रों को नियन्त्रित कर सकती है। भारत सरकार ने 1956 में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को परामर्श दिया विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को बढ़ावा देने के लिए 1973 में FERA की स्थापना की गई।
4. **Measure of the Business Cycles** –अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के माध्यम से व्यापार चक्र को नियन्त्रित किया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मन्दी को नियन्त्रित करने के लिए IMF, WTO, OECD, आदि अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के द्वारा भी व्यापार चक्र को नियन्त्रित करने के लिए नीतियां बनाई जाती है।
5. **Recognisation of Economics System** – आर्थिक सुधारों के माध्यम से प्रमाणित उद्योगों की पहचान की जाती है। और जो उद्योग घाटे में चल रहे है। उन उद्योगों में भारी मात्रा में निवेश करके व्यापार चक्रों से छुटकारा पाया जा सकता है।
6. **Objective of Developing Countries** –– आर्थिक विकास के लिए विकासशील देश अनेक प्रकार के उद्देश्य को अपनाते है। और विकासशील देशों का यही उद्देश्य रहता है। व्यापार चक्रों को तोड़ा जा सकता है।

कॉल्डोर का व्यापारिक–चक्र सिद्धान्त (KALDOR'S MODEL OF THE TRADE CYCLE)

कॉल्डोर का व्यापारिक चक्र सिद्धान्त 1940 में प्रकाशित हुआ था। यह सिद्धान्त प्रत्यक्ष रूप से केन्ज़ बचत निवेश विश्लेषण पर आधारित है। केन्ज़ ने इनको सरल रेखीय (Linear) फलन माना है। कॉल्डोर के अनुसार निवेश आय के स्तर से प्रत्यक्ष या धनात्मक तथा पूँजी के स्टॉक से विपरीत सम्बन्ध रखता है। इस प्रकार कॉल्डोर ने त्वरक सिद्धान्त को कठोरता से लागू नहीं किया है क्योंकि निवेश को आय के स्तर पर ही नहीं बल्कि पूँजी–स्टॉक पर भी निर्भर माना गया है। कॉल्डोर ने पूंजी स्टॉक (K) को एक अति महत्वपूर्ण चर के रूप में पेश किया है जो बचत तथा निवेश में चक्रिय परिवर्तन लाने में बहुत बड़ी भूमिका अदा करता है। आय के किसी स्तर पर बचत K से धनात्मक सम्बन्ध रखता है। अर्थात् K जितना अधिक होगा बचत की मात्रा उतनी ही अधिक होगी। इसके विपरीत आय के किसी निश्चित स्तर पर, निवेश K से उल्टा (Inverse) सम्बन्ध रखता है। अर्थात् K जितना अधिक होगा निवेश की

यात्रा उतनी ही कम होगी। केवल त्वरक सिद्धान्त को व्यक्त करने वाले निवेश फलन $[I_t=I_a + w\ (Y_{t-1}-Y_{t-2})]$ के स्थान पर काल्डोर ने जो निवेश फलन प्रयोग किया है वह इस प्रकार हैः $I_t = I_a + h\ Y_{t-1} - jK_t$; इसमें K समय t के शुरू में पूंजी का स्टॉक है, h तथा स्थिर अंक (Constants) हैं। कॉल्डोर के निवेश फलन का अर्थ यह है कि पूंजी का स्टॉक (K) स्थिर रहते हुए यदि आय उत्पादन (Y) बढ़ता है तो निवेश बढ़ेगा तथा K में वृद्धि करेगा। इसके विपरीत यदि आय (Y) का स्तर स्थिर रहते हुए K वृद्धि होती है तो निवेश में कमी होगी क्योंकि ऐच्छिक K प्राप्त हो चुका होता है। काल्डोर का मॉडल केन्ज़ के आय निर्धारण सम्बन्धी मॉडल पर निर्भर करता हुआ कल्पना करता है कि आर्थिक क्रियाओं में परिवर्तन की प्रक्रिया आयोजित बचत तथा निवेश (ex-ante saving And investment) के मध्य अन्तर पर निर्भर करता है। यदि $S > I$, आर्थत् बचत निवेश से अधिक है, तो उपभोग व्यय कम होगा जो गुणक के माध्यम से आय को गिरा देगा दूसरी तरफ यदि $I > S$, है तो गुणक के माध्यम से आय बढ़ेगी। इस प्रकार जब कभी S तथा I में अन्तर होता है तथा आय में परिवर्तन होता है जब तक दोबारा सन्तुलन प्राप्त नहीं हो जाता इस प्रकार काल्डोर के अनुसार S तथा K पर निर्भर करते हैंः

$I = I\ (Y, K)$ $S = S\ (Y, K)$ अत्यधिक मुद्रास्फीति तथा मन्दी के अतिरिक्त S तथा I दोनों प्रायः आय से इस प्रकार सम्बन्धित होते हैं कि ΔΔ% ‾ Δ^{Δ} शून्य से अधिक होते हैं। S तथा I दोनों पूंजी के स्टॉक (K) से इस प्रकार सम्बन्धित होते हैं कि बचत (s) पूंजी के स्टेट में संग्रह (accumulation) से धनात्मक सम्बन्ध रखती है; जबकि निवेश (I) हमेशा K के संग्रह की मात्रा से विपरीत सम्बन्ध रखता है। अब हम आर्थिक उतार–चढ़ाव (fluctuations) या व्यापारिक चक्र का सम्बन्ध S, I, Y, K आदि चरों से स्थापित कर सकते हैं। यदि हम कल्पना करें कि S तथा I फलन दोनों सरल रेखी फलन (linear functions) हैं तो इस परिस्थिति में, काल्डोर दो सम्भावनाएँ व्यक्त करता है जो निम्न चित्र में दर्शाई गई हैं : Y_e आय का सन्तुलित स्तर दर्शाया गया है जहां S तथा I परस्पर समान हैं। S तथा I फलन के सरल रेखीय होने पर केवल एक ही सन्तुलन स्थिति उत्पन्न होती है तथा इसमें विघ्न (disturbance), जो S तथा I फलन में विवर्तन होने पर हो सकता है, आने पर एक नई सन्तुलन स्थिति प्राप्त हो जाती है। परन्तु व्यापारिक चक्र की दृष्टि से व्याख्या महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि यह अधिक स्थिरता को दर्शाती है जो कि वास्तविक जगत में इतनी स्थिरता प्रतीत नहीं होती है। भाग B में केवल एक ही सन्तुलन स्थिति है परन्तु यह अस्थिर है। यदि आय Y_e से अधिक होती है तो $I > S$ है आय अन्नत तक बढ़ सकती है।

एक छोटी खुली अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण

एक छोटी खुली अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण में महत्वपूर्ण धारणा यह है कि घरेलू देश की आय में परिवर्तन विदेशी देश जिसके साथ व्यापार किया जा रहा है कि आय पर किसी प्रकार का विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। घरेलू निवेश (I_d) तथा निर्यात (X) दोनों आय स्वतन्त्र माने गये हैं। निर्यात विदेशी देश की आय के स्तर पर निर्भर करते हैं। एक बन्द अर्थव्यवस्था में सन्तुलन प्राप्त करने के लिए आयोजित निवेश को आयोजित बचत के बराबर होना होता है। इसको प्रायः व्यक्त किया जाता है कि राष्ट्रीय आय में इन्जैक्शनज़, जैसे स्वतन्त्र निवेश, राष्ट्रीय आय से स्त्राव, जैसे बचत आदि के समान अवश्य होने चाहिए। एक खुली अर्थव्यवस्था की सन्तुलित आय के लिए भी बिल्कुल वही शर्त लागू होती है, परन्तु इसमें दो इन्जैक्शनज़ तथा दो स्त्राव होते हैं। समीकरण बताता है कि सन्तुलन की अवस्था में बचत S तथा घरेलू निवेश (I_d) का अन्तर व्यापार शेष जिसको X-M द्वारा दर्शाया गया है, के समान होता है। अब हम सन्तुलित राष्ट्रीय आय तथा व्यापार शेष के बीच सम्बन्ध को निम्न रेखा–चित्र की सहायता में दर्शाते हुए सन्तुलित आय का निर्धारण कर सकते हैं। चित्र में X-M वक्र का ढाल नकारात्मक है। आय में वृद्धि से X स्थिर रहता है परन्तु आयात (M) बढ़ते जाते है। जिसके परिणाम स्वरूप X-M कम होता जाता है

तथा यह वक्र नीचे की ओर झुकता जाता है। इसके विपरीत $S\text{-}I_d$ का ढाल आय (Y) में वृद्धि के साथ बढ़ता जाता है क्योंकि आय वृद्धि के साथ I_d का ढाल सीमान्त बचत प्रवृति के समान है दोनों वक्र E_0 बिन्दु पर परस्पर काटते हैं तथा Y_0 सन्तुलित आय का निधार्रण करते है तथा B_1 के समान व्यापार शेष स्थापित करते हैं। चित्र में Y_0 आय के सन्तुलित स्तर पर सकारात्मक व्यापार शेष दर्शाया गया है। जो B_1 के समान है।

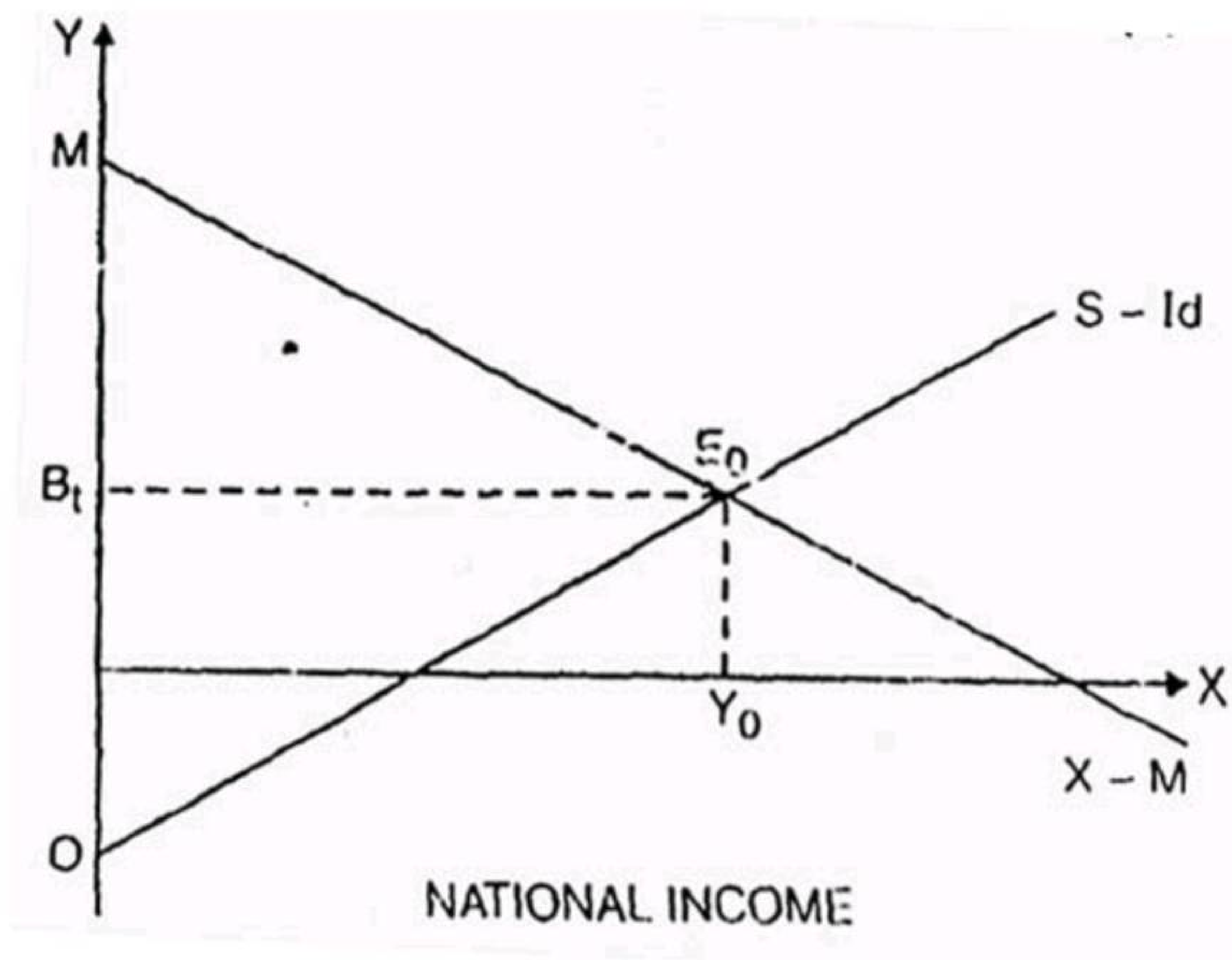

चित्र नं 42

एक देश चालू खाते पर जब सकारात्मक व्यापार शेष दर्शाता है तो वह विदेशी देश से अपनी लेनदारी बढ़ा रहा होता है तथा देनदारी कम कर रहा होता है अर्थात वह विदेशी निवेश कर रहा होता है। इसको हम निम्न प्रकार लिख सकते है।

$X\text{-}M = I_t$ समीकरण में I_t शुद्ध विदेशी निवेश को प्रकट करता है। अब हम राष्ट्रीय आय में सन्तुलन की शर्त को दोबारा निम्न प्रकार लिख सकते है :

$S = I = I_d + I_t$

समीकरण व्यक्त करता है कि बचत S कुल निवेश (I) जो घरेलू निवेश और विदेशी निवेश का जोड़ होता है, के समान होनी चाहिए ताकि सन्तुलित राष्ट्रीय आय प्राप्त की जा सके। खुली छोटी अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय में परिवर्तन खुली छोटी अर्थव्यवस्था की आय में परिवर्तन के लिए दो तत्व महत्वपर्ण्ू है। घरेलू निवेश तथा निर्यात में परिवर्तन (dX), (2) खुली छोटी अर्थव्यवस्था में गुणक अतः राष्ट्रीय आय में परिवर्तन के समीकरण को निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :

$$Dy = 1/s{+}m\ (dl_d + dx)$$

$\frac{1}{s+m} = K_r$ अर्थात विदेशी व्यापार गुणक है तथा dI_d और dX राष्ट्रीय आय पर समान प्रभाव छोड़ते है, वे व्यापार शेष पर अलग–अलग प्रभाव छोड़ते है। चित्र घरेलू निवेश (I_d) में वृद्धि करने से भुगतान शेष पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट करता है।चित्र में प्रारम्भिक सन्तुलन E_0 द्वारा दर्शाया गया है जिस पर Y_0 सन्तुलित आय तथा B_1 व्यापार शेष निर्धारित होता है। इसके बाद ज्यों घरेलू निवेश में वृद्धि (dl_d) कर दी जाती है तो $S\text{-}I_d$ वक्र नीचे सरक कर $S\text{-}(I_d{+}d\,I_d)$ हो जाता है जो X-M फलन को E_1 पर काटकर सन्तुलन स्थापित करता है। E_1 सन्तुलन बिन्दु पर Y_1 सन्तुलित आय स्तर पर B_0 धनात्मक व्यापार शेष कम होकर B_1 से B_0 हो जाता है। इसका कारण यह है कि घरेलू निवेश में वृद्धि से आय का स्तर बढ़ता है परन्तु बढ़ा हुआ आय का स्तर आयात बढ़ा देता है जिससे धनात्मक व्यापार शेष कम हो कर B_0 ही रह जाता है। अब मान लीजिये निर्यात में वृद्धि की जाती है तथा घरेलू निवेश स्थिर रहता है। निर्यात वृद्धि का (dX) का आय तथा व्यापार शेष पर पड़ने वाले प्रभावों को निम्न चित्र की सहायता से

प्रकट किया जा सकता है। चित्र में प्रारम्भिक सन्तुलन E_0 पर स्थापित होकर Y_0 सन्तुलित आय स्तर तथा B_0 व्यापार शेष निर्धारित करता है। अब यदि निर्यात में वृद्धि (dX) कर दी जाती है तो X- M फलन ऊपर की ओर सरक कर (X+dX)-M बन जाता है जो $S-I_d$ फलन के साथ मिलकर E_1 पर सन्तुलन निर्धारित करता है। व्यय में वृद्धि होने के कारण गुणक द्वारा आय बढ़ती है तथा निर्यात में वृद्धि होने के कारण धनात्मक भुगतान शेष बढ़कर B_1 निर्धारित होता है। यद्यपि आय में हुई वृद्धि आयातों को भी बढ़ा देती है परन्तु इसका शद्ध प्रभाव धनात्मक पड़ता है। इसका व्यापार शेष पर शुद्ध प्रभाव क्या होगा इसको अलग से भी अध्ययन किया जा सकता है।

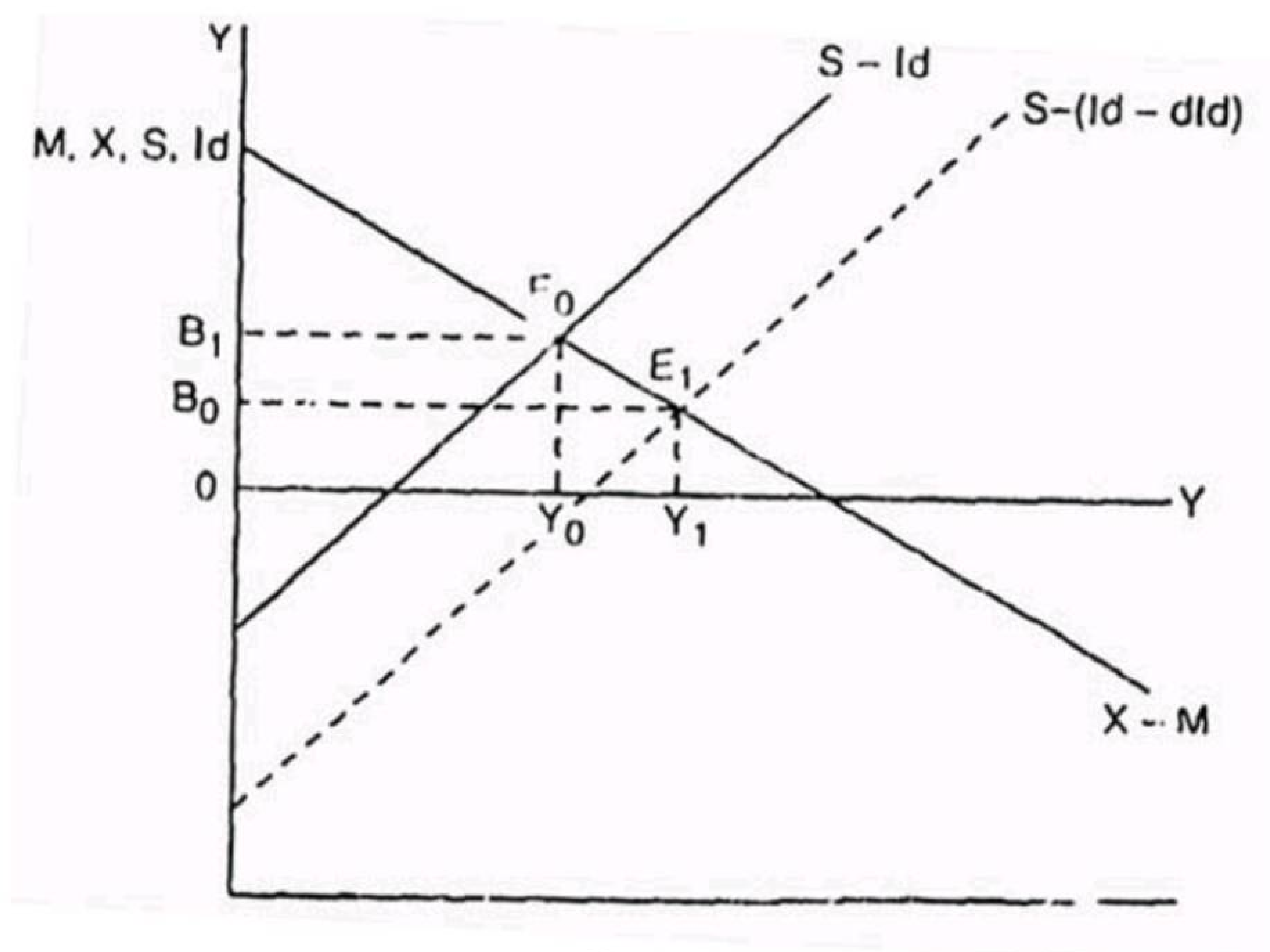

चित्र नं 43

एक बड़ी खुली अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण यह मान्यता कि आयातों में वृद्धि आयातक देशों की राष्ट्रीय आय को प्रभावित नहीं करती सही नहीं है, विशेष रूप से जब बड़े दशों के बीच व्यापार हो रहा हो। जब एक बड़े राष्ट्र जैसे अमेरिका की आय में वृद्धि होने के कारण इसके आयात बढ़ते है तो निर्यातक देश, जैसे भारत के निर्यात बढ़ते है। इससे भारत की राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी। भारत की राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने के कारण इसके आयात बढ़ेगे जो मान लीजिए अधिकतर अमेरिका से ही किये जाते है। इससे अमेरिका की राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी जो इसके आयातों में वृद्धि करके भारत की राष्ट्रीय आय में फिर वृद्धि करेगी। इस प्रकार बड़े व्यापारिक राष्ट्रों की आय पर प्रतिक्रियात्मक प्रभाव पड़ता रहता है। ऐसी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की राष्ट्रीय आय का निधार्रण करने के लिए इन प्रतिक्रियात्मक प्रभावों को भी अवश्य शामिल किया जाना चाहिये। इसका अर्थ यह हुआ कि यह जांच की जानी चाहिए कि सभी व्यापारिक राष्ट्रों की आय का निर्धारण एक साथ कैसे किया जाये। यह निर्धारण हम कल्पना करके कर सकते हैं कि मान लीजिए विश्व में दो ही देश। तथा B देश है। दोनों देशों में सम्पर्क इस प्रकार का है कि A देश के आयात B देश के निर्यात तथा B देश के आयात। दशे के निर्यात है। अतः दोनों देशों की राष्ट्रीय आय एक दूसरे पर निर्भर है। दोनों देशों के बीच आय–प्रतिक्रिया निम्न चित्र की सहायता से दशाई जा सकती है। चित्र में AA रेखा। राष्ट्र की आय तथा B राष्ट्र की आय के बीच सम्बन्ध प्रकट करती है। देश में OA राष्ट्रीय आय व्यापार से स्वतन्त्र है। इसी प्रकार BB रेखा B देश की राष्ट्रीय आय तथा देश की राष्ट्रीय आय के मध्य सम्बन्ध प्रकट करती है। ये दोनों रेखाएं एक दूसरे को E बिन्दु पर काटती है तथा। देशों में सन्तुलित आय का स्तर Y^0 तथा B दशे में सन्तुलित आय का स्तर Y^0_B है जो एक साथ निर्धारित होती है। यदि B दशे में आय Y' होगी जो B देश में आय बढ़ा कर Y" करेगी। यह प्रक्रिया जारी रहेगी जब तर्क दोनों देश E बिन्दु को प्राप्त नहीं कर लेते जो दोनों की आय में एक साथ सन्तुलन स्थापित करता है।

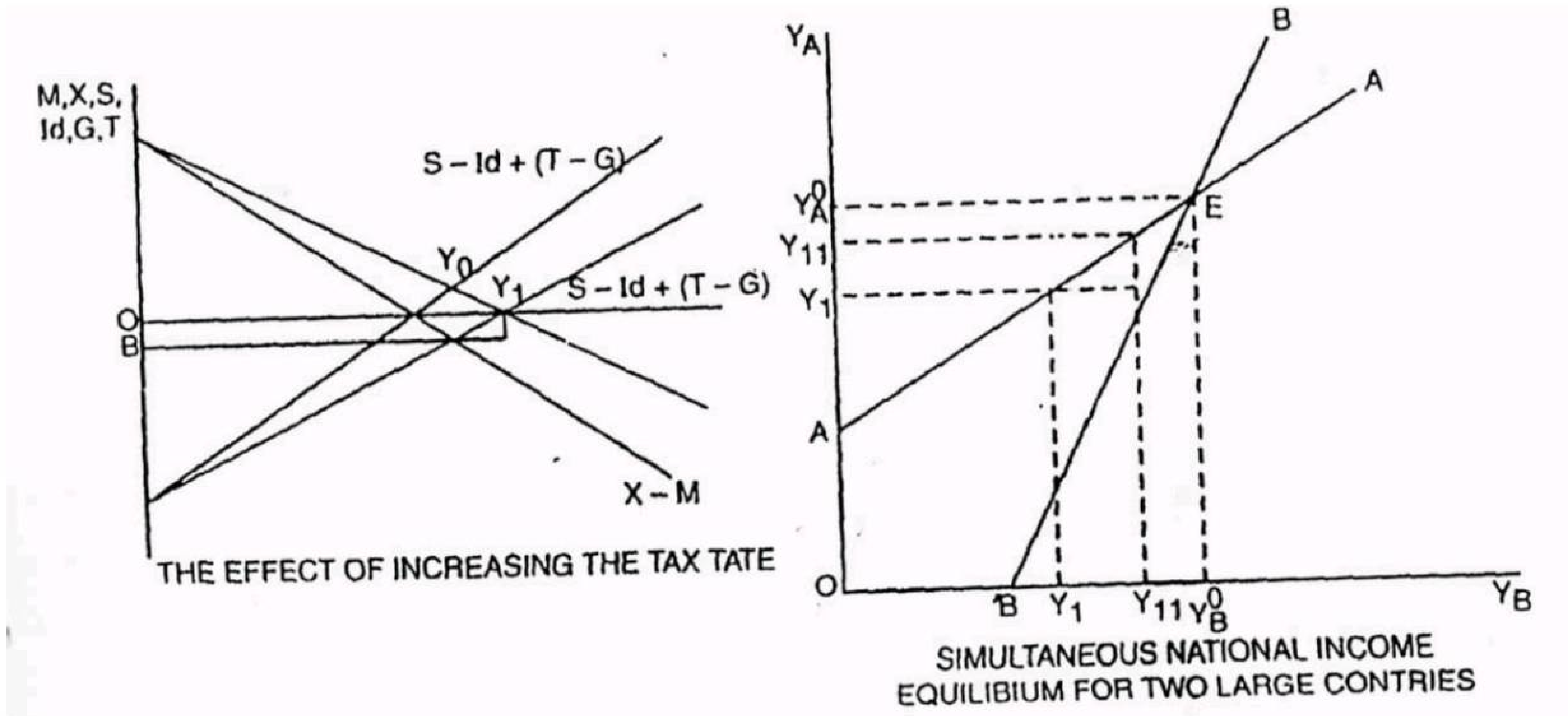

चित्र नं. 44

अब यदि। देश में निवेश या सरकारी व्यय में वृद्धि करने के कारण राष्ट्रीय आय बढ़ जाती है तो।A वक्र उपर की ओर सरक जाता है जो B देश की सन्तुलित आय स्तर को बढ़ा देता है।इस तथ्य को निम्न चित्र की सहायता से स्पष्ट किया। चित्र में प्रारम्भिक सन्तुलन बिन्दु E है। अब यदि A देश में सरकारी व्यय में वृद्धि करने के परिणाम स्वरूप दोनों देशों की आय में परस्पर सम्बन्ध 'AA' रेखा द्वारा स्थापित होता है जो 'BB' रेखा के साथ मिलकर E_1 बिन्दु पर सन्तुलन स्थापित करता है। दोनों देशों की सन्तुलित आय बढ़कर इस प्रकार। देश में Y_A तथा B देश में Yn स्थापित होती है। दोनों राष्ट्रों की आय में एक साथ सन्तुलन पुनः E_1 बिन्दु पर स्थापित होता है। हमें ज्ञात है कि एक बन्द अर्थव्यवस्था मॉडल में सरकार अपने व्यय तथा करों में परिवर्तन करके राष्ट्रीय आय के स्तर को प्रभावित कर सकती है। एक खुली अर्थव्यवस्था में भी सरकार अपने व्यय तथा करों में परिवर्तन के द्वारा अपने देश की राष्ट्रीय आय को प्रभावित कर सकती है। अपनी राजकोपीय नीति में परिवर्तन करके तट करों में परिवर्तन कर सकती है तथा आयातों को प्रभावित कर सकती है। सरलता के लिए कल्पना की गई है कि सरकारी व्यय आय स्वतन्त्र है तथा घरेलू वस्तुओं पर ही किया जाता है। कर की केवल आनुपातिक आय कर प्रणाली की मान्यता की गई है।

उपभोक्ताओं का वस्तुओं व सेवाओं पर व्यय करके बाद की स्वायत राष्ट्रीय आय अर्था (1-t) y पर निर्भर करता है। विभिन्न सीमान्त प्रवृतियां भी इसी के अनुसार परिभाषित की गई है। सभी फलनों की सरल रेखीय होने की कल्पना की गई है।

$$C= C_0+b\ (1-t)\ Y$$

$$M = M_0 + m\ (1-t)\ Y$$

$$S = S_0+s\ (1-t)\ Y$$

Where Ca, M_0 and S_0 are the autonomous Elements of consumption, imports and saving C+S = 1

राष्ट्रीय आय की सन्तुलन की शर्तों को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है।

1d+X+G=S +M+T

After differentiation of equation

$dI_d + dX + dG = s(1-t)\,dY + m(1-t)\,dY + tdY$ समीकरण को निम्न प्रकार लिखा जा सकता हैः

$$dY = \frac{1}{(s+m)(1-f)+1}(dI_d + dX + dG)$$

अतः गुणक (Multiplier) बराबर हैः

$$Kt = 1/(s + m)(1-t) + t$$

ध्यान देने की बात है कि कर दर में वृद्धि गुणक की शक्ति को कष्ट कर देता है। S - Id फलन को अब संशोधित इस प्रकार से किया जा सकता है ताकि इसमें सरकारी व्यय (G) तथा कर (T) का समावेश किया जा सके। अतः S - Id को संशोधित रूप जो $(S-I_d) + (T-G)$ के बराबर होगा, लिखा जा सकता है। इसकी निम्न चित्र की सहायता से प्रकट किया जा सकता है।

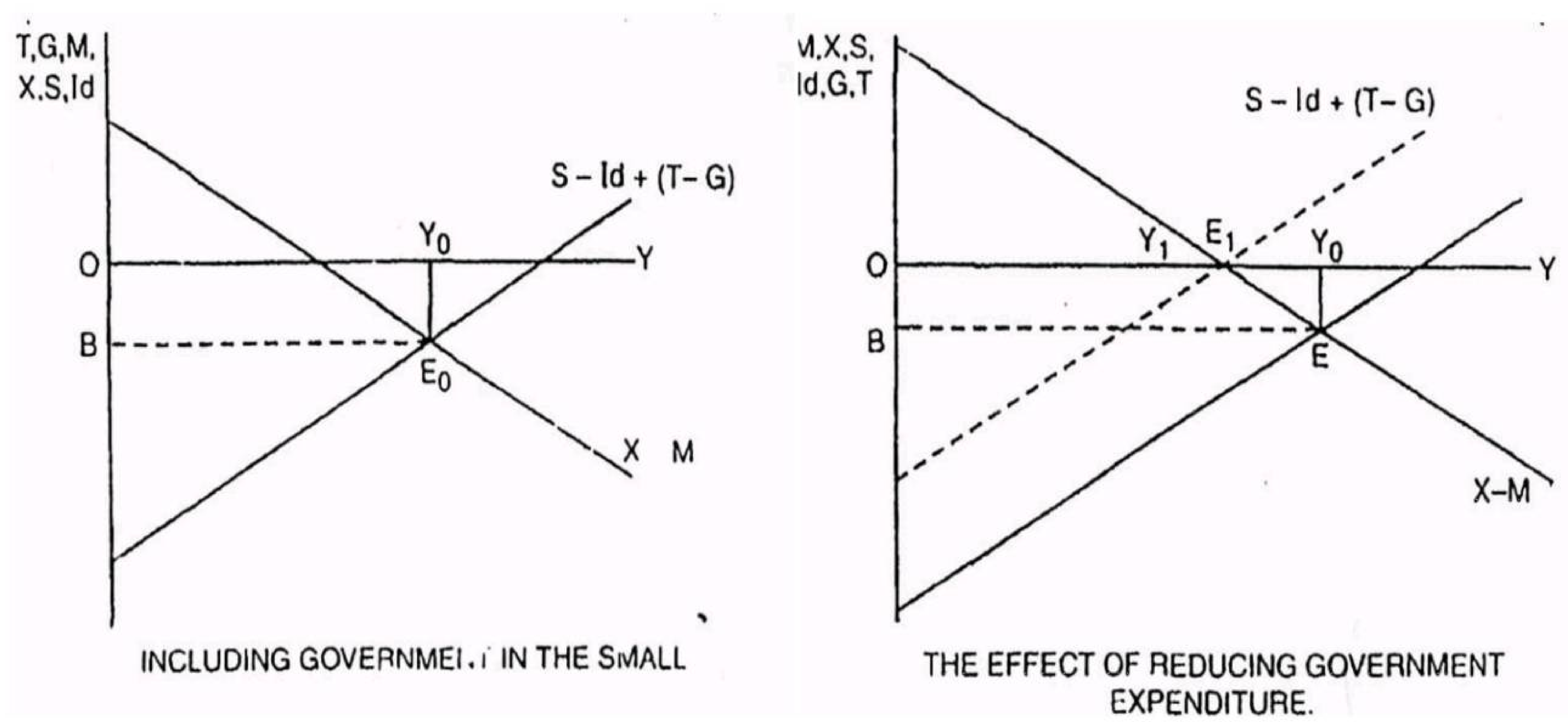

चित्र नं. 45

चित्र में S - Id +(T - G) फलन X - M फलन को E0 पर काटता है तथा Y0 राष्ट्रीय आय का सन्तुलित स्तर निर्धारित होता है जिस पर OB के समान व्यापार शेष का घाटा (Deficit Trade Balance) है। व्यापार शेष के घाटे को दूर या कम करने के लिए सरकार राजकोषीय के दो उपकरण अपना सकती है– सरकार अपने व्यय (G) को कम कर सकती है या कर दर में वृद्धि कर सकती है। निम्न चित्र सरकारी व्यय में कटौती के प्रभाव को दर्शाता है। चित्र दर्शाता है कि सरकारी व्यय में कटौती करने से पहले अर्थव्यवस्था E बिन्दु पर सन्तुलन में थी तथा Y2 राष्ट्रीय आय तथा B के समान घाटे वाला व्यापार शेष था। सरकारी व्यय में कटौती करने के उपरान्त वक्र ऊपर की ओर सरक कर $S-I_d + (T-G_1)$ हो जाता है जो X-M फलन को E_1 पर काटता है। E_1 पर सन्तुलित आय कम होकर Y_1 तथा व्यापार शेष में घाटा समाप्त होकर शून्य रह जाता है। दूसरा प्रभाव कर दर में वृद्धि करके देखा जा सकता है। कर दर में वृद्धि X-M के ढाल की कम कर देगा, क्योंकि अब आय के प्रत्येक स्तर पर M कम हो जायेगा। इसलिए X-M कुछ ऊपर की ओर चित्र अनुसार सरक जायेगा। इसी प्रकार $S-1_d + (T-G)$ वक्र की T में

वृद्धि के कारण उपर की ओर सरकेगा। इसका प्रभाव निम्न चित्र की सहायता से देखा जा सकता है। चित्र में कर वृद्धि से पहले Y_1 सन्तुलित आप तथा B के समान घाटे का बाजार शेष था कर में वृद्धि उपरान्त आय घटकर Y_0 तथा घाटे का व्यापार शेष समाप्त होकर शून्य हो गया है।

मुद्रा रहित नव–प्रतिष्ठित विकास मॉडल

(The Neo-Classical Growth Model without Money)

क्या मुद्रा अर्थव्यवस्था को सन्तुलित विकास पथ से विचलित कर सकती है? अन्य शब्दों में क्या मौद्रिक नीति पूंजी–श्रम अनुपात तथा पूंजी उत्पादन अनुपात में परिवर्तन कर सकती है? यदि यह ऐसा कर सकती है तो मुद्रा तटस्थ नहीं है तथा यदि नहीं कर सकती है तो मुद्रा तटस्थ है। यह हम इसलिए देखना चाहते हैं क्योंकि नव–प्रतिष्ठित मॉडल में पूंजी–श्रम अनुपात तथा पूंजी–उत्पादन अनुपात दोनों में परिवर्तन अर्थव्यवस्था के सन्तुलित विकास पथ की स्थिरता के लिए आधारभूत है चाहें अर्थव्यवस्था मुद्रा सहित है या मद्रा रहित है। पहले मुद्रा रहित अर्थव्यवस्था में हम यह जांच करेंगें कि अर्थव्यवस्था के सन्तुलन के लिए पूंजी श्रम अनुपात व पूंजी–उत्पादन अनुपात कैसे निश्चित होते हैं। इस मॉडल का प्रारम्भ हैरड–डोमर मॉडल को ध्यान में रख कर किया गया है जहां पूंजी उत्पादन अनुपात (V) को स्थिर माना गया है। इसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था का सन्तुलित पथ काफी अस्थिर हो जाता है। हैरड–डोमर मॉडल के अनुसार तकनीकी विकास स्थिर रहने पर श्रम की वृद्धि दर (n') अर्थव्यवस्था की उत्पादन–क्षमता की वृद्धि दर को व्यक्त करता है। प्रारम्भ में यदि अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार स्तर पर है तथा उत्पादन श्रम अनुपात को Y/n से दर्शाया गया है तब अर्थव्यवस्था का कुल उत्पादन (Y) n' दर से अवश्य बढ़े ताकि पूर्ण रोजगार सन्तुलन स्तर कायम रखा जा सके। n' को प्राकृतिक विकास दर कहा गया जिसकी निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है तथा यह श्रम बाजार में सन्तुलन को व्यक्त करती है :–

$$Y/n = n'$$

Y = कुल उत्पादन, n = कुल श्रम या जनसंख्या, n' = श्रम वृद्धि की दर

वस्तुतः हैरड–डोमर मॉडल का सम्बन्ध मुख्यतः प्राकृतिक विकास दर से नहीं बल्कि उद्यमियों की सन्तुष्टि कायम रखते हुए वस्तु बाजार में सन्तुलित विकास दर से था अर्थात वह विकास दर है जिस पर वस्तु बाजार में सन्तुलन पाया जाता है। आयोजित बचत तथा आयोजित निवेश एक दूसरे के बराबर होते हैं। यदि अर्थव्यवस्था समीकरण द्वारा व्यक्त विकास पथ पर अक्सर होती रहती है तो वस्तु बाजार तथा श्रम–बाजार दोनों हमेशा सन्तुलन में रहते है। इसके लिए S, V तथा n' के मूल्य वहीं होने चाहिए जो समीकरण को सन्तुष्ट करते है। इसके अतिरिक्त कोई अन्य सन्तुलन वृद्धि दर का पथ अस्थिर सन्तुलित वृद्धि दर का पथ कहलाएगा। जैसे यदि किसी कारण अचानक lFS (S) गिर जाती है तो S/V<n' हो जाएगा। इसके परिणामस्वरूप वस्तु बाजार में असन्तुलन होगा, क्योंकि रोजगार का स्तर गिरेगा। जिससे आय कम दर से बढ़ेगी तथा श्रम बाजार में श्रमिकों की मांग गिरेगी तथा श्रम बाजार में भी सन्तुलन नहीं रह सकेगा। क्योंकि S, V तथा n' सभी बाहर से निर्धारित है, इसलिए हैरड–डामेर मॉडल में ऐसी कोई आन्तरिक शक्तियां क्रियान्वित नहीं होती जो समीकरण द्वारा दर्शाई गई आर्थिक वृद्धि की दर काफी अस्थिर है क्योंकि S आदि में कभी परिर्वन हो सकता है। नव–प्रतिष्ठित मॉडल यह प्रकट करने का प्रयास करता है कि यदि तीनों चरों (S, V तथा n') में से किसी एक में परिर्वतन कर दिया जाये तो ऐसे कौन–से आर्थिक परिवर्तन हो सकते हैं जो समीकरण में हुए असन्तलनु को समाप्त कर सके। फिर समीकरण एक स्थितर सन्तुलित आर्थिक वृद्धि का पथ बन सकेगा। हैरड–डोमर मॉडल V को स्थिर मानता है। इसके विपरीत नव–प्रतिष्ठित मॉडल V को आन्तरिक चर बना लेते हैं। जिसको मॉडल के अन्दर ही परिवर्तित किया जा सकता है। इसके बाद समीकरण स्थिर सन्तुलित विकास दर पथ का कार्य कर सकेगा। यह निम्न प्रकार से किया गया हैः नव प्रतिष्ठित माडल में V एक

पूंजी उत्पादन अनुपात (k/y) को दर्शाता है। यदि V स्थिर हो तो वर्तमान उत्पादन को उत्पादित करने के लिए अर्थव्यवस्था को कितना पूँजी स्टॉक चाहिए? यह वस्तुतः V का मूल्य है जिसके द्वारा पूंजी उत्पादन अनुपात ज्ञात किया गया हैः V=(Kt/Yt) इसको निम्न समीकरण द्वारा ज्ञात किया जा सकता है। नव–प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के अनुसार निवेश को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है कि यह वर्तमान समय t तथा भूतकाल समय t-1 में जो पूंजी की जरूरत होती है इसके अन्तर के रूप में हो सके अर्थातः

$$l_t = K_t - K_{t-1}$$

तथा तर्क के आधार पर $K_t\text{-}1 = VY_{t-1}$ होगा। अतः

$$I_t = VY_t - VY \; I_t = V)$$

अब हम एक ऐसी स्थिति में पहुंच गये हैं जिससे मुद्रा रहित नव–प्रतिष्ठित मॉडल की जांच कर सकते हैं। यह मॉडल एक ऐसी अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित है जहां मुद्रा की मांग व पूर्ति या किसी अन्य वितीय साधन की मांग व पूर्ति विद्यमान नहीं है। सारे सौदे वस्तु विनिमय प्रणाली से किये जाते हैं। यह माना गया है कि अर्थव्यवस्था में भौतिक पूंजीगत पदार्थ ही एक मात्र साधन है जिसको K से दर्शाया गया है। अब इस मॉडल का विश्लेषण चित्र की सहायता से किया जा सकता है।

चित्र 46 के OX अक्ष पर पूंजी–श्रम अनुपात (K/n) तथा OY अक्ष पर प्रति व्यक्ति वास्तविक आय या उत्पादन (Y/n), प्रति श्रमिक वास्तविक निवेश (I/n) तथा प्रतिव्यक्ति बचत (S/n) मापी गई है। चित्र में Y, K/n का फलन है जो

K/n तथा Y/n के मध्य सम्बन्ध को प्रकट करता है अर्थात्: Y/n = f(K/n)

अर्थातः Y=f (K,n) है।

क्योंकि यह मॉडल उत्पादन में घटते प्रतिफल को मानता है, इसलिए पूंजी–श्रम अनुपात बढ़ने या प्रति श्रमिक पूंजी बढने के कारण उत्पादन घटती दर पर बढ़ता है। जिसको OY अक्ष पर मापा गया है। चित्र में OS वक्र प्रति व्यक्ति आयोजित बचत को दर्शाता है। इस मॉडल में कल्पना की गई है कि प्रत्येक व्यक्ति की APC स्थिर रहती है।

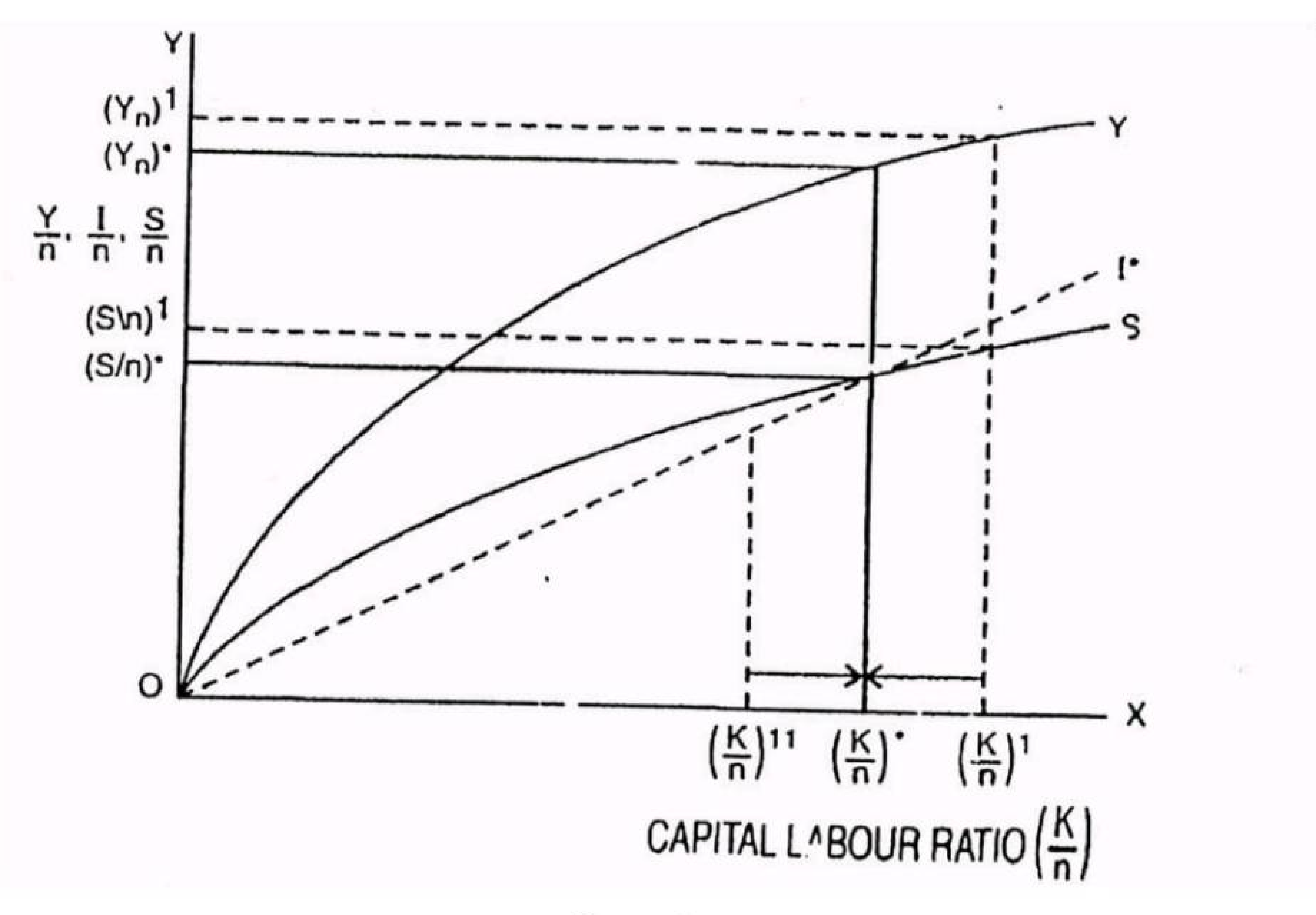

चित्र नं. 46

इसलिए प्रति श्रमिक बचत भी प्रति व्यक्ति आय (Y/n) का स्थिर अनुपात है जिसको OS वक्र द्वारा दर्शाया गया है। OS वक्र को निम्न समीकरण में दर्शाया गया है :

ऊँची पूंजी श्रम अनुपात (K/n) पर प्रति श्रमिक बचत या बचत श्रम अनुपात (S/n) भी अधिक होगा क्योंकि ऊंची (K/n) पर Y/n भी ऊँचा होगा तथा S/n हमेशा Y/n पर निर्भर करती है। इस मॉडल में यह कल्पना की गई है कि प्रत्येक समय बिन्दु पर वस्तु बाजार सन्तुलन में रहता है, इसलिए आयोजित बचत तथा निवेश हमेशा एक दूसरे के समान रहते है। इसका अभिप्राय यह है OS वक्र आयोजित बचत तथा आयोजित निवेश को दर्शाता है क्योंकि कोई दूसरा वित्तीय साधन नहीं है जिसमें लोग अपनी बचत को निवेश करते हो अर्थात बचत को मशीनों आदि भौतिक साधनों में ही निवेश किया जाता है। इसलिए OS वक्र पर आयोजित बचत तथा निवशे समान है। चित्र में OI वक्र इस प्रतिव्यक्ति निवेश को दर्शाता है जो पूंजी–श्रम अनुपात K/n को स्थिर रखने के लिए जरूरी होता है। यह वक्र ऊपर की ओर इसलिए उठता हुआ है क्योंकि श्रमिक की सूंख्या एक निश्चित स्थिर दर से बढ़ रही होती है। इसलिए पूंजी भण्डार K भी n^1 दर से अवश्य बढ़े ताकि पूंजी श्रम अनुपात को स्थिर रखा जा सके। क्योंकि निवेश की मात्रा पूंजी संग्रह में वृद्धि करती है। इसलिए प्रतिश्रमिक जो निवेश की मात्रा चाहिए। उसको निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है। अब हम अर्थव्यवस्था के संतुलित वृद्धि दर का विश्लेषण कर सकते हैं। सन्तुलित वृद्धि दर वह दर होती है जिस पर Y, S तथा K उसी दर से बढ़ते हो जिस दर से श्रमिकों की संख्या n^1 बढ रही है। इसलिए इन सभी चरों का प्रति व्यक्ति मूल्य स्थिर रहता है। चित्र में ये दरें K/n के माध्यम से जाने जा सकते हैं। इस स्थिति से निम्न समीकरण प्राप्त होता है:

अब हम कह सकते है कि यदि अर्थव्यवस्था सन्तुलित वृद्धि दर की शर्त को सन्तुष्ट करती है तो यह इससे विचलित हाने की कोई प्रवृति नहीं रखती है। यदि यह विचलित हो भी जाती है तो सन्तलुन को पुनः प्राप्त करने की प्रवृति रखती है।

मौद्रिक अर्थव्यवस्था में नव–प्रतिष्ठित आर्थिक–वृद्धि मॉडल

मुद्रा रहित नव–प्रतिष्ठित विकास मॉडल को एक मौद्रिक अर्थव्यवस्था में भी लागू किया जा सकता है। मुद्रा रहित मॉडल में व्यक्ति भौतिक पूंजी प्राप्त करके ही बचत का प्रयोग कर सकते थे परन्तु एक मौद्रिक अर्थव्यवस्था में बाह्य साधन मुद्रा को प्राप्त करके बचत का प्रयोग किया जा सकता है। इस मॉडल में यह परिकल्पना की गई है कि बॉण्ड विद्यमान नहीं है। मुद्रा बाजार यह कल्पना की गई है कि मुद्रा बाजार को शामिल करने से मुद्रा के वास्तविक शेष की प्रति व्यक्ति मांग (md/Pn) प्रति व्यक्ति उत्पादन (Y/n) पर निर्भर करती है। यह मुद्रा की क्रय–विक्रय सम्बन्धी मागं को प्रदर्शित करता है। इसके अतिरिक्त मुद्रा की यह मांग आशंसित मुद्रा स्फीति तथा भौतिक पूंजी से प्राप्त आय की दर पर निर्भर करती है।

इसकी व्याख्या निम्न प्रकार से की जा सकती है परन्तु इससे पहले हम केन्ज़ीयन प्रति व्यक्ति मुद्रा की मांग को निम्न प्रकार से व्यक्त करते है:

$$m^d/Pn = f\,(Y/n, r^b)$$

r^b = returns on bonds समीकरण में r^b लोगों के speculative behaviour को दर्शाता है परन्तु इससे समीकरण इस बात में भिन्न है कि उसमें r^b के स्थान दर r^k रखा गया है जो यह दर्शाता है कि Assets जो मुद्रा का विकल्प है, वह इस मॉडल में भौतिक पूंजी का स्थान रखता है। इसकी भिन्नता इस बात से भी स्पष्ट है कि समीकरण में r^e भी सम्मिलित है। यह इसलिए है क्योंकि केन्ज़ीयन मॉडल में यह कल्पना की गई है कि मुद्रा स्फीति या मन्दी की दर शून्य है। लेकिन Neo-Classical model में कीमतों को स्थिर नहीं माना गया है। इसलिए कीमतों के प्रभाव

को दर्शाने के लिए इसको equation में शामिल किया गया है। यदि π^e धनात्मक है तो मुद्रा के वास्तविक शेष से आय की अनुमानित दर नकारात्मक होगी अर्थात् मुद्रा स्टॉक का मल्य गिर जायेगा क्योंकि बढ़ती हुई कीमतें मुद्रा शेष के वास्तविक मूल्य को कम कर देती है। इसलिए उंची अनुमानित स्फीति दर पर $\frac{m_d}{P_n}$ अर्थात प्रति व्यक्ति वास्तविक मुद्रा की मांग कम होगी। यदि अर्थव्यवस्था में r^k और $\frac{y}{n}$ दिया हुआ हो तो Demand for real balance का r^e से नकारात्मक सम्बन्ध होगे जैसा कि निम्न चित्र में यह मांग वक्र MM द्वारा दर्शाया गया है। वास्तविक मुद्रा की प्रति व्यक्ति मांग तथा भविष्य की आसंसित मुद्रास्फीति π^e में नकारात्मक सम्बन्ध होता है, क्योंकि जब अनुमानित मुद्रा–स्फीति के भविष्य में बढ़ने की आशा होगी तो लोग भी अधिक वस्तुएं खरीदेगें तथा वास्तविक मुद्रा की मांग कम हो जायेगी आदि। यदि भौतिक पूंजी की सीमांत उत्पादकता [marginal productivity of physical capital r^k] बढ़ जाता है तो MM Demand curve नीचे सरक कर *Md* हो जायेगा।

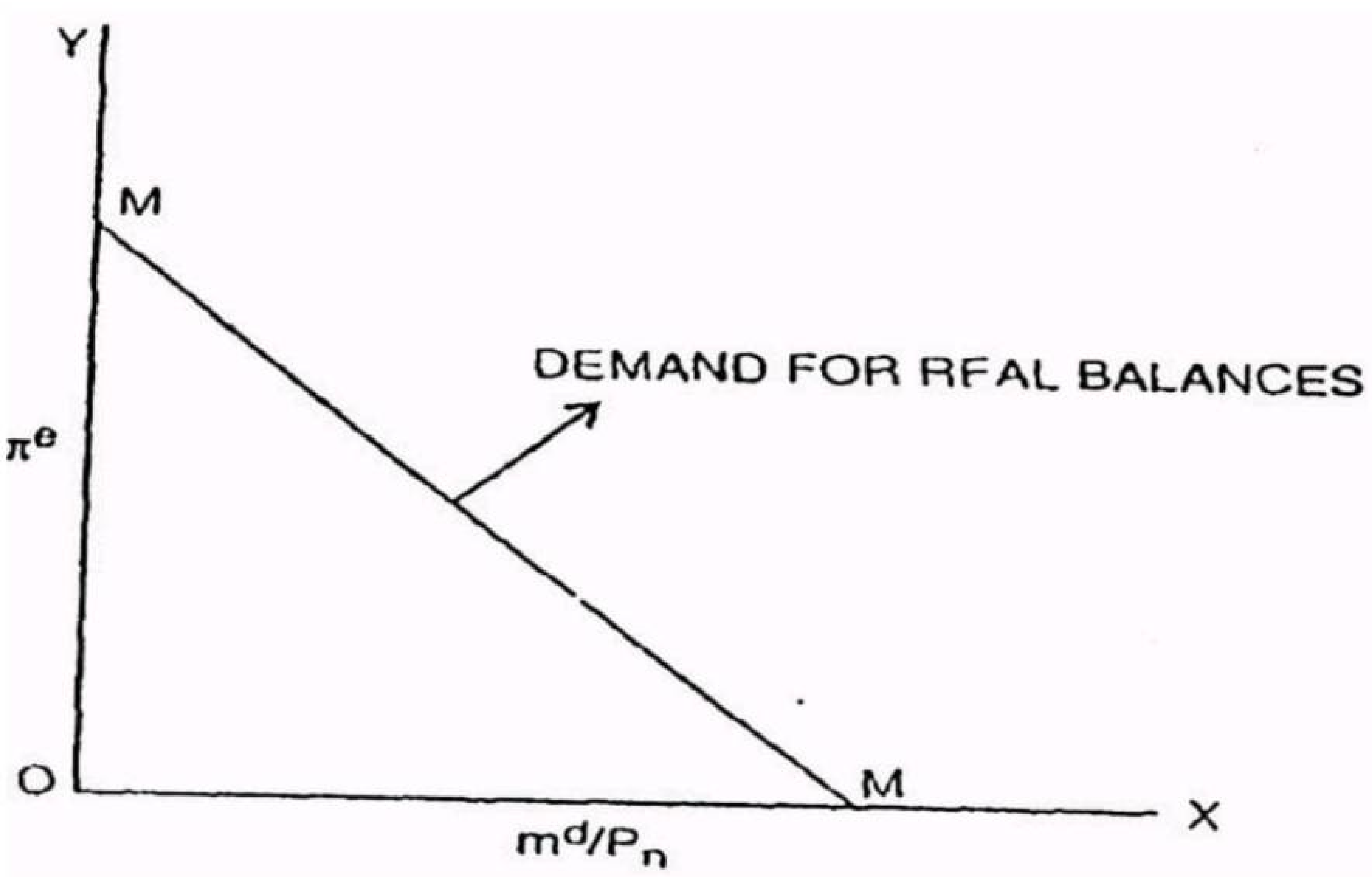

चित्र नं. 47

मुद्रा की कुल पूर्ति नकदी रूप m^s में एक बाह्रय तत्व है जो सरकार द्वारा निर्धारित होता है। सरकार m^s, को देश की आवश्यकताओं के अनुसार नई मुद्रा छापकर बढ़ाती रहती है। प्रति समय मुद्रा के स्टॉक में परिवतर्न यदि M है तो मुद्रा में प्रतिशत परिवर्तन की दर M/M^S होगी। यदि Inflation की दर (γ) P/P है तो हम real balances की दर को निम्न प्रकार से लिख सकते हैं:–

$$\frac{M}{M_s} - \frac{P}{P_s} = \mu - \pi$$

m = Change in money supply P = Change in price level

μ = The rate of change in money supply π= The rate of change in money supply

मौद्रिक बाज़ार में सन्तुलन की अवस्था में मुद्रा के वास्तविक शेष की प्रति व्यक्ति मांग $\frac{m_d}{P_n}$ किसी समय बिन्दु पर प्रति व्यक्ति वास्तविक मुद्रा शेष (real balances) की पूर्ति के बराबर होती है।

$$\frac{m_d}{P_n} = \frac{m_s}{P_n}$$

Neo-Classical Model में यह एक आधारभूत मान्यता है कि मुद्रा बाजार हमेशा सन्तुलन में होता है क्योंकि कीमत स्तर मुद्रा पूर्ति में परिवतर्न के साथ–साथ ही बदलता रहता है। इसलिए यह समीकरणों में समानता निश्चित करता है। इसलिए money market में सन्तुलन Price Level Adjustment के माध्यम से बनी रहती है। यदि nominal money supply rate, μ से बढ़ रही है और प्रति व्यक्ति real blances की मांग $\frac{m_d}{P_n}$ स्थिर है अर्थात मुद्रा की मांग में परिवर्तन शून्य (0) है तो समीकरण को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है :–

(शून्य) $0 = \mu - \pi - n' \; \pi = \mu - n'$

समीकरण से स्पष्ट है कि मुद्रा बाजार में सन्तुलन इस बात से निर्धारित होता है कि rate of inflation (π) हमेशा per capita nominal money supply की वृद्धि दर μ के बराबर है। क्योंकि n' स्थिर रहता है, इसलिए इन योग शून्य के बराबर होती है। *md* मुद्रा के वास्तविक शेष की मांग P_n को ध्यान में रखते हुए यह पूछा जा सकता है कि *Pn* , ^{k} r^{e} को कौन निर्धारित करता है जबकि ये r और तत्व स्वयं मुद्रा की मांग का निर्धारण करते है यह तथ्य चित्र से देखा जा सकता है। जिसमें output per head (Y/n) capital labour ratio (K/n) द्वारा निर्धारत होता है। इसी प्रकार समीकरण में मुद्रा के Demand Function में इन चरों के स्थान पर K/n को प्रतिस्थापित किया जा सकता है। इससे भी रोचक समस्या यह है कि expected rate of influation (r^{e}) को कौन निर्धारित करता है। Neo Classical Growth model में यह कल्पना की गई है कि expected rate of inflation प्रति व्यक्ति नकद मद्रु की पूर्ति (nominal money supply) की वृद्धि के बराबर होता है सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से यह सिद्ध हो गया है कि एक देश से दूसरे देशो में घटनाओं या नीति परिवर्तन का हस्तान्तरण होता रहा है। दूसरे दश ने आर्थिक परिवर्तन के प्रति एक देश किस हद तक प्रतिक्रिया करता है यह दूसरे देश के आकार, इसका खुलापन राष्ट्रीय आय का कितना भाग व्यापार में प्रयोग किया जाता है तथा गुणक जो MPS, MPI तथा MPT (b, m, t) पर निर्भर करता है। किसी देश की अपनी आर्थिक घटनाओं तथा नीति परिवर्तन को हस्तान्तरित करने की प्रवृति इस बात पर निर्भर करता है कि दूसरे देश की तुलना में इसका अपना आकार, खुलापन तथा इसका गुणक कितना है। इस संदर्भ में सन् 1979 में 31 देशों का अध्ययन किया गया। यह जांचा गया कि देशों की राष्ट्रीय आय का एक प्रतिशत राजकोषीय विस्तार जैसे सरकारी व्यय में वृद्धि आदि करने से राष्ट्रीय आय गुणक जिसमें अन्तः क्रिया प्रभाव भी शामिल है तथा अन्य देशों की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने की क्षमता कितनी है। अमेरिका की GNP अन्य लगभग चार देशों की GNP के समान है घरेलू गुणक 1.47 है। अमेरिका में किया गया राजकोषीय विस्तार इसक सीमान्त आयात प्रवृति कम होते हुए इसका व्यापार शेष पर बुरा प्रभाव पड़ा। इसका कारण आय वृद्धि से आयातों का बढ़ना था। इसके परिणामस्वरूप अन्य देशों की GNP लगभग 0.74 प्रतिशत से बढ़ी। ऐसा ही अध्ययन जब जापान जिसकी GNP अमेरिका की GNP का लगभग 4.5 प्रतिशत है, के लिए किया गया तो यह पाया गया कि जापान में किया गया राजकोषीय विस्तार यहां की आय तथा अन्य प्रभाव अमेरिका की तुलना में काफी कम उत्पन्न कर सका। इसका कारण जापान का अमेरिका की तुलना में छोटा आकार तथा कम गुणक का मलूय जो लगभग 0. 2 प्रतिशत था होना रहा है। जर्मनी जिसकी GNP जापान की GNP का लगभग 2/3 भाग है का भी अध्ययन किया गया। जर्मनी काफी खुली अर्थव्यवस्था है परन्तु कम मूल्य के गुणक वाला देश है। इसके खुलेपन के कारण इसका आकार तथा गुणक कम होते हएु भी जर्मनी में किया राजकोषीय विस्तार अन्य दशेों की GNP पर लगभग 0. 23 प्रतिशत प्रभाव जो जापान की तुलना में काफी अधिक प्रभाव है छोड़ सका। यदि विनिमय दर पूर्ण परिवर्तनशील है तो विदेशी व्यापार सन्तुलन को कायम रखने के लिए विनिमय दर उपर नीचे होती रहेगी। इसका गुणक, घटनाओं के हस्तान्तरण और सरकारी नीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। मान लीजिये किसी छोटे देश के घरेलू

स्वतन्त्र निवेश में वृद्धि d I_d कर दी जाती है जो S- I_d फलन को नीचे की ओर सरकार देती है। इससे राष्ट्रीय आय बढ़ेगी जो आयातों (M) को बढ़ा देती है। आयातों के बढ़ने के कारण इस देश का प्रतिकूल व्यापार सन्तुलन उत्पन्न हो जायेगा जो प्रारम्भ में शून्य था। यह प्रतिकूल व्यापार शेष विनिमय दर को कम कर देगा ताकि निर्यात बढ़ सके और आयात कम हो सके। मार्शल–लर्नर की शर्तों के होते हुए यह X - M फलन को उपर इस प्रकार सरकायेगा ताकि नये S - I_d फलन को शून्य व्यापार शेष पर काट सके।इसको निम्न चित्र की सहायता से व्यक्त किया गया है। चित्र में प्रारम्भिक सन्तुलन Y_0 आय के स्तर पर होता है। जहां S - I_d फलन तथा X - M फलन तथा X - M फलन एक दूसरे को काटते हैं। ज्यों घरेलू निवेश में वृद्धि की जाती है तो (S - I_d) फलन नीचे की ओर सरक कर S -(I_d + dI_d) का स्थान ग्रहण कर लेता है। यदि स्थिर विनिमय दर प्रचलित है तो सन्तुलित आय का स्तर V_1 पर स्थापित होगा जिस पर V_1 B के समान प्रतिकूल व्यापार शेष उत्पन्न हो गया है परन्तु विनिमय दर पूर्ण परिवर्तनशील होने के कारण विनिमय दर गिरेगा, जिससे निर्यात (X) बढते है तथा आयात (M) गिर जाते हैं। इस कारण नये (X+dX)-(M-dM) तथा S-(Id + dI_d) फलन एक दूसरे को आय के Y_2 स्तर पर इस प्रकार सन्तुलन स्थापित करते हैं कि व्यापार शेष शून्य रह जाता है। परिवर्तनशील विनिमय दर के अन्तर्गत X-M फलन पूर्ण रूप से निष्क्रिय है तथा उतना ही सरकता है जितना सन्तुलित आय तथा शून्य व्यापार शेष निर्धारण करने के लिए अनिवार्य है।

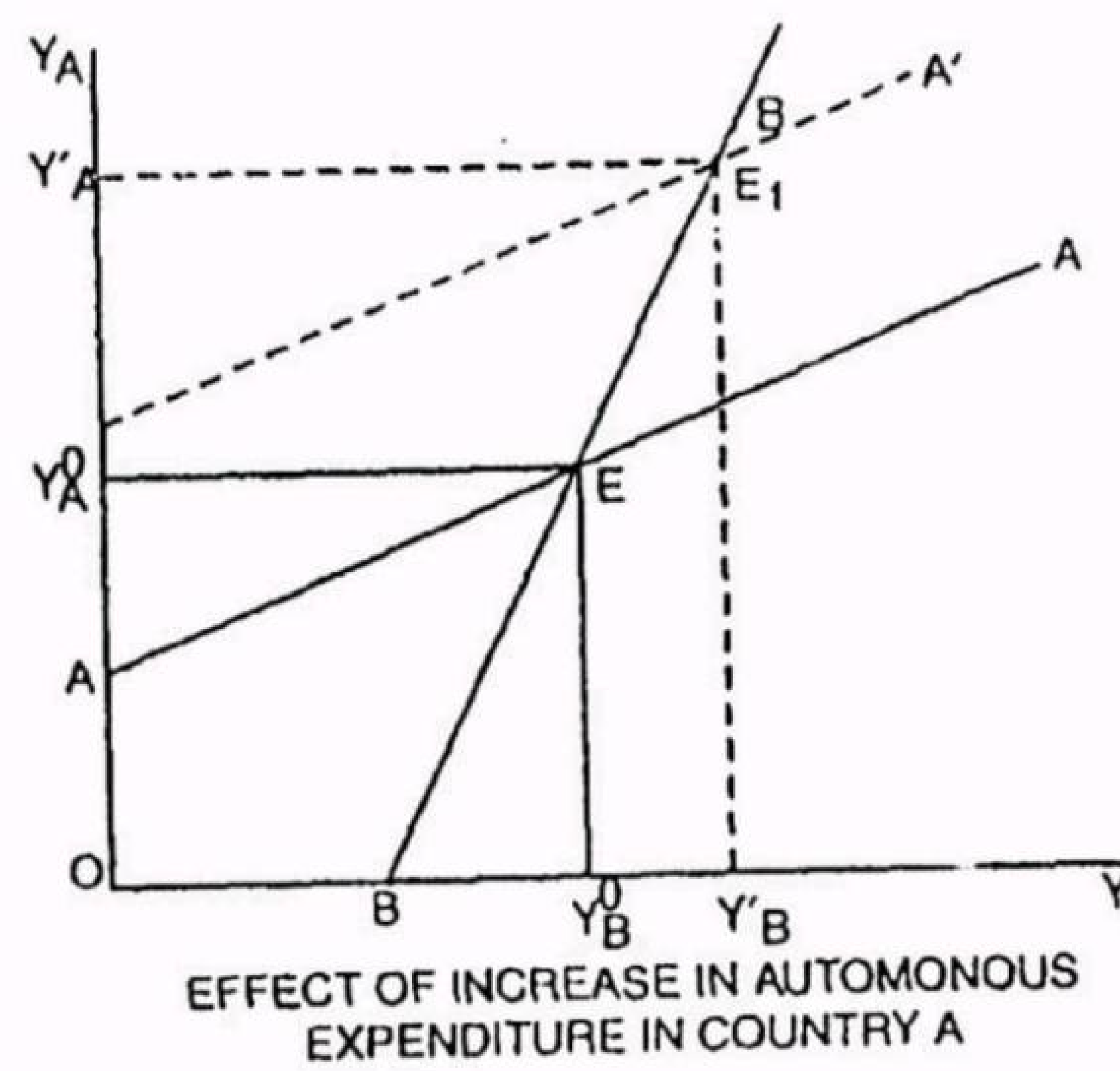

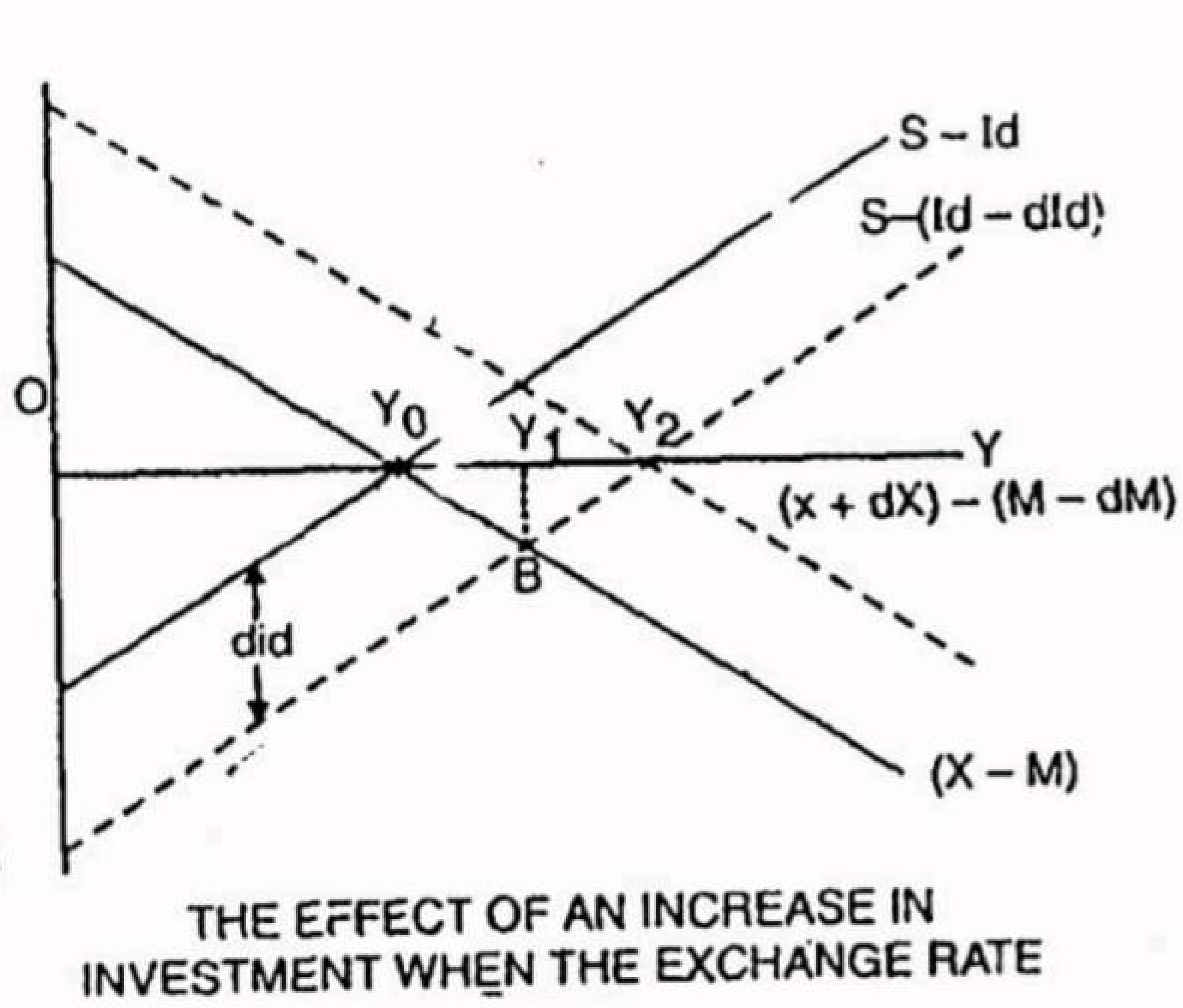

चित्र नं0 48

दूसरा महत्वपूर्ण प्रभाव यह है कि परिवर्तनशील विनिमय दर के अन्तर्गत स्थिर विनिमय दर की अपेक्षा राष्ट्रीय आय में अधिक वृद्धि होती है। अर्थात परिवर्तनशील विनिमय दर के अन्तर्गत गुणक अधिक शक्तिशाली होता है। इसके अन्तर्गत निर्यात में वृद्धि (dX) आयात में वृद्धि (dM), dX = dM के बराबर होती है। एक और ध्यान देने की बात यह है कि परिवर्तनशील विनिमय दर के अन्तर्गत एक अर्थव्यवस्था अपने आप को अन्य देशों की घटनाओं से सुरक्षित रख सकती है। अन्य देशों की घटनाओं को विनिमय दर में परिवर्तन द्वारा वह आयात निर्यात को समान कर लेती है। जैसे अन्य दशे के विकासात्मक प्रयासों से वहां आय बढ़ती है तथा उनके आयात बढ़ते है तथा घरेलू देश के निर्यात बढ़ते हैं। घरेलू देश में अनुकूल व्यापार शेष उत्पन्न होगा। इससे घरेलू दो का विनिमय दर बढ़ेगा जो निर्यातों को कम करगें तथा आयातों को बढ़ा देगा तथा पुनः व्यापार शेष शून्य पर स्थापित हो जायेगा।

विदेशी विनिमय दर

विदेशी विनिमय दर के आधार पर ही एक देश की वस्तुओं की कीमतों को अन्य देश की करेन्सी में निर्धारित किया जाता है तथा वस्तुओं का आयात व निर्यात किया जाता है। जैसे भारत में उत्पादित एक कम्प्यूटर कीमत 20,000 रू0 है तथा अमेरिका भारत से कम्प्यूटर खरीदना या आयात करना चाहता है। परन्तु आयात करने से पहले अमेरिका भारत में बने कम्प्यूटर की कीमत डॉलर में निर्धारित करेगा ताकि अमेरिका या अन्य देशों में बने कम्प्यूटर की कीमतों से तुलना की जा सके। मान लो विनिमय दर रू0 50 = 1 है। इस आधार पर कम्प्यूटर की डॉलर में कीमत 400 डॉलर है। अब यदि अमेरिका या अन्य देशों में बने कम्प्यूटर की कीमत 400 डॉलर से अधिक है तो अमेरिका भारत से कम्प्यूटर अपनी मांग के अनुसार खरीदेगा या आयात करेगा अन्यथा नहीं। विदेशी विनिमय दर में परिवर्तन होने से भुगतान शेष का सन्तुलन प्रभावित होता है। अतः विदेशी विनिमय दर अत्यन्त महत्वपूर्ण होने के कारण इस अध्याय में इसके निर्धारण का अध्ययन किया गया है। इसके साथ ही स्थिर विनिमय दर तथा परिवर्तनशील विनिमय दर जो विश्व में भिन्न–भिन्न समय प्रचलन में रही है उनका अध्ययन भी किया गया है। विदेशी विनिमय से हमारा अभिप्राय विदेशी करेंसी होता है। विदेशी विनिमय दर एक करेंसी की किसी अन्य विदेशी करेंसी में कीमत होता है। इसके दो प्रकार से परिभाषित किया जा सकता हैः घरेलू करेंसी की एक इकाई से विदशी करेंसी की कितनी मात्रा या इकाईयों क्रय की जा सकती है, यह विदेशी करेंसी की एक इकाई से घरेलू करेंसी की कितनी मात्रा या इकाईयों क्रय की जा सकती है। आर्थिक जगत तथा भारत में बाद वाली परिभाषा अपनाई गई है। जबकि UK तथा बहुत से अन्य देशों में पहले वाली परिभाषा अपनाई गई है। विदेशी विनिमय बाजार में मुख्यतः व्यापारिक बैंक, विदेशी विनिमय दलाल तथा अन्य अधिकृत दलाल और मौद्रिक अधिकारी भाग लेते है। यह बाजार विश्वव्यापी होता है जिसके विभिन्न देशों में केन्द्र स्थापित किये होते हैं। ये केन्द्र एक दूसरे से सम्पर्क बनाये हुए होते हैं। विदेशी विनिमय बाजार में भाग लेने वाले एक से अधिक केन्द्र से सम्पर्क बनाये होते है। तत्काल विनिमय बाजार वह बाजार है जिसमें वर्तमान विनिमय दर के आधार पर करेंसियों के वर्तमान सौदे होते हैं। एक अन्य प्रकार का विनिमय बाजार भविष्य में होने वाले सौदों से सम्बन्धित होता है। जिसको अग्रिम व्यापार कहा जाता है। इस भाग में लोचशील विनिमय प्रणाली को स्वीकारते या मानते हुए यह व्याख्या की गई कि किस प्रकार किसी करेंसी की विनिमय दर निर्धारित होती है। लोचशील विनिमय दर प्रणाली में विनिमय दर का निर्धारण विदेशी विनिमय की मांग तथा पूर्ति द्वारा निर्धारित होता है। इस प्रणाली में विनिमय दर का निर्धारण विदेशी विनिमय की मांग तथा पूर्ति की शक्तियों द्वारा ठीक इसी प्रकार से निर्धारित होता है जिस पर वस्तु बाजार में वस्तु की मांग व पूर्ति की शक्तियां वस्तु की कीमत का निधार्रण करती है। वर्तमान में भारत तथा अमेरिका में लोचशील विनिमय दर प्रणाली अपनाई हई है। अतः प्रदेश देश की करेंसी का दूसरी करेंसी के रूप में कीमत या दर उनकी करेंसियों की मांग तथा पूर्ति पर निर्भर करती है। विदेशी विनिमय की मांग तथा पूर्ति के आधार पर रूपये की डालर में विनिमय दर निम्न प्रकार से निर्धारित की गई है।

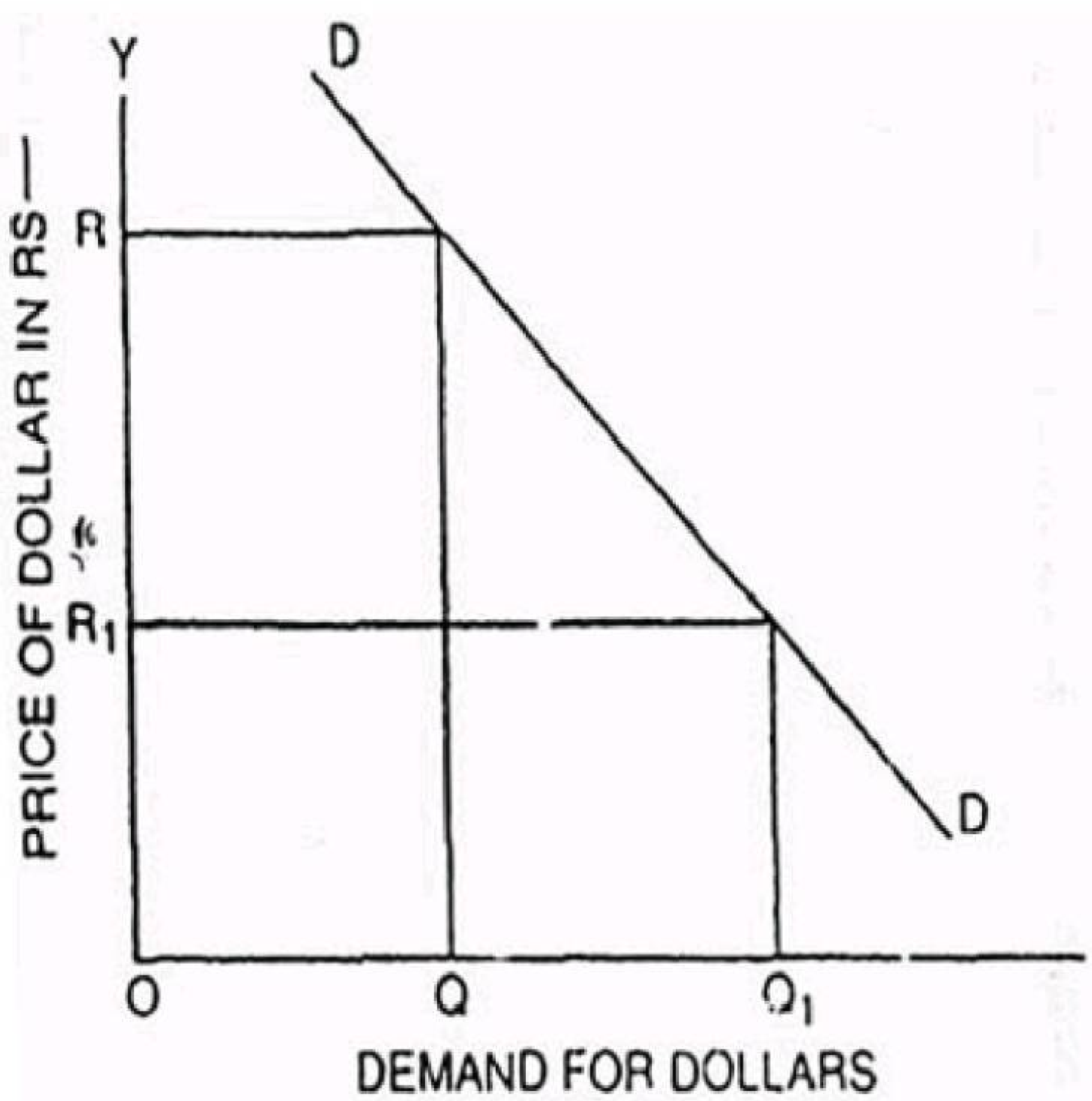

चित्र नं 49

विदेशी विनिमय की मांग

स्पष्ट है कि डॉलर की मांग उन भारतीय फर्मों तथा निगमों द्वारा की जाती है जो अमेरिका से वस्तुओं तथा सेवाओं का आयात करना चाहते हैं। इन आयोतित वस्तुओं तथा सेवाओं का डॉलर में भुगतान करना होता है। अमेरिका से जितनी अधिक वस्तु तथा सेवाओं का आयात किया जायेगा उतनी ही डॉलर की मांग अधिक होगी। इसके अतिरिक्त जो लोग अमेरिका में शेयर या कारखाने या बॉड खरीदना चाहते हैं वे भी डॉलर की मांग करते हैं। इस परिस्थिति में डॉलर की मांग निम्न तत्वों पर निर्भर करती है।

- भारतीयों द्वारा अमेरिका से वस्तु तथा सेवाओं की आयात की मात्रा।
- अमेरिका कम्पनियों के ब्रांड, शेयर में निवेश करने के लिए डॉलर की मांग की जाती है।
- भारतीय लोगों द्वारा अमेरिका में शिक्षा प्राप्त करने, भ्रमण करने आदि के लिए भी डॉलर की मांग की जाती है।
- भारतीय फमें अमेरिका में अपना कारखाना, व्यवसाय केन्द्र आदि स्थापित करने के लिए भी डॉलर की मांग करती है।

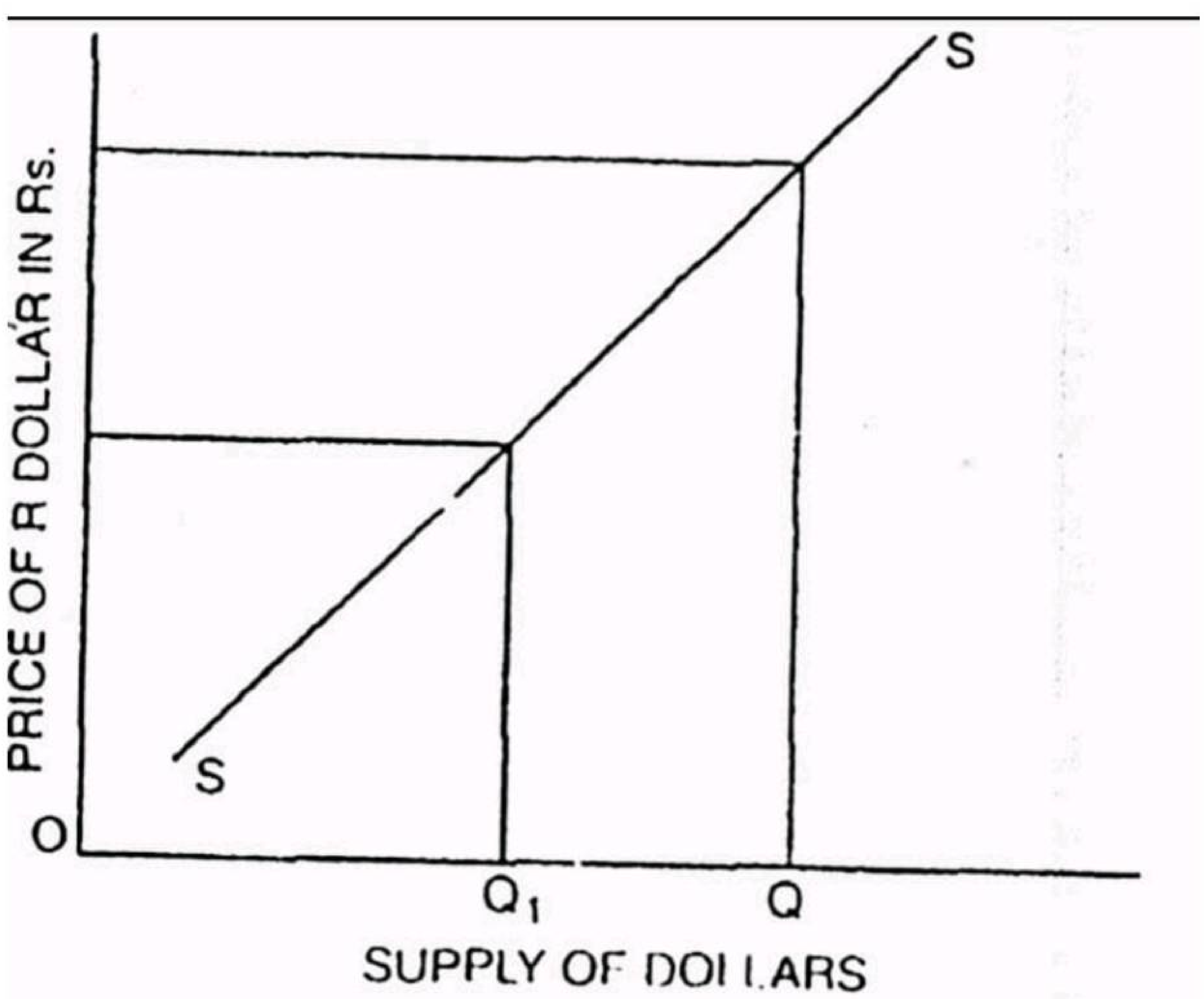

चित्र नं. 50

इस अध्याय में हम बन्द अर्थव्यवस्था के IS-LM मॉडल को बाह्रय क्षेत्र के साथ जोड़ कर अध्ययन करेंगे। बाह्रय क्षेत्र में सन्तुलन भुगतान शेष में सन्तुलन को प्रकट करता है। इस समय तक पूंजी का आवागमन सीमित था। राष्ट्र भुगतान शेष में असन्तुलन को दूर करने के लिए अपनी मौंदिक व राजकोषीय नीतियों का प्रयोग इस प्रकार करते थे ताकि आय व कीमतों में परिवर्तन के द्वारा आयातों व निर्यातों में वांछित परिवर्तन किया जा सके व भुगतान शेष के चालू खाते पर ही ध्यान केन्द्रित रहता था तथा पूंजी खाते की अब तक के भुगतान शेष सम्बन्धी सिद्धान्तों में

अवहेलना की जाती रही परन्तु 1970 के आस–पास तथा इसके बाद पूंजी के आवागमन में तीव्र गति से वृद्धि हुई जो भुगतान शेष की असन्तुलित करने से अधिक प्रभावी भूमिका निभाती है। इससे विनिमय दर में परिवर्तन की आवश्यकता तीव्र होती है।

विनिमय दर पूंजी में वृद्धि के अतिरिक्त निम्न दो सकारात्मक प्रभावों के कारण भी स्थिर विनिमय दर के स्थान पर परिवर्तनशील विनिमय दर अपनाने के लिए बाध्य कर दियाः परिणामतः अनेक विकसित देशों जैसे अमेरिका, इग्लैण्ड, जापान, फ्रांस आस्ट्रेलिया आदि देशों ने स्थिर विनिमय दर के स्थान पर परिवतर्नशील विनिमय दर की नीति अपना ली। परिवर्तनशील विनिमय दर का पूंजी के आवागमन पर भी प्रभाव पड़ता है।

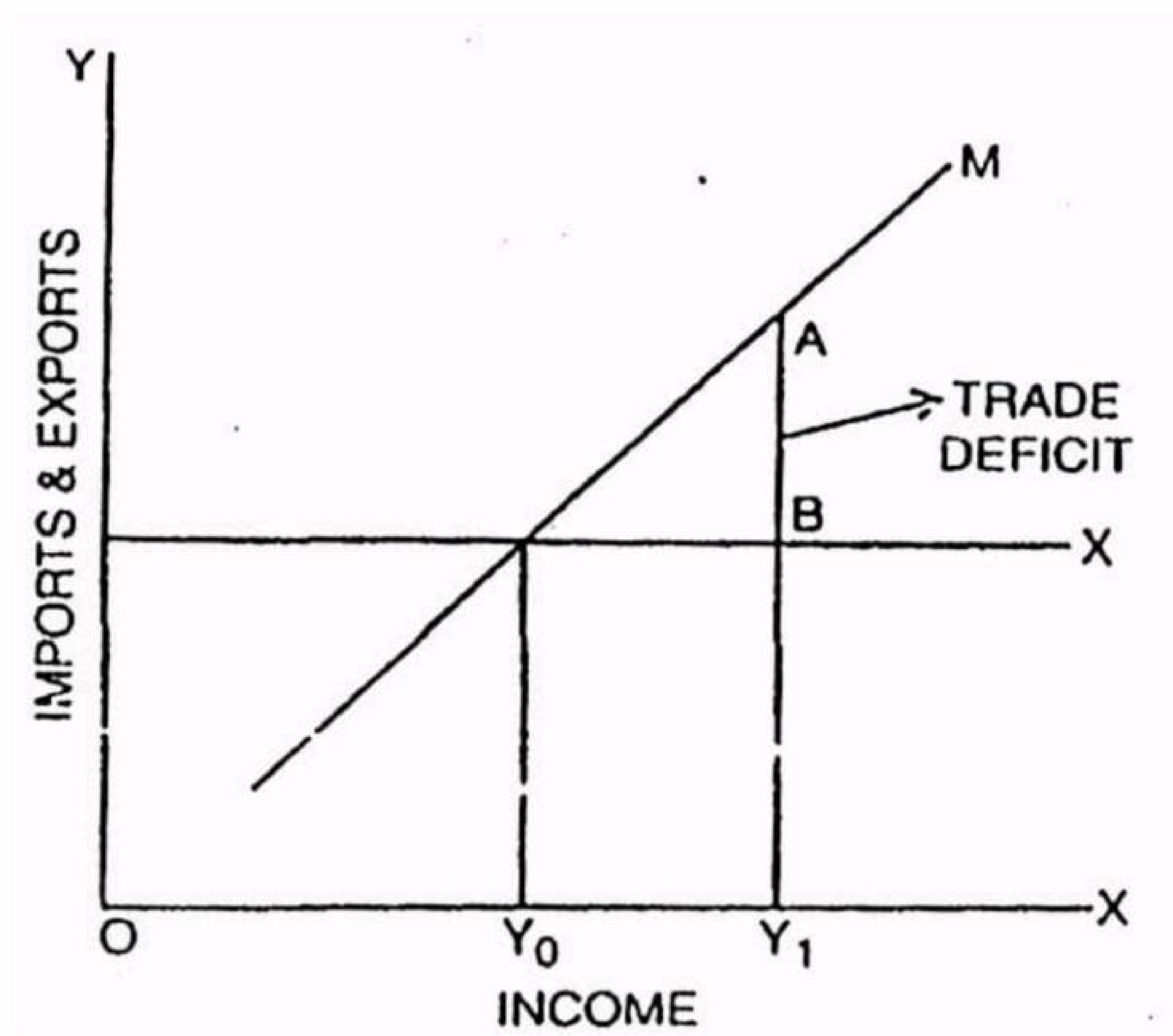

चित्र नं. 51

परिवर्तनशील विनिमय दर अपनाने से नीति निर्धारक भुगतान शेष में घाटे की चिन्ता से मुक्त हो जाते हैं तथा वे घरेलू उद्देश्यों पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं। परिवर्तनशील विनिमय दर आन्तरिक शेष जैसे पर्णू रोजगार आदि तथा ब्रह्य शेष जैसे भुगतान शेष में सन्तुलन आदि उद्देश्यों के मध्य सम्भावित तथा सक्षम टकराव को दूर कर सकता है। यह टकराव सलंग्न चित्र की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है। चित्र में स्पष्ट है कि Y_0 आय का स्तर सन्तुलित स्तर है क्योंकि यहां व्यापार शेष शून्य या सन्तुलन में है। आय का Y_1 स्तर सन्तुलित नहीं कहा जा सकता क्योंकि यहां आयात (Y_1A) निर्यात (Y_1B) से अधिक है तथा व्यापार शेष में घाटा है। स्पष्ट है कि स्थिर विनिमय दर के अन्तर्गत आन्तरिक शेष तथा बाह्रय शेष के उद्देश्यों के मध्य टकराव उत्पन्न होगा। चित्र में दी गई अवस्था के अन्तर्गत यदि व्यापार शेष के घाटे को दूर करने के लिए संकचुनात्मक मौद्रिक व राजकोषिय नीति अपनाते है तो इससे राष्ट्रीय आय तथा राजगार कम होगा तथा हम Y_1 आय स्तर से Y_0 की ओर अग्रसर होते हैं। इससे हमारा आन्तरिक उद्देश्य सन्तुलन नहीं होगा। इसके विपरित यदि घरेलू आय तथा रोजगार बढ़ाने का प्रयास करते हैं तो व्यापार शेष में घाटा बढ़ता जाता है। इसके विपरित परिवर्तनशील विनिमय दर प्रणाली के अन्तगर्त विनिमय दर में स्वतः अवमूल्यन इस अनुपात से होगा कि आयात व निर्यात पुनः बराबर हो सकेगें तथा व्यापार शेष का घाटा स्वतः दूर हो जायेगा। इसके लिए आय व रोजगार कम करने की आवश्यकता नहीं है।

Flexible Exchange Rates परिवर्तनशील विनिमय दर घरेलू अर्थव्यवस्था को बाह्रय आर्थिक उतार–चढाव से सुरक्षित रख सकता है। जैसे विदेशी मन्दी से घरेलू निर्यात कम हो जाते हैं जो देश की अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव छोड़ते हैं। कैसे? इसको निम्न चित्र की सहायता से दिखाया जा सकता हैः

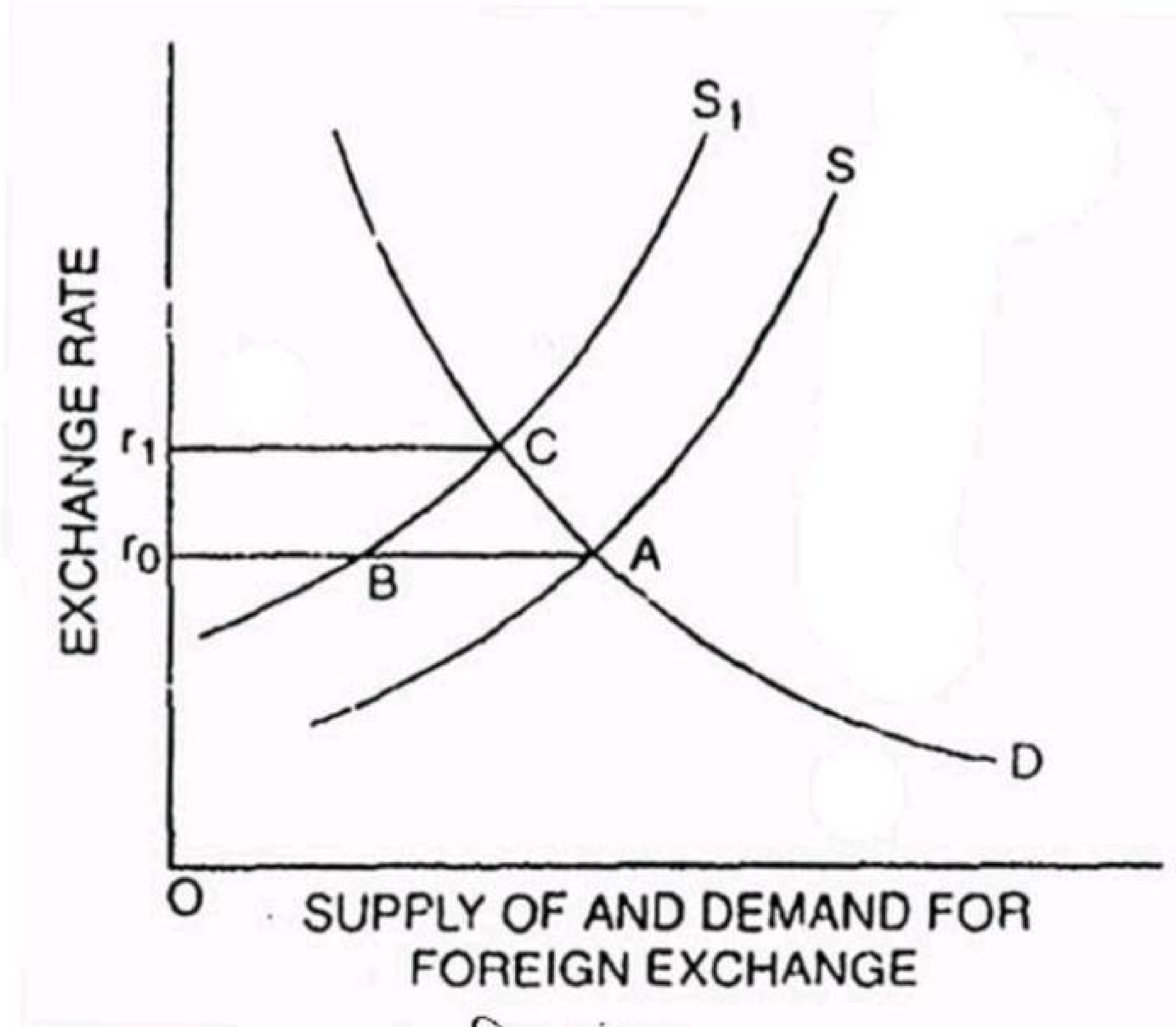

चित्र नं 52

चित्र में विदेशी विनिमय की मांग D वक्र तथा पूर्ति S वक्र द्वारा दर्शाई गई है, दोनों वक्र। बिन्दु पर काट करके r_0 विनिमय दर का निधार्रण करते है, तथा यहां पर विदेशी विनिमय बाजार सन्तुलन में होता है। मान लीजिये विदेशों में मन्दी उत्पन्न हो जाती है जिसमें घरेलू निर्यात गिर जाते हैं। इससे विदेशी मुद्रा की पूर्ति कम हो जाती है। जो S वक्र को बाई ओर S_1 पर सरका देती है। यदि विनिमय दर r_0 पर ही स्थिर रहे तो AB के समान भुगतान शेष में घाटा उत्पन्न हो जायेगा तथा बाह्रय शेष असन्तुलित रहेगा परन्तु यदि परिवर्तनशील विनिमय दर प्रणाली अपनाई गई है तो घरेलू मुद्य का अवमूल्यन इस प्रकार तथा इस अनुपात से होगा कि विदेशी मुद्रा की मांग व पूर्ति स्वतः C बिन्दु पर सन्तुलन में होगी व विनिमय दर कम होकर r_1 हो जायेगी। अतः इस प्रकार के बाह्रय उतार–चढ़ावों से लोचशील विनिमय दर के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था स्वतः ही सुरक्षित रहती है।पूंजी प्रवाह में वृद्धि भुगतान शेष को बढ़–चढ़ कर प्रभावित करती रही है। भुगतान शेष के सिद्धान्तों का ध्यान इस ओर आकृष्ट होने लगा। दो अर्थशास्त्रियों, जिनके नाम J.Marcus FlemingAnd Robert Mundell, ने इस क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया। इसलिए इस मॉडल का नाम जिसका हम आगे अध्ययन करने जा रहे हैं।

मुंडेल–फलैमिंग में कीमतों को स्थिर तथा पूंजी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गतिशील माना गया है। इसलिए इस मॉडल को। Fixed Model with Capital Mobility के नाम से भी जाना जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पूंजी गतिशील होने के कारण ब्याज की दर का प्रभाव भुगतान शेष पर पड़ता है। घरेलू अर्थव्यवस्था में यदि ब्याज की दर बढ़ जाती है तो विदेशी पूंजी का आगमन बढ़ जायेगा क्योंकि विदेशी निवशे अधिक ब्याज कमाने के लिए इस देश के बैंकों में अपनी पूंजी अधिक जमा करवायेगें। इसके भुगतान शेष के पूंजी खाते में प्राप्तियां बढ़ जायेगी तथा भुगतान शेष पर अनूकुल प्रभाव पड़ेगा। इसके विपरीत यदि ब्याज दर कम हो जाती है तो पूंजी का निकास होता है। इसलिए पूंजी गतिशील होने के कारण भुगतान शेष के विश्लेषण में पूंजी खाते तथा ब्याज की दर को सम्मिलित करना होगा। ऐसा हम एक बन्द अर्थव्यवस्था के परिचिय IS-LM मॉडल का विस्तार करके जिसमें भुगतान शेष की व्याख्या भी साथ–साथ की जाती हो कर सकते हैं। ऐसा करने से IS-LM मॉडल का रूप IS-LM-BP मॉडल बन

जाता है जिसको मुंडेल फलैमिंग मॉडल भी कहा जाता है। इसकी व्याख्या के लिए पहले हम एक खुली अर्थव्यवस्था के लिए IS तथा LM वक्र ज्ञात करेंगे। इसके बाद भुगतान शेष वक्र की व्याख्या, पूंजी की गतिशीलता को कम या अधिक मान कर करेंगे। IS वक्र किसी अर्थव्यवस्था के वास्तविक आय तथा वास्तविक ब्याज दर के विभिन्न संयोगों को प्रकट करता है। एक खुला अर्थव्यवस्था के वस्तु बाजार की सन्तुलन की शर्त वही है जो एक बन्द अर्थव्यवस्था में होती है अर्थात राष्ट्रीय आय प्रवाह के स्त्राव इस प्रवाह के इन्जैक्शनज के बराबर होने चाहिए। एक बन्द अर्थव्यवस्था में वस्तु बाजार सन्तुलन उस समय होता है जब चत तथा निवेश एक दूसरे के बराबर होते है। एक खुली अर्थव्यवस्था के वस्तु बाजार में सन्तुलन शर्त निम्न समीकरण द्वारा व्यक्त की जा सकती है।

$I+G+X = S+M$

I = Investment ; G = Government budget deficit (expenditure less tax rvenue) : X = Export ; S = SavingAnd M = Import.

सरलता के लिए कल्पना की गई है कि सरकारी व्यय (G) आय के प्रति स्वतन्त्र है। हम मानते है कि बचत (S) और आयात (M) वास्तविक आय (Y) के बढ़ते फलन है। अर्थात् आय के बढ़ने से S तथा M पर ब्याज की दर (r) का कोई प्रभाव नहीं पड़ता माना गया है। S, M तथा Y के मध्य सम्बन्ध निम्न चित्र के C भाग में दर्शाया गया है। ब्याज की दर (r) तथा विदेशी आय को दिया हुआ माना गया है। निवेश ब्याज दर से विपरीत सम्बन्ध रखता है। निर्यात (X) तथा सरकारी व्यय (G) ब्याज (r) तथा आय (Y) से अप्रभावित रहते हैं। I+G+X का ब्याज दर (r) से सम्बन्ध भाग (A) में दर्शाया गया है।

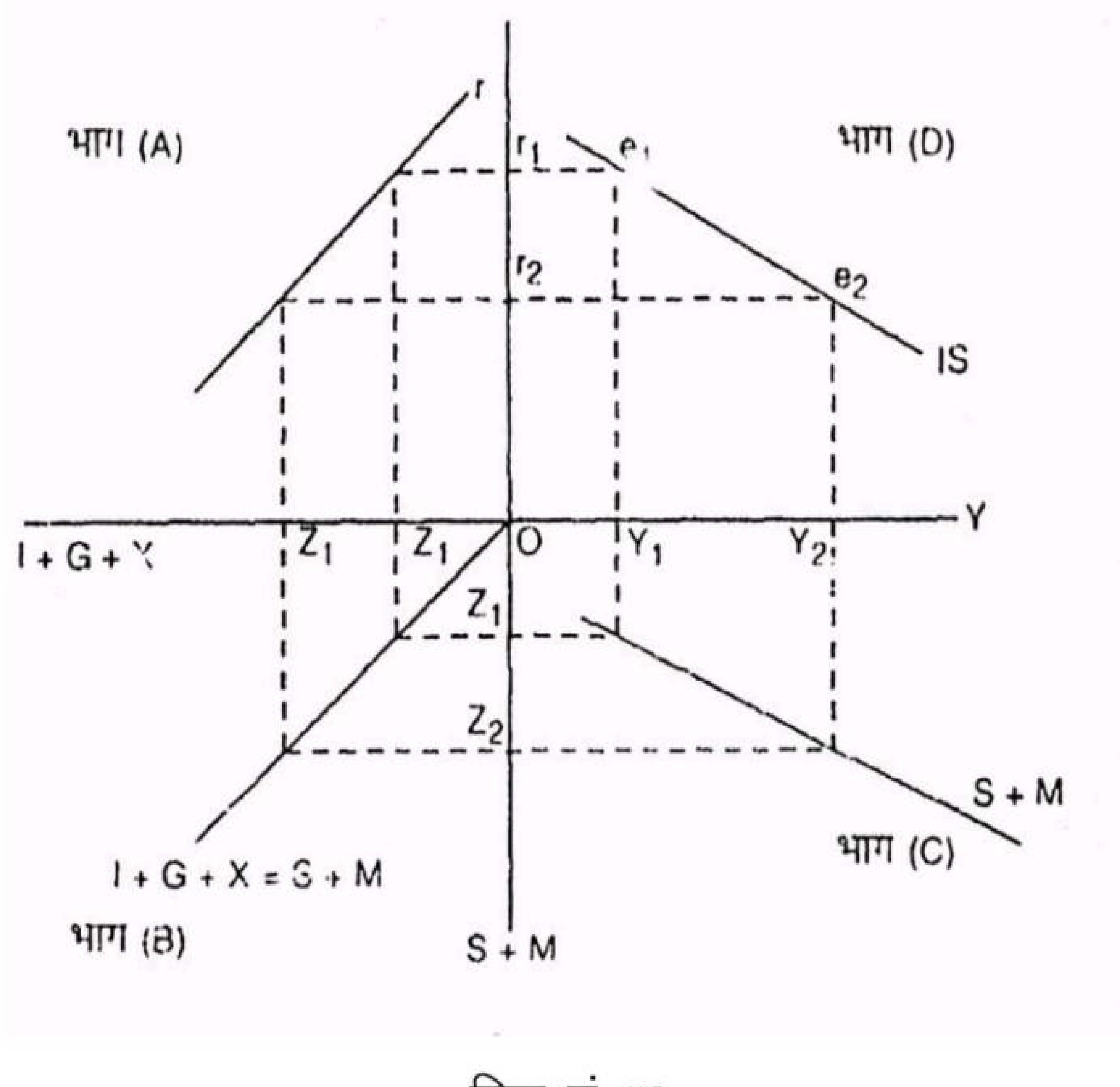

चित्र नं. 53

भाग (B) में 45^0 कोण वाली रेखा समीकरण (i) की सन्तुलन की शर्त (1+G+X = S+M) को व्यक्त कर रही है। भाग (C) में S+M को Y का बढ़ता फलन दर्शाया गया है। अब हम भाग (D) में IS वक्र निकाल सकते हैं। इसके लिए हमें ब्याज की कोई प्रचलित दर माननी होगी। चित्र में ब्याज की दर यदि r_1 है तो यह अर्थव्यवस्था में Z_1 इन्जैक्शन (1+G+X) प्रदान करती है। वस्तु बाजार सन्तुलित होने के लिए Z_1 इन्जैक्शन Z_1 स्त्राव (S+M) के समान होने चाहिए जो तभी हो सकता जब आय का स्तर Y_1 हो। भाग D में बिन्दु e_1 ब्याज की दर r_1 तथा आय के स्तर Y_1 के संयोग को प्रकट करता हुआ IS वक्र पर पड़ता है। r_2 जोकि r_1 से कम ब्याज की दर है। अर्थव्यवस्था में

निवेश को मात्रा बढ़ायेगा तथा इन्जैक्शन बढ़कर Z_2 के समान हो जायेगें वस्तु बाजार में सन्तुलन के लिए स्त्राव Z_1 के समान होने चाहिए जो आय के Y_2 स्तर पर ही सम्भव है। इसलिए r_2 तथा y_2 का संयोग वस्तु बाजार में सन्तुलन को प्रकट करता है जिसको e_2 IS वक्र का बिन्दु है। IS वक्र यहां भी नकारात्मक ढाल वाला है। परिवर्तनशील विनिमय दर सहित मुंडेल–फलैमिंग मॉडल में सन्तुलन मुंडेल–फलैमिंग मॉडल में विनिमय दर को परिवर्तनशील मानते हए तीनों वक्रों को एक साथ रख कर सन्तुलन स्थापित किया जा सकता है। BP वक्र पर परिवर्तनशील विनिमय दर मान कर निकाला गया है। इसकी चित्र 54 की सहायता से प्रकट किया जा सकता है। चित्र में दर्शाया रहा है कि मॉडल में सामान्य सन्तुलन E बिन्दु पर स्थापित होता है। जहां तीनों वक्र, अर्थात IS, LM तथा BP परस्पर काट रहे होते हैं।जब विनिमय दर परिवर्तनशील होता है तो चित्र की अवस्था हमेशा प्राप्त की जा सकती है। इसका कारण यह है कि विनिमय दर इस प्रकार समन्वय करता है कि BP वक्र वहां से होकर गुजरेगा जहां IS तथा LM वक्र एक दूसरे को काट रहे होते हैं। जब तक यह अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती। उस समय तक विनिमय दर परिवर्तित होता रहेगा तथा चलू खाते वक्र को दायें या बायें सरकाता रहेगा और BP में परिवर्तन करता रहेगा।

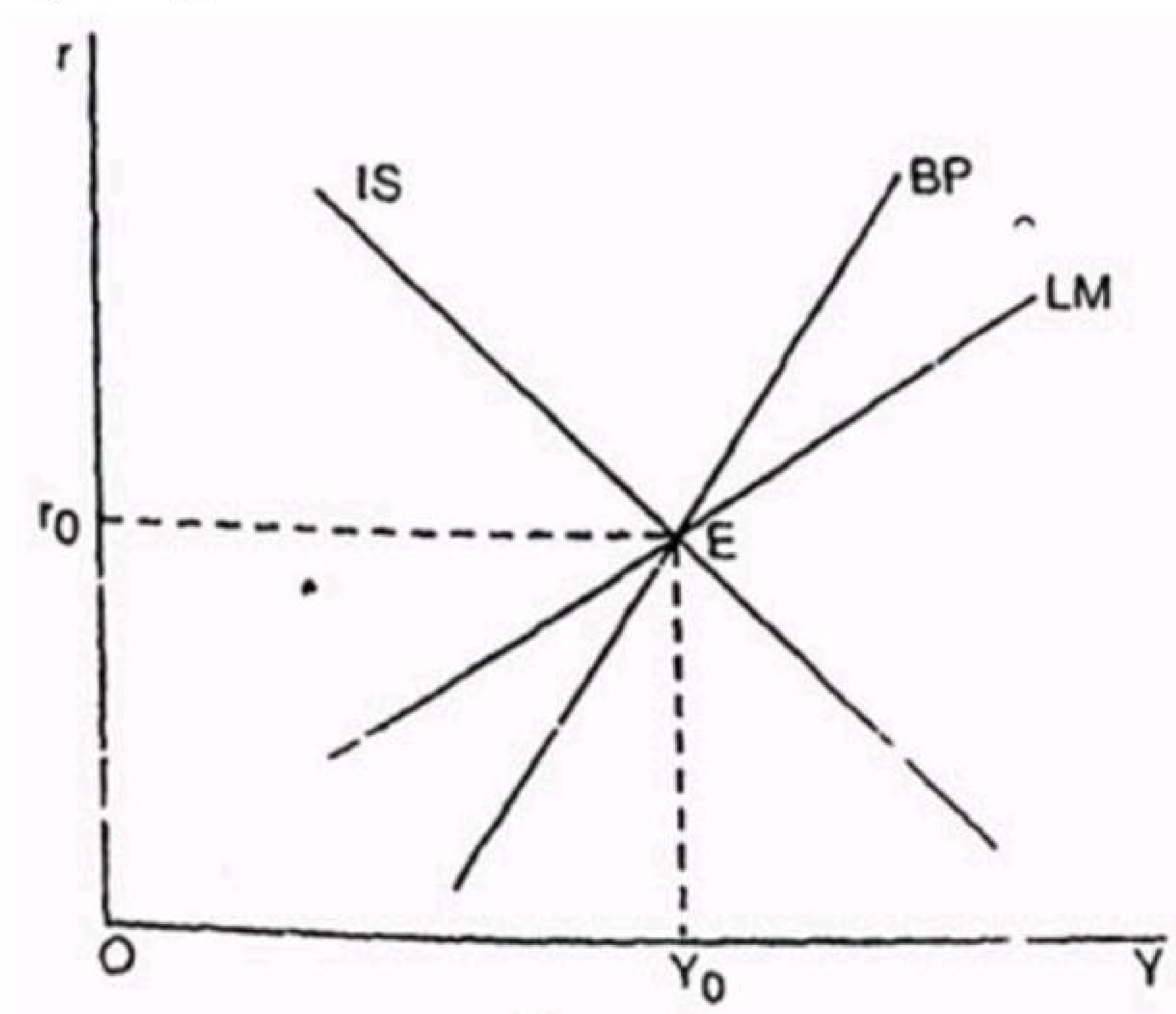

चित्र नं 54

मौद्रिक विस्तार का मुंडेल–फलैमिग मॉडल में प्रभाव

मुद्रा की मात्रा में वृद्धि से LM वक्र दाई और सरकता है तथा ब्याज की दर गिरती हैं। इसका मुंडेल–फलैमिंग मॉडल में सन्तुलन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? यह प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि पूंजी कितनी गतिशील है। इसकी व्याख्या दो मान्यताओं के आधार पर की जा सकती है। एक हद की मान्यता यह हो सकती है कि पूंजी पूर्णतः गतिशील है तथा दूसरी मान्यता यह हो सकती है कि पूंजी पूर्णतः गतिहीन है।

Perfectly Immobile Capital पूंजी पूर्णतः गतिशील होने की अवस्था में किसी स्थिर ब्याज दर पर पूंजी का असीमित प्रवाह सम्भव है। अर्थात् इस स्थिर ब्याज दर के साथ आय (Y) के विभिन्न स्तरों पर BP सन्तुलन में हो सकता है। इस अवस्था में

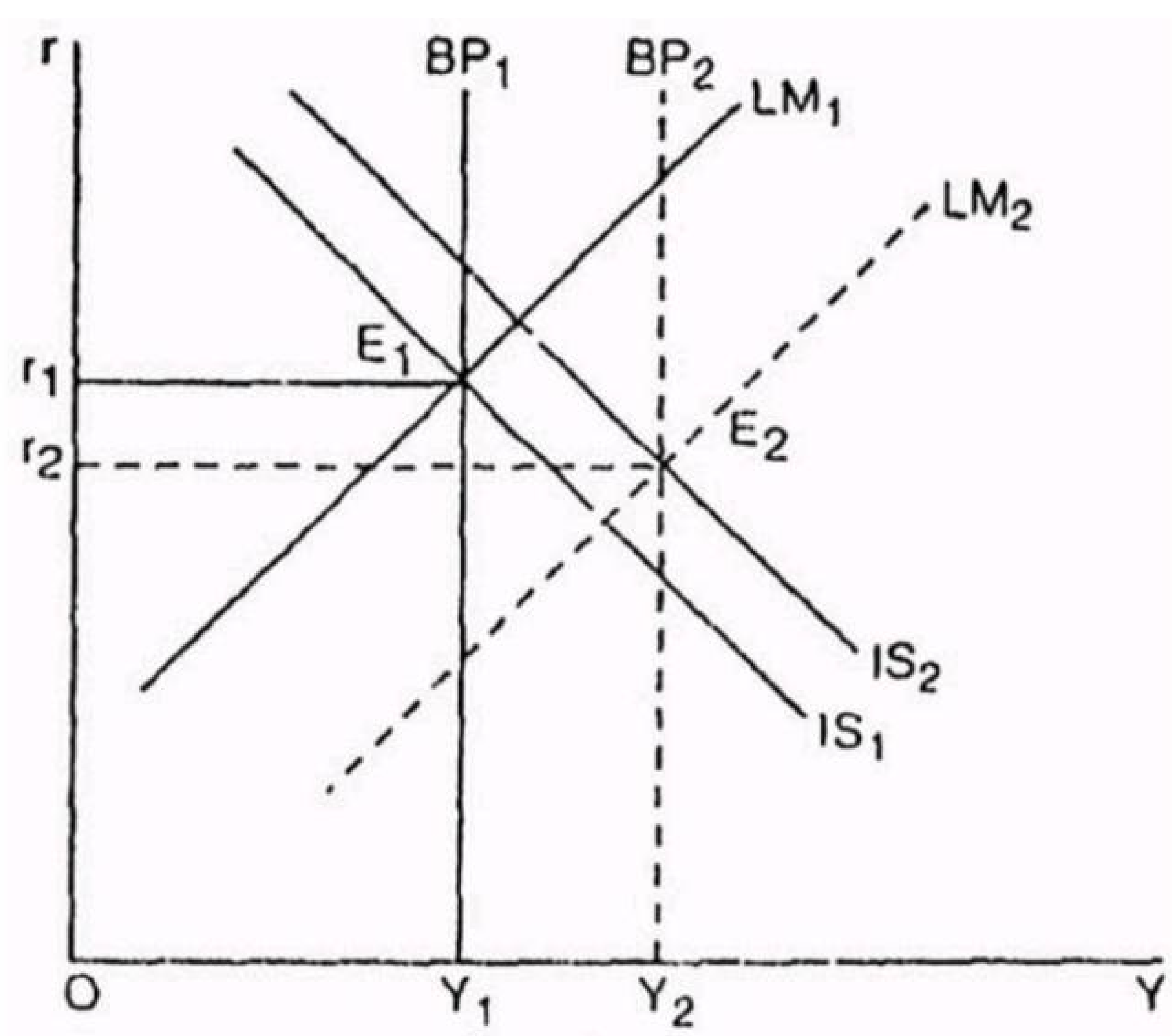

चित्र नं 55

BP वक्र क्षैतिजीय या शून्य ढाल वाला होगा। इसकी व्याख्या चित्र 55 में की गई है जहां प्रारम्भिक सन्तुलन E_1 बिन्दु पर है जहां प्रारम्भिक IS_1, LM_1 तथा BP_1 वक्र एक–दूसरे को काट रहे हैं। इस अवस्था में Y_1 आय का स्तर तथा r_1 ब्याज की दर का निर्धारण होता है।अब यदि मुद्रा की मात्रा में वृद्धि कर दी जाती है तथा पूंजी पूर्णत : गतिहीन होती है तो इसका आय तथा ब्याज दर पर क्या प्रभाव होगा। इससे LM_1 वक्र सरक कर LM_2 बन जायेगा जो IS_1 वक्र की काट कर अल्पकाल में विनिमय दर के न बदलने के कारण भुगतान शेष में घाटे के साथ सन्तुलन स्थापित करता है। ब्याज दर गिरने के कारण Y में वृद्धि आयातों को बढ़ाती है। जिससे BP घाटे में घाटा उत्पन्न

होता है। इस अवस्था में यदि परिवर्तनशील विनिमय दर है तो विनिमय दर गिर जायेगी तथा इससे निर्यातों में वृद्धि के कारण IS वक्र दाई ओर सरकेगा तथा विनिमय दर में गिरावट के कारण अब BP अधिक आय Y_2 पर सन्तुलित हो सकगे ा। इस प्रकार अन्ततः E_2 बिन्दु पर सन्तुलन हो सकेगा। जहां IS_2 तथा BP_2 वक्र LM_2 को काटते है। यहां r गिर जायेगा परन्तु इतना नहीं जितना अल्पकाल में स्थिर विनिमय दर की अवस्था में गिरता। उत्पादन परिवतर्शील विनिमय दर की अवस्था में अधिक बढ़ता है क्योंकि स्थिर विनिमय दर की अवस्था में निर्यात नहीं बढ़ते तथा IS वक्र दाई ओर नहीं सरकता।

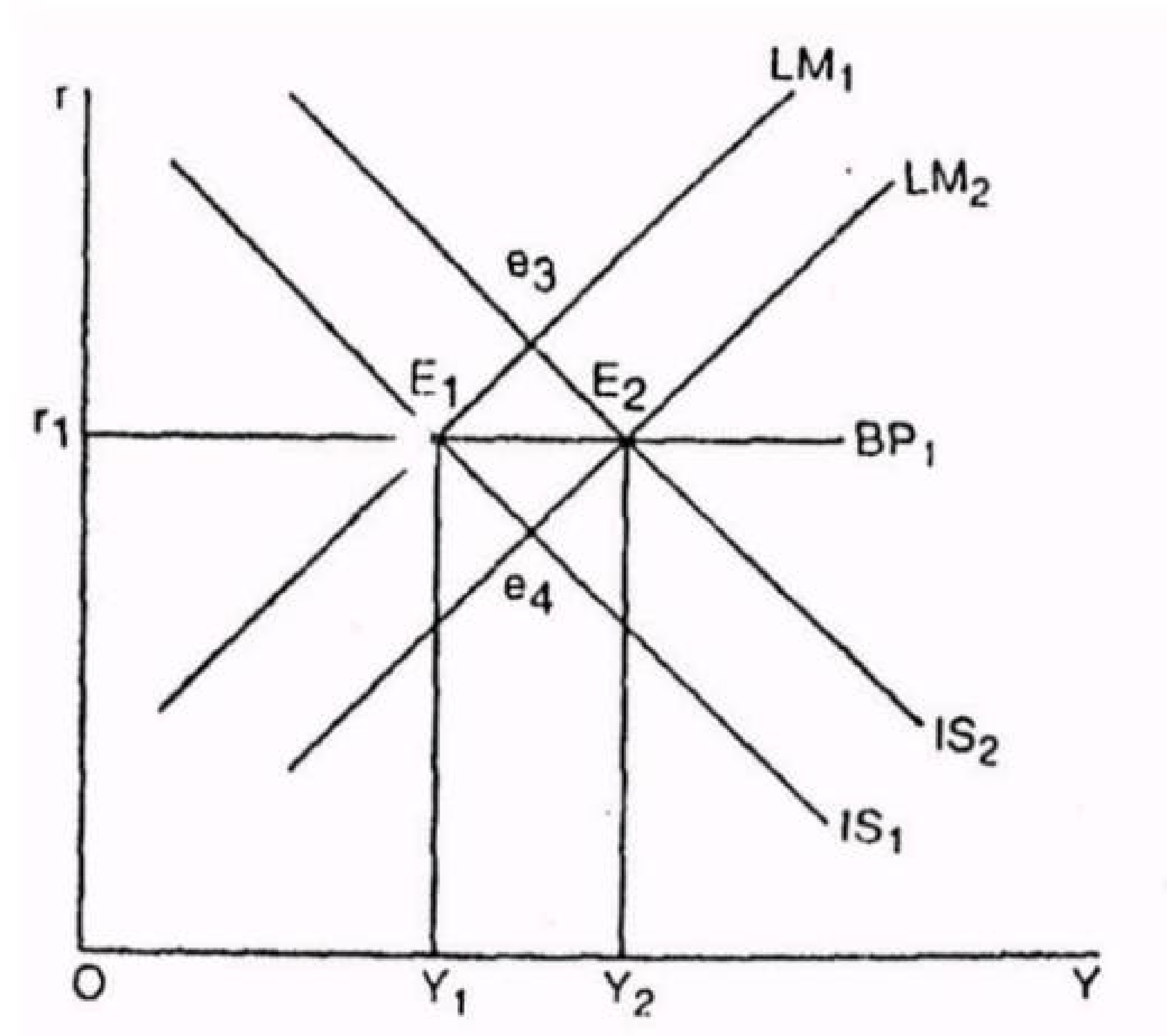

चित्र नं 56

Perfectly Mobile Capital जब पूंजी पूर्णतः गतिशील होती है तो मुद्रा की मात्रा में वृद्धि LM_1 वक्र की दाई ओर LM_2 पर सरका देगी जिससे ब्याज दर गिरता है तथा आय बढ़ती है। आय बढने से आयात बढ़ते है तथा जिससे भुगतान शेष में घाटा उत्पन्न होता है। इसके साथ ही ब्याज दर गिरने से पूंजी की निकासी होती है। भुगतान शेष में घाटा अधिक उत्पन्न हो जाता है। जिससे विनिमय दर गिर जाता है जो निर्यातों में वृद्धि के द्वारा IS वक्र को दाई ओर सरका देता है। जिससे आय में वृद्धि होती है तथा क्रय विक्रय की मुद्रा की मांग बढ़ जाती है तथा ब्याज दर बढ़ता है। इस विश्लेषण की व्याख्या चित्र में की गई है। IS वक्र दाई ओर इतना सरकता है कि ब्याज दर में वृद्धि E_2 पर अन्तिम सन्तुलन प्राप्त करने के लिए अपने पूर्वत् दर r_1 पर पहुंच जाती है। जिस पर पूंजी पूर्णतः गतिशील है। इसका अर्थ है कि विनिमय दर अधिक नीचे गिरेगा ताकि IS वक्र को निर्यातों में वृद्धि द्वारा काफी दाई ओर सरका सके। इससे निर्यातों में वृद्धि तथा आयातों में कमी अधिक होने से देश अपने चालू खाते में बचत उत्पन्न कर सकेगा तथा इसका समन्वय पूंजी निकासी से होगा।

सारांश :–

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि मौद्रिक तथा राजकोषीय नीतियां दोनों ही आंतरिक तथा बाहरी संतुलनों वास्तविक खर्च में वृद्धि के द्बारा प्रभाव डाल सकती है। परंतु महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि दोनों प्रकार की नीतियों में किसको आंतरिक तथा बाहरी असंतुलन में समायोजित करने के लिए आवंटित किया जा सकता है।

(व्यापारिक चक्र)

- अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न : –
    1. केन्ज का व्यापार चक्र सिद्धांत .... पर निर्भर करता है।
    2. प्रो० हिक्स स्वास्थ्य निवेश में .... को सम्मिलित करता है।
    3. हिक्स ने .... के मूल्य को स्थिर माना है।

4. शुद्ध निवेश में वृद्धि .... को ऊपर बढ़ाने का कारण बनता है।
5. हिक्स का सिद्धांत अत्यधिक .... है।
6. .... मे विश्व में महामंदी की स्थिति पाई गई।
7. .... के माध्यम से व्यापार चक्र को नियंत्रित किया जा सकता है।

- अपनी प्रगति जानिए के उत्तर : –

1. गुणक
2. सार्वजनिक निवेश
3. गुणक तथा त्वरक
4. राष्ट्रीय आय
5. गणितीय तथा यांत्रिक
6. 1929–30
7. मौद्रिक नीति

(अभ्यास हेतु प्रश्न)

- लघु उत्तरीय प्रश्न : –

1. व्यापार चक्र क्या होते हैं ?
2. व्यापार चक्र की चार सामान्य अवस्थाएं कौन सी है ?
3. मंदी की स्थिति क्या होती है ?
4. समुत्थान क्या होता है ?
5. कम टिकाऊ पदार्थ क्या होता है ?
6. प्रो० हिक्स की पुस्तक का क्या नाम है ?

- दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : –

1. खुली अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण कैसे होता है विस्तार से समझाएं।
2. कॉल्डोर के आर्थिक विकास सिद्धांत को रेखा चित्र के माध्यम से समझाएं।
3. सैम्यूलसन के व्यापार चक्र मॉडल का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
4. हिक्स के व्यापारिक चक्र मॉडल का मान्यताओं सहित विस्तारित कीजिए।
5. उतार चढ़ाव, ऊपरी तथा निचला मोड बिंदु को रेखा चित्र के माध्यम से समझाए।
6. व्यापार चक्र की सीमाएं क्या है। व्यापार चक्र को नियंत्रित करने के उपाय बताओ।

(एक छोटी खुली अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण)

- **अपनी प्रगति जानिए के प्रश्न**

1. एक बंद अर्थव्यवस्था में सरकार अपने .... में परिवर्तन करके राष्ट्रीय आय के स्तर को प्रभावित कर सकती है।
2. जर्मनी काफी .... .अर्थव्यवस्था है परन्तु .... के गुणक वाला देश है।
3. परिवर्तनशील विनिमय दर के अंतर्गत .... अधिक शक्तिशाली होता है।

- **अपनी प्रगति जानिए के उत्तर**

    1. व्यय तथा करो।
    2. खुली, कम मूल्य।
    3. गुणक।

अभ्यास हेतु प्रश्न

- **लघुउत्तरीय प्रश्न :–**

    1. एक खुली अर्थव्यवस्था में आय के दो इन्जैक्शन कौन से है ?
    2. व्यापार शेष से आप क्या समझते है ?
    3. सकारात्मक व्यापार शेष क्या है ?
    4. खुली अर्थव्यवस्था किसे कहते है ?
    5. व्यापार शेष घाटा क्या है ?
    6. खुली छोटी अर्थव्यवस्था की आय में परिवर्तन के लिए दो महत्वपूर्ण तत्व कौन से है ?

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्नः–

1. खुली अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण कैसे होता है, रेखाचित्र सहित समझाइए ?
2. विनिमय दर क्या है ? परिवर्तनशील विनिमय के अंतर्गत हस्तांतरण कैसे होता है ? इसमें परिवर्तनशील विनिमय दर सहित संतुलन कैसे होता है?
3. मुंडेल–फ्लेमिंग मॉडल क्या है ? इसमें परिवर्तनशील विनिमय दर सहित संतुलन कैसे होता है , रेखाचित्र द्वारा समझाइए ?

Reference Readings

- BO Sodersten, International Economics.